सुगंधिका

(ई-पत्रिका)

2021-22

हिंदी विभाग

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक
डॉ. शिवानी जॉर्ज, डॉ. विभा नायक
छात्र-संपादक
सुश्री कशिश यादव

प्राचार्या की कलम से...

'श्यामा' की धरती बड़ी उर्वर है। शिक्षा, रचनाधर्मिता, खेल, समाजोन्मुख कार्यक्रम ... हर क्षेत्र में हमारी छात्राएँ अपनी पहचान बना रही हैं। कॉलेज के ये तीन वर्ष उनके जीवन को सकारात्मकता की ओर ले जाएं, उनके विचारों का दायरा विस्तृत हो, उनकी कलम अपनी बात कहने का सलीका अर्जित कर सके – यह सदा से हमारा प्रयास रहा है। ऐसा ही एक प्रयास है– 'सुगंधिका'- श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ई-पत्रिका।

'सुगंधिका' श्यामा की युवा और ऊर्जावान लेखनी को संप्रेषण का एक मंच प्रदान करती है। यहाँ छात्राएँ अपनी बात कहती हैं– वे वैचारिक गद्य लिख रही हैं, कविताएँ और कहानियाँ लिख रही हैं, समीक्षा का हुनर पहचान रही हैं। आज के तकनीक-संकुल दौर में वे छात्र-सम्पादक के रूप में एक ई-पत्रिका के सम्पादन का गुर सीख रही हैं, यह बहुत आश्वस्तिपरक है।

समय मनुष्य का चिर-परीक्षक रहा है। हम कभी उसकी मेहरबानियों का लुत्फ़ उठाते हैं तो कभी उसकी कसौटियों का सामना करते हैं। विगत दो-ढ़ाई वर्षों में हम समय की विषम कसौटियों पर कसे गये हैं .... कुछ गहरे ज़ख्म हमने खाए हैं, न जाने कितनी असह्य खरोंचें बर्दाश्त की हैं ...पर मनुष्य की जिजीविषा भी कितनी अद्भुत चीज़ है, उसके हौसले की परवाज़ से भला कौन सा आसमान अछूता रह सका है? हम संभले हैं, संभल रहे हैं।

'सुगंधिका' का प्रस्तुत अंक हम सबकी बेहद प्रिय डॉ. वसुंधरा राय की स्मृति को समर्पित है। एक उदारमना व्यक्तित्व, एक सजग-कर्तव्यनिष्ठ नागरिक, एक छात्र-वत्सल शिक्षिका.... दोस्तों की दोस्त वसुंधरा राय। वक्त का बेरहम आघात उन्हें हमसे दूर ले गया, पर वे दूर कहाँ हैं? 'श्यामा' के प्रत्येक सदस्य के पास उनके किस्से हैं।

इस अंक में शामिल रचनाओं में युवा मन के स्वप्नों और उनकी प्रश्नाकुलता की झलकियाँ हैं। वे जेंडर-विभेद पर बात कर रही हैं, पर्यावरण-विषयक चर्चा कर रही हैं। उनकी कलम ने एक फ़ौजी के जीवन का अंकन किया है, वर्तमान परिदृश्य के यथार्थ को पकड़ने की चेष्टा की है। यूं कहें कि 'सुगंधिका' में शामिल हर रचना की अपनी सुगंधि है...अपनी खुशबू है। छात्राओं की नई कलम कुछ भोली है, कुछ अल्हड़...कुछ अनगढ़ भी। पर यही सब तो उनकी नवलेखनी का सिंगार है।

'सुगंधिका' की पूरी टीम को स्नेह और शुभाशीष, रचनाकारों को साधुवाद।

प्रो. (डॉ.) साधना शर्मा
प्राचार्या
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

विभाग प्रभारी की कलम से.......

सुगंधिका का यह अंक बहुत विशेष है, कॉलेज के लिए भी और हिंदी विभाग के लिए तो खास तौर से। इस अंक में हमेशा की तरह छात्राओं के विचारों, उनकी अनुभूतियों और सपनों की अभिव्यक्ति तो है ही, साथ ही विभाग की बहुत प्रिय सदस्य और बेहद करीबी मित्र डॉ. वसुंधरा राय की स्मृतियाँ भी संकलित हैं। आज संपादकीय लिखते हुए तमाम यादें बार-बार कलम रोक ले रही हैं। उनको गए कितना वक़्त हो गया ! समय अपनी चाल चलता रहता है, हम कभी उसके साथ खुशी खुशी दौड़ते हैं तो कभी भारी कदमों से घिसटते हैं। जिंदगी से बेहिसाब प्यार करने वाली वसु हमें ऐसे छोड़ जाएगी, इसकी तो कल्पना भी न की थी। हम सब तुम्हें बहुत याद करते हैं वसुंधरा......

जीवन के रस्ते पर चलते हुए
ऐसे अचानक छुड़ा लोगी तुम हाथ
ऐसा तो सोचा न था...
जिंदगी की ऐसी उद्दाम लालसा
कि हर मुश्किल आसान हो जाए
काम में इतनी आस्था
कि हर कक्षा ध्यान हो जाए
कहीं नहीं गई हो तुम
तुम हो हमारे साथ
हमारे दिलों में
तुम तो हो वसुंधरा
जीवनदायिनी
हर्षिता, ऊर्जस्विता....।

प्रो.(डॉ)गीता शर्मा
विभाग प्रभारी

सम्पादकीय

जीवन एक ....रंग अनेक। कहीं हल्की गुलाबी आभा, कहीं सब्ज़, कहीं सुरमई तो कहीं स्याह। हर रंग को, जीवन की हर छटा को उसकी सम्पूर्णता में सर-माथे लेना मनुष्यता का धर्म है।....तो 'सुगंधिका' का यह अंक आधारित है जीवन पर। इसके महाकाश में कहीं नव-वयस्क बालिकाओं के स्वप्न हैं, कहीं समाज की झलकियाँ, और कहीं 'श्यामा' के रग-रेशे में पैबस्त एक बेहद ज़िंदादिल शख़्सियत की कुछ छवियाँ।
यह अंक हम सबकी बेहद प्रिय डॉ. वसुंधरा राय को समर्पित है। एक बेहतरीन शिक्षक, कितनों की परम सखी, कितनों की बड़ी बहन.... न जाने कितनी गाथाओं की स्रोतस्विनी, कितनी ही स्मृतियाँ जिसके बाने में मणियों सी जड़ी हुई हैं। धुन की पक्की, बड़ी मस्तमौला रहीं वे। एक भरा-पूरा जीवन-कोष, जिसके इर्द-गिर्द अनेक पात्र हैं, अपनी-अपनी कहानियों के साथ। एक दिन औचक नियति नटी ने आकाश के कैनवस पर काली मूठ फेर दी.... और हम स्तब्ध रह गये... कुछ रीते से...
अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच बहुत कम फासला है। इतना बारीक कि समझ की परतों से भी परे, जिनकी दहलीज पर आकर शब्द और अर्थ मौन हो जाते हैं। इनका अंतर स्मृति और विस्मृति के अंतर के समान ही है... 'कहियत भिन्न न भिन्न'....क्योंकि विस्मृति के अनंत से ही तो स्मृतियों के मोती उभरते हैं, उसी प्रकार अनस्तित्व के महाशून्य से ही अस्तित्व जन्म लेता है।
सारांश यह कि अनस्तित्व जैसा असल में कुछ है ही नहीं। कुछ है तो केवल कुंभ में जल और जल में कुंभ की नाटकीयता से बुनी हुई एक खूबसूरत कहानी, और इस कहानी का नाम है जीवन।.... आइए, रूबरू हों जीवन का भाष्य रचने वाली लेखनी से....और जीवंतता की एक बेमिसाल बानगी से, जिनको हम डॉ. वसुंधरा राय कहते हैं.......

डॉ. शिवानी जॉर्ज
डॉ.विभा नायक
(सम्पादक मंडल)

‘सुगंधिका’ और मेरा अनुभव.....

‘सुगंधिका’...नाम से ही स्पष्ट है सुगंध से युक्त। यह सुगंध किसी पुष्प या इत्र की नहीं, अपितु हमारे महाविद्यालय की उन सभी छात्राओं की रचनाओं की है जिनमें उनके विचारों, भावों एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति हुई है।

हिन्दी विभाग की ई-पत्रिका 'सुगंधिका' का यह नवीन संस्करण एक बार फिर नए विचारों, विमर्शों के साथ आपके सम्मुख है। मेरा सौभाग्य है कि इस वर्ष मुझे सुगंधिका में छात्र-संपादक के रूप में कार्य करने एवं कुछ नया सीखते हुए अपने ज्ञान एवं कौशल को निखारने का अवसर मिला। इसके लिए में डॉ. शिवानी जॉर्ज मैम एवं डॉ. विभा नायक मैम की आभारी हूँ। सुगंधिका के लिए काम करते हुए मेरी भाषा और सम्वेदना में बहुत कुछ नया जुड़ा।

एक बार पुन: मैं हिंदी विभाग का आभार व्यक्त करती हूँ।

कशिश यादव

(छात्र-संपादक)

अनुक्रमणिका

प्राचार्या का संदेश
विभाग प्रभारी की कलम से..
संपादकीय

डॉ. वसुंधरा राय स्मृति-खंड **पृष्ठ-संख्या**

- ऐ ज़िंदगी तुझे हम याद करते हैं 8
- एक मुक्त निर्झर सी हँसी - डॉ. आशा जोशी 9
- कहाँ गई वह हुस्नपरी- डॉ. आशा जोशी 10
- याद की चिड़िया- डॉ. शिवानी जॉर्ज 11
- My Friend Vasundhara: Ms. Renu Mehta 17
- हमारी वसुंधरा मैम- गायत्री 18
- यादों की रहगुज़र ...चंद तस्वीरें 20

कविताएँ...

- फिर से एक बार- मानसी रानी 24
- बेटियाँ - शिखा श्रीवास्तव 25
- लहर: यादों का समुद्र, दोस्त - कशिश यादव 26
- मैं भी अगर पंछी बन पाती -सेजल 28
- अपने कुछ पल -सिमरन बानो 29
- गोविंद विनायक कर्णादिकार- वृंदा कृष्णात्रे 30
- आ गया खत - रिया कश्यप 31
- आसान नहीं होता - आस्था 32
- हिंदी – श्वेता 33
- पढ़ो, सीखो – नाज़रीन जहाँ 34
- माँ- अनामिका पाण्डेय 35
- धन, माँ ,दहेज़ प्रथा- शिवानी मौर्या 36

- रक्षा कवच, सतरंगी खुशबू ,रात के अंधेरे में, सौंधी महक, कस्तूरी मृग, ऑनर किलर- डॉ.राधिका सिंह 39
- धरती बची रहेगी-डॉ. आशा जोशी 45

लेख/ समीक्षा

- लेखन-कला - पूजा 46
- इक्कीसवीं सदी का भारत - पूजा 48
- आधुनिक बेड़ियाँ - सिमरन बानो 49
- कोरोना काल में शिक्षा - शिवानी 50
- डार्क हॉर्स- श्रेष्या पाण्डेय 52
- कोरोना वायरस का पर्यावरण पर प्रभाव - शिवानी 54
- नई शिक्षा नीति -मुस्कान 56
- कबीरी तेवर के कवि गिरिधर कविराय की राजनीतिक चेतना- डॉ. गीता शर्मा 57
- सोरेन कीर्केगार्द- डॉ.मीनू गेरा 69
- बदला- डॉ. राधिका सिंह 74

कहानी

- एक सफ़र ऐसा भी - भारती अग्रवाल 75
- गुफ़्तगू - डॉ. विभा नायक 76
- **विभागीय गतिविधियों की एक झलक** 78
  हिंदी विभाग : वार्षिकी 2021-2022 82
- **सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति : शिक्षण–अधिगम के कुछ पल** 89
- **सर्वश्रेष्ठ छात्रा पुरस्कार** 92

कलाकार की कूची से... 93

ऐ ज़िंदगी तुझे हम याद करते हैं......

'सुगंधिका' का यह अंक डॉ. वसुन्धरा राय को समर्पित है | नियति का बेरहम प्रहार उन्हें हमसे दूर ले गया, पर अपने भी भला कभी दूर होते हैं ? वे तो हमारे वजूद का हिस्सा हो जाते हैं | डॉ. वसुंधरा राय की कितनी ही छवियाँ 'श्यामा' के कलेवर में रची-बसी हैं | अपने सेवा-काल के प्रायः तीन दशकों में उन्होंने महाविद्यालय की समृद्धि में नए पृष्ठ जोड़े | लाल ईटों से बनी 'श्यामा' की इस इमारत के गोशे-गोशे में उनकी यादों का बसेरा है....एक बेहद जिंदादिल शख्सियत की बोलती-बतियाती यादें ... आइए, रू-ब-रू हों उनसे |

एक मुक्त निर्झर सी हँसी : वसुंधरा राय

शुरुआत कहाँ से करूँ कुछ बातें हैं, कुछ यादें हैं, कुछ किस्से हैं कुछ मुलाक़ातें हैं । क्या-क्या साझा करूँ? इनमें कुछ मेरा, कुछ उसका है जो बिना बताए विदा लेकर चली गई और हम सभी को हतप्रभ छोड़ गई। यह सब कुछ जो कविताओं में कहा गया है, वह सभी की अज़ीज़ वसुन्धरा के लिए है। वह जाकर भी मुझसे कलम उठवाती रही । बिस्तर पर लेटी भी वह अपने लिए एक कविता की माँग करती रही। जब नहीं लिखी, Whatsapp पर तुरंत शब्दों की गोली दागते हुए संदेश आता – दो दिन से कविता नहीं भेजी। —भेजने पर संदेश आता – यह हुई न बात। कल की कविता आज ही लिख लो। वाह! इसी बहाने अच्छी कविताएँ पढ़ने का मौका मिल रहा है। रोज़ एक कविता मिलेगी न?....कैसा अनोखा अधिकार था उसका, प्यार की चाशनी में पगा। इसीलिए मुझे लगता है कि ऐसे अद्भुत मित्र कहीं जाते नहीं, हमारे साथ ही चलते हैं, हमारी पदचाप के साथ। बस आज के दिन उसकी स्मृति को समर्पित अंतिम कविता-

आज आई याद
मुक्त निर्झर हँसी
प्यारी सी
ज़िद
और यायावरी मन
किसी
अपने का।
यादें कितना कुछ देती हैं....

डॉ.आशा जोशी

कहाँ गई वह हुस्नपरी?

मैंने नीली छतरी वाले से पूछा, कहाँ गई वह हुस्नपरी?
कई दिन लगातार पूछने पर
आज
उत्तर मिला
कहीं नहीं गई
तुम्हारे पास ही है वह
बस..
उसकी निश्छल हँसी, आँखों की नटखट शरारत
और
रिश्ते बनाए रखने का हुनर
बचाए रखना अपने पास
वह कहीं नहीं जाएगी।

डॉ.आशा जोशी

याद की चिड़िया......
(वसु दी को याद करते हुए)

बाम पर बैठी है देखो, याद की चिड़िया,
फुर्र से उड़कर गई, वो याद की चिड़िया
उसे नेह से बुलाते हैं,
कभी फरियाद करते हैं
तेरे मुन्तज़िर हैं,
तुझे हम याद करते हैं,
वक्त के वीराने में एक शहर आबाद करते हैं
तेरे मुंतज़िर हैं,
तुझे हम याद करते हैं.......

वो वहाँ दूर क्षितिज के पास वाले उस ऊँचे से दरख़्त पर एक घोंसला है, जिसमें रहती है याद की चिड़िया। पल भर में दूर देस का सफ़र कर आने वाली याद की चिड़िया। अपनी नन्ही सी चोंच में कुछ नए-पुराने लम्हों का दाना-दुनका दबाए याद की चिड़िया। कभी वह चिड़िया मन की मुंडेर पर आ बैठती है तो कभी जरा आहट पाते ही फुर्र हो जाती है। याद की इस छुटकी सी चिड़िया की परवाज़ सात आसमानों के भी आगे तलक है। इसकी चहक से सूने आँगन-चौबारे

गुलज़ार हो जाते हैं। इसका संसार अनूठा है...जहाँ इन्तज़ार का बसेरा है, कुछ सुखों और कुछेक दुखों का ठिकाना है। यहाँ वे सब किरदार भी बसते हैं जिनका साथ जिन्दगी के किसी मोड़ पर छूट गया, जिन्होंने नियति के निराले खेल के वशीभूत हो जीवन के किसी चौरस्ते पर दूजी डगर पकड़ ली। पर याद की चिड़कली हमारा दामन थामे रहती है। मेरी सहेली है याद की यह नन्ही और चंचल सी चिड़िया....

कितना अजीब सच है कि कभी-कभी किसी की अनुपस्थिति शेष संसार की उपस्थिति पर भारी पड़ती है। हम लाख कोशिश करें, नज़र उस खाली जगह पर ही चली जाती हैं, जहाँ कल तक कोई था। यह भी तो नहीं कह सकते कि आज वहाँ कोई भी नहीं। है, और बहुत मज़बूती से अपनी ज़मीन पर कायम है। कोई ऐसा, जिसके बिछोड़े का आघात निजी स्तर पर भी सहना पड़े और किसी समाज का सदस्य होने के नाते सामूहिक तौर भी, तो इस दोहरी मार का क्या किया जाए ? कोई ऐसा, जिसके किस्से हर किसी की गठरी में हों, जिसकी यादों का बसेरा अनेक दिलों में हो.... उसका सहसा यूँ मुँह फेर लेना !! ऐसे निर्मोहियों का प्रेम और भी याद आता है। उनके लिए आँखें नम करना जी को सुकून देता है....इधर आँख रोती है, उधर मन याद की चिड़िया का हमसफर बन माज़ी के उन गली-कूचों में आवाजाही करता है, जहाँ जाने कौन-कौन से बंजारे डेरा डाले बैठे हैं।.....और यह देखिए, चिलमन उठाकर एक खिलखिलाती तस्वीर नुमायाँ हो जाती है - उसी निर्मोही की, हाँ – उसी की, जिसके लिए आँख नम थी.... और वह पूरी बरजोरी से हमारे होठों पर मुस्कान का धनक खिला जाती है। टपकती आँखें लिए मुस्कुराते हुए हम ठगे से रह जाते हैं। या ख़ुदा ! ऐसा भी कोई दबंग होता है भला?......और फिर वही तस्वीर आँखों में शरारत का समंदर भरे ठठाकर हँस पड़ती है।

ये मेरी वसु दी की तस्वीर है। बड़ी जोरावर हैं वे। रोने भी नहीं देतीं। वसु दी, जिन्हें 'श्यामा में सब डॉ. वसुंधरा राय कहते हैं। एक अद्भुत जिंदादिल शख्सियत, एक जिज्ञासु घुमक्कड़, एक बेहतरीन शिक्षक, एक निर्भीक व्यक्तित्व, एक सच्ची दोस्त और मेरी बड़ी बहन...किन्ही अर्थों में माँ-जायी से बहुत अधिक अपनी। हम सब उन्हें अपनी-अपनी तरह से याद करते हैं।

वसु दी अपने तरह की इकलौती हैं। जब वे कुछ ठान लेतीं तो बस कर ही गुज़रतीं। किसी को अपना मान लेतीं तो बस मान ही लेतीं। मैं पहली मर्तबा उनसे सन 2005 की जनवरी में मिली, जब 'श्यामा' से जुड़ी। शुरू से ही उनके स्नेह की छाया मुझे मिली। नौकरी के उन शुरुआती दिनों की एक बात बताऊँ ? तब छठा पे कमीशन नहीं आया था, बड़े मॉल अभी बन ही रहे थे और मेट्रो कॉलेज तक नहीं आती थी। मैं नोएडा से GL-32 नंबर की बस में कॉलेज आया करती थी। कर्मपुरा तक आकर रिक्शा ले लेती। एक बार मैंने अपना पर्स बदला, उसमे वॉलेट रखना भूल गई। आते समय तो उन चंद सिक्कों ने लाज रख ली जो पर्स के तले में पड़े थे। मैं नई-नई थी कॉलेज में, उस दिन मैंने चाय भी नहीं पी। जब घर जाने का समय आया तो बड़े संकोच के साथ मैंने डॉ. वसुंधरा राय से धीरे से पूछा कि क्या वे मुझे कुछ रुपए दे सकती हैं ? वे वहीं, सोफे पर बैठी थीं स्टाफरूम में। पीछे मुड़ीं और बड़ी ममता भरी मुस्कान के साथ बोलीं-

‘तू तो बिलकुल वैसे ही पैसे माँग रही है जैसे अनी मुझसे माँगती है। ‘अनी’.... अन्विति- उनकी बेटी। उस दिन से वे मेरी ‘वसु दी’ बन गई।

वसु दी बहुत मस्तमौला खिलंदड़, उन्मुक्त और बेबाक हैं। कॉफ़ी-ब्रेक में हिंदी वालों के कोने से उठती हँसी की आवाज़ें आपने अक्सर सुनी होंगी। उनमें एक बुलंद आवाज़ वसु दी की होती। वे उस सोफे पर बैठतीं, जहाँ अमूमन हमारा विभाग एकजुट हुआ रहता है। यूँ तो हम सभी चटपटे से हैं, वसु दी यहाँ भी बाज़ी मार ले जातीं। हमारा लाफिंग-क्लब खुला नहीं कि वसु दी का जादू अपने उरूज़ पर होता।

अभी उस दिन की बात को ही ले लीजिए। विभाग का कोई कार्यक्रम था। खाना खाकर अतिथि को विदा करने के बाद हम सब ऊपर आ गए स्टाफरूम में | हमारे सुपर-सीनियर्स भी साथ थे। चाय आई, बातें चल निकलीं। हमेशा की तरह मिसेज़ सिंह से हमने गाने सुने, बड़े सौजन्य से उन्होंने हमारी फरमाइशों का मान रखा। दुर्गा मैम ने नए साथियों से भी कुछ सुनाने को कहा। सपना ने गाया, प्रेमशंकर जी ने निराला की 'बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु' का सस्वर पाठ किया। जब वसु दी की बारी आई तो उन्होंने गाया-‘गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा, तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा’..... निहायत फ़कीराना अंदाज़ में कान पर एक हाथ धरकर वे तन्मय हो गा रही थीं और हम हँस-हँस कर दोहरे हुए जा रहे थे। उनका अंदाज इतना कन्टेजियस था कि जल्द ही हम सब भी उनके साथ सुर मिलाने लगे। वह कोना रेलगाड़ी के सफ़र की याद दिला रहा था। मुस्कुराते हुए हम सबके चेहरे चमक रहे थे। हाय, उस कर्णावलम्बित मुस्कान के सदके। हम कनसुरा राग आलाप ही रहे थे कि औचक वे विभा से बोलीं- 'तेरे पास एक रुपया है क्या? विभा समझ ही न पाई कि क्या वे सचमुच सिक्का माँग रही हैं ? हिचकिचाते हुए उसने सिक्का उनके हवाले कर दिया और उन्होंने गाते-गाते उसे हमारी झोली में डाल दिया। फिर क्या था...ठहाके गूँज उट्ठे। उस शाम को वहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ थीं, वरिष्ठ-जन और नौउम्रों का संगम। सब अलग-अलग आयु और स्वभाव के, पर उस पल में सब एक थे। हिंदी विभाग का जादू कुछ ऐसा ही है। वसु दी की प्यारी शरारतें हर महफिल की रौनक को दोबाला कर देतीं।

कॉफ़ी-ब्रेक में हम अक्सर समोसा खाते। वसु दी उसका ज़रा सा कोना खातीं। कभी मुझसे कहतीं- ‘ए शब्बो कुमारी, जरा सा कोना दे इधर’.. कभी तरंग में होतीं तो चाट मँगाकर खातीं। अक्सर वे घर से ही खाना लाया करतीं। सप्ताह के दो-एक दिनों, जब उनका टाइम टेबल देर तक फैला होता, लंच का सरंजाम यहीं होता। तब गीता दी, मीनू दी और वसु दी सब एक साथ यहाँ खाते। वसु दी बड़े सलीके से खाना लातीं। बाकायदा सलाद से फल तक। हम तो यूँ ही कभी उपमा तो कभी पोहा ले आते थे। कितनी ही बार हमने उनके घर खाना खाया है। वे बहुत स्नेह से खिलातीं। लेकिन उनको किसी व्यंजन की रेसिपी बताना बवाल-ए-जान से कम न होता। आपको यकीन न आता हो तो लीजिए पेश है दास्तान-ए-रेसिपी।

अथ रेसिपी कथा १: बढ़िया छोले बनाने की विधि

एक बार साधना दी ने वसु दी को बढ़िया छोले बनाने की विधि बताई, शुरू से आखिर तक, स्टेप बाई स्टेप। अगले रोज वसु दी ने सूचित किया कि वह तो पका ही नहीं। साधना दी हैरान, यह क्या माजरा है ? मालूम हुआ कि चूंकि वसु दी को गैस ऑन करने की बजाय 'कुकर को गैस पर चढ़ा देना' कहा गया था, सो उन्होंने सभी निर्देशों का तो शब्दशः पालन किया, लेकिन गैस ऑन नहीं की। बस, कुकर को गैस पर चढ़ा दिया और लम्बा इंतजार किया। साधना दी ने माथा पीट लिया। हासिल-ए-दास्तान यह कि सब गलती तो साधना दी की ही पाई गई। बताना चाहिए था न कि गैस भी ऑन करनी है ?

अथ रेसिपी कथा २: सेब की खीर पकाने की विधि

गीता दी ने वसु दी को सेब की खीर बनाने की रेसिपी बताई, गीता दी की शामत आई। वसु दी ने कच्चे और कुछ खट्टे सेब कद्दूकस करके बिना उन्हें घी में भूने दूध में पकाया। नतीजतन दूध फट गया। बकौल वसु दी सब गलती गीता दी की ही थी। उन्होंने यह थोड़े ही बताया था कि खट्टे-कच्चे सेब की जगह मीठे-पके सेब इस्तेमाल करने थे और उन्हें शुरू में ही दूध में नहीं डाल देना था।

अथ रेसिपी कथा :३ मटर की कचौड़ी बनाने की विधि

मिसेस जोशी के हाथ की मटर की कचौड़ियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं। चौंक क्यों रहे हैं ? हमारा विभाग अपनी तरह का एक आकाशगंगा है, जिसमें अनेक विश्व तो क्या, कई एक ब्रह्माण्ड शामिल हैं। बहरहाल, लौटते हैं... मटर की कचौड़ी पर। तो एक बार मिसेस जोशी के ग्रह-नक्षत्र वाम रहे होंगे कि उन्होंने वसु दी को उन विश्व प्रसिद्ध मटर की कचौड़ियों की रेसिपी बता दी। बस फिर क्या था, वसु दी ने मटर छीले, उनमें बढ़िया मसाले आदि मिला कर खूब मोयन वाली छोटी-छोटी लोइयों में भर कर उन्हें तलना आरम्भ किया। पर हाय राम ! ये तो फट गई। भर कड़ाही तेल में मटर तैरने लगे। वसु दी ने पल भी गंवाना ठीक न समझा। फौरन से पेशतर उन्होंने फोन घुमाया मिसेस जोशी को, और जवाब तलब करने लगीं। बात भी ठीक है, कोई ऐसी फट जाने वाली कचौड़ियों की रेसिपी किसी को बताता है भला ? मिसेस जोशी लाख समझना चाहें कि चूक कहाँ पर हुई, पता ही न चले। वे बेदम। बड़ी दरयाफ्त के बाद सिरा हाथ लगा। वसु दी ने कच्चे मटर में मसाला मिलाकर उन्हें लोइयों में भर दिया था। उच्चस्तरीय जाँच के बाद इस केस में भी यह निर्विवाद सिद्ध हो गया कि सब गलती मिसेस जोशी की ही थी !

हमारी वसु दी बड़ी मासूम। एक बार उन्होंने करवा चौथ का व्रत रखने की ठानी। मीनू दी से व्रत की विधि और अन्य आवश्यक बारीकियों की जानकारी ली उन्होंने | हालांकि इस कहानी में कोई रेसिपी शामिल नहीं है, पर यह न भूल जाइएगा कि हमारी वसु दी तो हैं !! तो मीनू दी ने स्टेप बाई स्टेप सब कुछ बताया कि ऐसे व्रत रखना और ऐसे शाम को पूजा की थाली

सजाना। जिस लोटे में अर्घ्य का जल रखा हो उसमे 'मौली' बांध देना | कहना मुश्किल है कि उच्चारण का कुछ पंजाबी प्रभाव रहा या अन्य कोई ग़ैबी चाल - हमारी वसु दी ने सुना अर्घ्य के लोटे में 'मूली' बांध देना। सो उन्होंने लोटे की गर्दन पर मूली बांधने की खासी कोशिश के बाद मीनू दी को फोन मिलाया और पूछा कि भई, 'मूली' कैसे बांधे ? यह सुनते ही मीनू दी तत्काल प्रभाव से तर गई।

यह हंसी-ठट्ठा और मजाकिया बातें तो वसु दी का महज एक पहलू है। उनके अठपहलू व्यक्तित्व को हम जिस कोण से देखते, एक नई सी वसुंधरा राय से भेंट हो जाती। वे बड़ी संवेदनशील और छात्र-वत्सल शिक्षिका रहीं। उन्हें पता चल जाता कि कौन सा विद्यार्थी किस संकट में है। जाने किस-किस को वे किताबें खरीद कर देतीं, कितनों की फीस अदा करतीं। किसी छात्र को कोई मुकाम हासिल होता तो वे बड़ी प्रसन्न होतीं। हाँ, वे कड़क टास्क मास्टर भी थीं।

वसु दी, मानो निर्भीकता का दूजा नाम। घर हो या बाहर, अनेक दफे मैंने उनको अपनी बात मजबूती से रखते देखा है। आपने भी इसे महसूस किया होगा। स्टाफ काउंसिल की सभा हो या अन्य कोई गोष्ठी, वसु दी बड़े तार्किक ढंग से अपनी बात कहने का हुनर जानती थीं। सच कहते हुए वे इस बात से निरी अप्रभावित रहतीं कि किस-किस का और कितना विरोध सहना पड़ेगा। केवल विरोध करने के लिए विरोध नहीं, ये तथ्य पर आधारित बात करतीं। ऐसा बेलौस साहस बिरलों के पास ही होता है।

वसु दी को चाहने वाले जानते हैं कि वे कितनी बड़ी घुमक्कड ठहरीं। हर छुट्टी में धरती नापने को निकल पड़ना उनका प्रिय शगल रहा। सच कहें तो शगल से भी बहुत अधिक यह उनके जिज्ञासु मन की बाध्यता थी, जो उन्हें चिर सैलानी बनाए रखती। वे कहाँ-कहाँ तो नहीं जाती रहीं ! कभी केरल, कभी नार्थ-ईस्ट, कभी लेह लदाख। वे कभी पहाड़ों का रुख करतीं तो कभी सिंगापुर को निकल पड़तीं। यात्राओं के मामले में वे विकट योजना- विशारद रहीं। कैसे जाना है, कहाँ रहना है, क्या-क्या देखना है, क्या खरीदना है ... सबकी बासिलसिला विस्तृत सूची उनके दिमाग में होती। जब वे लौट कर आतीं तो हमें खूब सारी तस्वीरें दिखातीं। उनको सब पता था - पहाड़ों पर 'बुरांस' कब खिलता है या दक्षिण की यात्रा किस मौसम में सबसे अनुकूल रहती है।

गीता दी, साधना दी, वसु दी और मीनू दी का सम्बन्ध पूरे 'श्यामा' के लिए एक मिसाल है। तीस-पैंतीस वर्षों या उससे भी कुछ अधिक समय से एक-दूसरे को जानना लगभग साथ बड़े होने जैसा होता होगा...शायद उससे भी कुछ प्रगाढ़। पारिवारिक सम्बन्ध तो ईश्वर प्रदत्त होते हैं, वे हर हाल में हमें कुबूल होते हैं। लेकिन रक्त-संबंध की परिधि के बाहर पड़ने वाले इन चारों सखियों के रिश्ते का रंग और भी गाढ़ा है..... बहुत सुन्दर सी रंगत ...... नायाब कत्थई। मैं तो केवल विगत सत्रह वर्षों की ही गवाह हूँ, थोड़ा सा ही जान पाई हूँ, लेकिन इनकी यकदिली का अनुमान इस बात से लगाइए कि सबके बच्चे एक-दूसरे की माओं को 'मौसी' कहते हैं। कैसा अद्भुत सामीप्य है जिसकी रसधारा पीढ़ियों के कूल-कगार तोड़ कर प्रवाहित

हो रही है। मीनू दी को कई बार कहते सुना है कि 'अनी' के बहाने बेटी की माँ होने का उनका चाव भी पूरा हो गया। सख्त-सुस्त समय की कसौटियों पर ये चारों सखियाँ बारहा साझा ही खरी उतरी हैं, हमने देखा है।

कुछ अपनी बात करूं। पिछले कुछ सालों में वसु दी से मेरी नज़दीकी और भी बढ़ गयी थी, इस मायने में कि वे मुझे हमेशा कुछ नया पढ़ने, कुछ नया लिखने को कहतीं। सच कहूं तो उनका बार-बार कहना कमाल कर गया। उनसे डिस्कस करने के लिए मैं नई-नई चीजें पढ़ती, उन पर अपनी राय उनको बताती। वे देर तलक मुझसे बातें किया करतीं। हम अक्सर आदिवासी साहित्य पर चर्चा करते, भारतीय भाषाओं के महासमुद्र की लहरें गिनते। हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं पर भी खूब बातें होतीं। मैं कह सकती हूँ कि वे मुझसे स्नेह करती थीं। कभी अगर मैं परेशान होती तो बिना समय देखे उनको फोन घुमाती और वे कहती 'मैं अभी ओला बुक करती हूँ, तू मेरे पास आ जा।' उनका इतना कहना ही बहुत होता। कभी-कभी वे मेरे साथ ही कॉलेज से मयूर विहार तक आतीं, अपनी मम्मी से मिलने। हम अक्सर आउटर रिंग रोड से आते, खूब गप्पें लड़ाते हुए।

कुछ स्मृतियाँ जीवन भर की पूँजी होती हैं। अभी कुछ ही बरस पहले हमारी माँ हमें छोड़ गई। मैं कॉलेज ही में थी, माँ रोहिणी में। वसु दी ने मुझे उस रोज़ गाड़ी नहीं चलाने दी। अपने साथ मुझे रोहिणी ले गई। मैं रस्ते भर बच्चों की तरह बिलखती रही। पहुँच कर उन्होंने मुझसे पूछा- 'बेटा, तेरे पास कितने पैसे हैं ?' मैंने कहा -पता नहीं, यही कोई तीन-चार हज़ार होंगे। उन्होंने बड़े अधिकार और इसरार से मेरे हाथ में नोटों की एक गड्डी थमाई और कहा- 'यहाँ सब बहनों में तू बड़ी है। जरूरत होगी, रख ले।'.... ये मेरी वसु दी हैं। यह पंक्ति लिखते हुए, वसु दी, मेरी आँखे बरस रही हैं। उधर, कहीं से आप कह रही हैं - ए शब्बो कुमारी, क्या कच्ची बच्ची की तरह रोती है ? और मेरे होठों पर बरबस उजाला खिल उठता है। मैं मुस्कुरा रही हूँ वसु दी !

याद का परिंदा बार-बार उड़कर आता है और मेरे कांधे पर बैठ जाता है। दोस्ती है मेरी उसकी। हर खेप में वह नए खजाने मुझे सौंपता है, हर बार याद-महल की खिड़कियों पर पड़े परदों के पार झाँकने के नए संकेत बताता है। कभी मैं हँसती हूँ, कभी ज़ार- ज़ार फफकती हूँ.... और मेरा दोस्त, वह याद परिंदा मेरा मुंह तकता है। मेरे दोस्त, सखा...फिर-फिर आना। अबके जब कभी अपनी नन्ही चोंच में स्मृति का तिनका दबा कर आओगे, मैं तुम्हारी बलाएँ लूंगी। अबके जब दूर देस से संदेसा लाओगे, तुम्हारे डैने सहलाऊँगी। आते रहना याद परिंदे, मेरे मन की चौखट पर तुम्हारी बाट जोहता एक दीपक सदा रौशन मिलेगा। उसकी तमाम किरणें ले जाना और मेरे अपनों को बताना - यहाँ सब ठीक है, बस... तुम्हारी बड़ी याद आती है.....

डॉ.शिवानी जॉर्ज
हिंदी विभाग

My Friend Vasundhara

She was a presence no one could miss. There was music and laughter in her voice always. Except when she was standing up strongly for something she believed in. And then there was firmness and indignation. She stood up and spoke out for what she believed in and never chose to be quiet or let it go… Like her or not, no one could ignore her. I was among the ones who more than liked her. I don't know how it happened. It was so gradual. How did we become friends?

I would have to trace it back to our endless drives together. She drove a car, I didn't, and we didn't live too far apart. So, every time she'd be leaving college, she would make it a point to check with me if I could come along. We came to look forward to those rides. There was nothing we wouldn't talk about. Our students, lectures, teaching strategies, hopes and frustrations, our personal issues… Everything was covered. When I needed a friend to talk to, she was there, even at midnight. When I needed to run away from it all, she offered me her home and cooked me a meal, no questions asked, till I was ready to talk.

She was always making plans. Plans to see the whole wide world. She wanted to travel and she never missed an opportunity to do so. When the lockdown was imposed, she was most disappointed about having had to cancel her upcoming trip to Japan. And I would joke about having beaten her to it since I just about managed to get back from a trip to Japan a month before the lockdown happened.

Not going to college regularly was hard but we made up for it through our weekly catch up calls. Never a one to have overlong phone chats, I would surprise myself by talking to her for more than an hour and not even realizing it. And when she told me about being down with Covid, she made light of it as she always did about health-related issues.

I miss you so much dear friend. But I know how you would roll your eyes and tell me not to be this way. So, I try and imagine you in a beautiful place… the kind you would have loved to travel to. I imagine your beautiful eyes shining with excitement as you tell me… "this is better than any place I ever visited".

In my memory you will live forever, dear Vasundhara. You really made the world a better place and I was blessed to have known you and been your friend.

Ms. Renu Mehta, Dept of English

हमारी वसुन्धरा मैम

हम सब कहते, सुनते और जानते हैं, पहली गुरु मां होती है। उसके बाद हमारे अध्यापक-अध्यापिकाएं । गुरु की महिमा का बखान जितना भी किया जाए, कम ही होगा। स्कूल और उसके बाद कॉलेज में गुरु बदलते रहते हैं, लेकिन उनका महत्व सदा बरकरार रहता है । मुझे आज तक जिन लोगों ने पढ़ाया-सिखाया, उन्हें मैं दूर से ही पहचान सकती हूँ। उनकी बातें हमेशा मन-मस्तिष्क में रहती हैं । बिछड़ने के बाद भी कहीं टकराने की आस रहती है। परंतु वसुंधरा मैम....जिनसे अब मुलाकात या हजारों की भीड़ में टकरा जाना संभव नहीं। पर उनकी बातें, उनके आदर्श हमेशा साथ हैं और रहेंगे। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी समय-समय पर उनका पथ-प्रदर्शन करना, स्थितियों से कभी न डरने की सीख देना बरबस याद आता है।

जलते दीपक की तरह,
करें आप संघर्ष सदा,
झुकना-डरना नहीं कभी,
रहना आशावान सदा

ये पंक्तियाँ उनकी दी सीख का सार हैं, जो मेरे मन की गहराई में पैठी हैं। यूँ तो अमर कोई भी नहीं, लेकिन समाज को कुछ देकर चंद लोग सदियों तक जीवित रहते हैं, वे अपने परिजनों और चाहने वालों की स्मृतियों में बसर करते हैं... जैसे वसुंधरा मैम हमारी यादों में बसी हैं।
मुझे याद है, जिस दिन मैम हमें डांटती थीं, उससे अगली क्लास में बड़े प्यार से कहतीं, 'मैंने ज्यादा डांट दिया न लास्ट क्लास में बेटा ? आपको डांटने के बाद मैं भी पूरा दिन परेशान रही हूं... कुछ समझ में न आए तो बार-बार पूछा करें। इन छोटी-छोटी गलतियों की उम्मीद मुझे

आप लोगों से नहीं थी।' बस उनकी इन बातों के बाद क्लास ढेर सारे सवाल पूछती। ज्यादा तो नहीं, दो ही बार क्लास में उन्होंने डांटा लेकिन दो हजार सीख भी दी।
उनके यूँ चले जाने की उम्मीद किसी ने भी नहीं की थी। कितने ही बच्चों ने अपनी पसंदीदा मैम और डॉ. मीनू गेरा जैसे अध्यापक-अध्यापिका ने अपन गहरा मित्र खोया। कोरोना ने बहुत कुछ छीना। वसुंधरा मैम की हमेशा कोशिश रहती कि हम कोरोना की वजह से डिप्रेशन में न चले जाएं। उन दिनों वे कहती 'खबरें सुनना थोड़ा कम कर दीजिए बच्चों, आज-कल खबरें सुनकर बच्चों की मानसिक स्थिति भी खराब होती जा रही है। एक्सरसाइज करिए, अच्छा खाना खाइए, मास्क और सैनीटाइज़र का प्रयोग करिए, ज्यादा जरूरी हो तो ही बाहर निकलिए, वरना घर में ही रहिए। कुछ समय की बात है, सब ठीक हो जाएगा।' और साथ ही कहती थीं कि 'बच्चों इन सब के बीच भी अच्छी बात यह है कि हम सब इन परिस्थितियों में भी पढ़ रहे हैं, हँस-खेलकर बातें कर रहे हैं।' हम सबका ऑनलाइन मिलना, पढ़ना-लिखना, उनसे कभी फटकार खाना तो कभी शाबाशी पाना एक मीठी याद बन गया है। गुरु के वचन आज याद आते हैं। वे कहतीं थीं, दुआ देती थीं, कि बच्चों, आप बढ़ते रहें मुस्कुराकर, और आपका हर ख्वाब हकीकत बन जाए।
उनका जाना बेहद दुखद है। उनका आशीष सदा हम बच्चों पर बना रहे।

हे वीणा वादिनी,
हे समस्त ज्ञान धारिणी,
आशीष बनाए रखना सदा,
है गुरु हमारे देव यहां,
इनका साथ बनाए रखना सदा।

गायत्री
हिंदी विशेष,
तृतीय वर्ष

यादों की रहगुज़र ... एक कोलाज

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय के एक संकाय-सदस्य के रूप में ही नहीं, एक मेंटर, एक सखी, एक बहन और सबसे बढ़कर एक निष्ठावान मनुष्य के रूप में डॉ. वसुंधरा राय की अनेक छवियाँ हमारे हृदय-सागर की उर्मियों पर तिर रही हैं | आइए, कदम रखें यादों की रहगुज़र पर...

Government of India
Ministry of Education

मंत्रालय

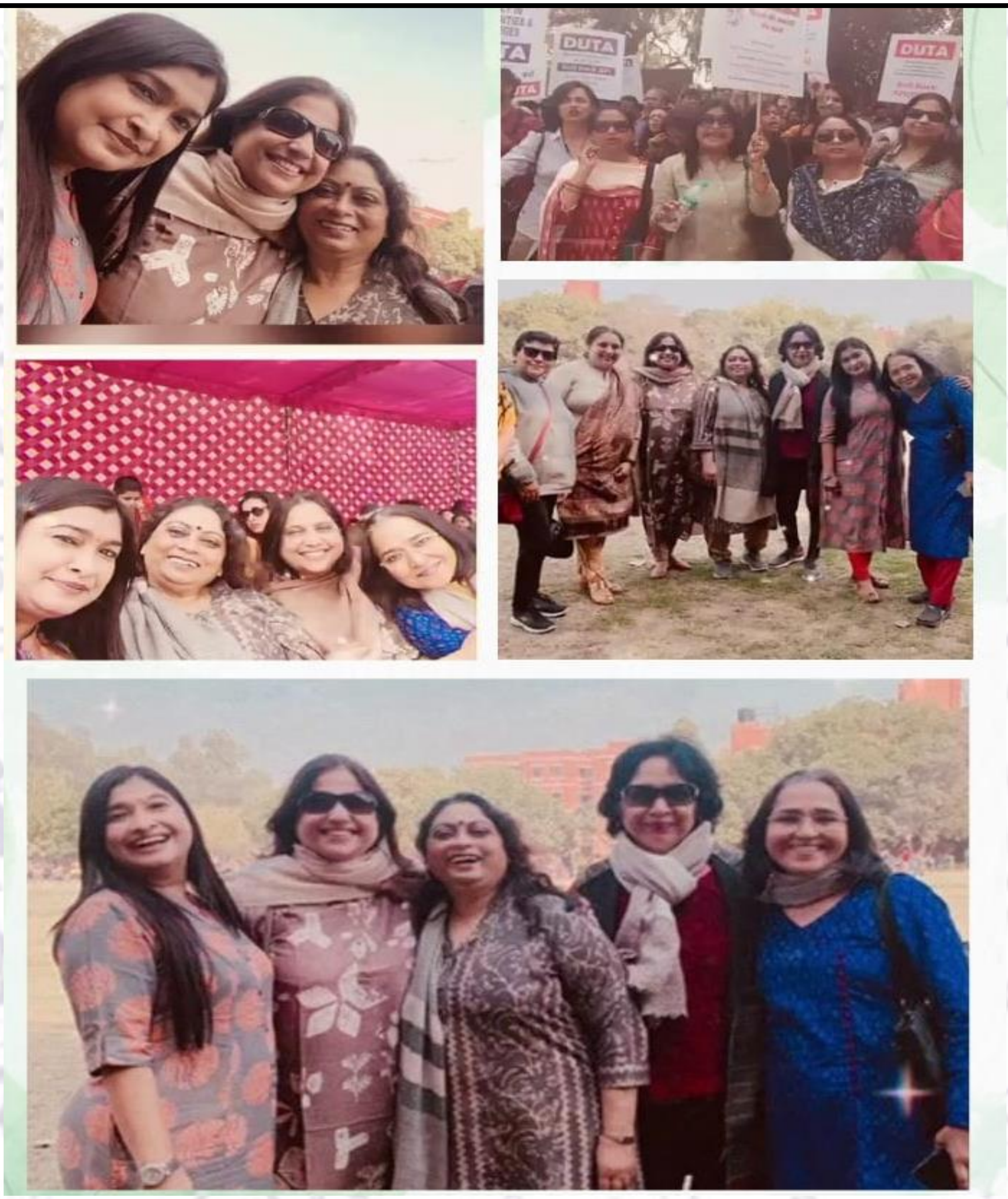

गुलशन में जब इन्द्रधनुष खिल जाएगा
तिरी याद का बादल रसधारा बरसाएगा ...

फिर से एक बार

फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
हम एक-दूसरे को समझना और समझाना चाहते थे,
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
एक-दूसरे को गले लगा कर सब भूल जाते थे।
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
एक दूसरे से द्वेष नहीं
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
पितृसत्ता की जकड से परे
स्त्री को मनुष्य समझ महत्त्व देते थे
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
अंधविश्वास और आडम्बर की लूट न थी
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
जात-धर्म की ऊंची दीवारें न थीं
फिर से एक बार रहना चाहूँगी वहाँ
जहाँ,
लोग एक-दूसरे से अपनी खुशियाँ बाँटते थे
यकीन है मुझे
वह दुनिया छुपी है
कहीं हमारे ही भीतर ...

मानसी रानी
हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

बेटियाँ

नसीब हैं बेटियाँ
सौभाग्य हैं बेटियाँ
आशीर्वाद हैं बेटियाँ
अभिमान हैं बेटियाँ।
लक्ष्मी का रूप हैं बेटियाँ,
ईश्वर का वरदान हैं बेटियाँ
माँ-बाप की पहचान हैं बेटियाँ,
माँ-बाप की जान हैं बेटियाँ
समाज की शान हैं बेटियाँ,
जग का आधार हैं बेटियाँ

शिखा श्रीवास्तव
हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

लहर : यादों की आवाजाही

ए लहर, तू ठहर
तू जाती कहाँ है?
तू आती है और चली जाती है,
बहुत अनकहे एहसास,
माज़ी के पल याद दिला जाती है,
तू अपने साथ शीतलता जो लाती है,
उसे थोड़ी देर थमने तो दे,
अभी तो सूखी माटी को स्पर्श किया है
उसे भीगने तो दे,
ए लहर तू ठहर,
तू जाती कहाँ????
कुछ सीपियाँ तो चुन लूं
एक माला तो बुन लूं
तेरे सीने पर तिरते जहाज़ के मस्तूल पर
झिलमिलाती रौशनी का संदेसा तो सुन लूं
ए लहर, तू ठहर ...

कशिश यादव
हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

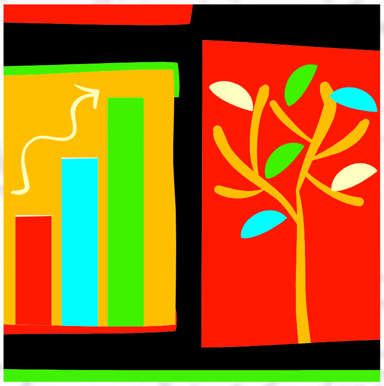

दोस्त

दोस्त अहम हिस्सा होते हैं हमारी ज़िन्दगी का,
कहते हैं दोस्त मुश्किल में कभी साथ नही छोड़ते
लेकिन दोस्त कोई दूसरा इंसान ही हो, ज़रूरी तो नहीं।
हम अपने भी अच्छे दोस्त हो सकते हैं
है न?
जी हाँ, हम खुद अपने एक बहुत प्रिय और अज़ीज़ दोस्त बन सकते हैं
कभी अपने साथ समय बिता कर देखिए,
अपने बारे में जानकारी जुटा कर देखिए
देखिए कभी बरसते बादलों के नीचे बाँहें फैलाकर,
या किसी वृक्ष के नीचे एक प्याली चाय का मज़ा लेकर देखिए,
जिंदगी के हर पड़ाव पर
कोई आपके साथ हो न हो
अपने साथ आप होंगे,
कभी मुश्किल में पैर लड़खड़ाएंगे, आप खुद को ही संभालेंगे
कभी एक सफलता पर अपनी पीठ ठोकेंगे
दोस्त तो जरूरी हैं जिंदगी में
लेकिन आपकी खुद से दोस्ती भी है क्या ??

कशिश यादव
हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

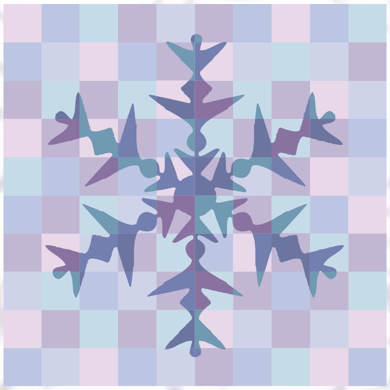

मैं भी अगर पंछी बन पाती

अगर मुझे पंख लग जाते
मैं समंदर पार करती
पंखों को पसार
गगन छूने जाती
भरती आसमान को बाँहों में,
मैं भी अगर पंछी बन पाती......
होता मेरा आशियाँ अनोखा,,
अनोखी प्रेम कहानी होती...
आकाश-धरा को एक करती
संध्या में बस चुप हो जाती,,,
मैं भी अगर पंछी बन पाती
खुला होता सारा जहान,,
मैं डाल-डाल फुदक कर आती ....
नीला अंबर जब चूमता सागर को
मैं उड़कर क्षितिज पार कर जाती
बरसाती बरखा बूँदों में
कहीं पत्तों के पीछे छुप जाती
इंद्रधनुष के रंगों को छूती,,,
मैं भी अगर पंछी बन पाती.....
मैं भी अगर पंछी बन पाती.....

सेजल
हिन्दी विशेष
तृतीय वर्ष

अपने कुछ पल

ज़िंदगी में कुछ पल अपने चाहती हूँ
बिना किसी त्यौहार के
माथे पर बिंदी, आँखों में काजल
लगाना चाहती हूँ
अपनों की सलाह चाहती हूँ,
कुछ फैसले अपने अपनी मर्जी से
लेना चाहती हूँ
मैं अपनी जुबान बोलना चाहती हूँ
मैं अपनों के साथ रहना चाहती हूँ
उनका संबल होना चाहती हूँ
ज़िंदगी में कुछ पल अपने चाहती हूँ
मैं कोई परिंदा नहीं
जो जकड़न में रहूँ
बंधे सांचों के दायरे को तोड़कर
मैं उन्मुक्त जीना चाहती हूँ
ज़िंदगी में कुछ पल अपने चाहती हूँ
बिना किसी त्यौहार के,
माथे पर बिंदी, आँखों में काजल
लगाना चाहती हूँ...

सिमरन बानो
बी.ए हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

गोविन्द विनायक कर्णादिकार

भारत की शान था वो
महाराष्ट्र का मान था वो
गोविंद विनायक कर्णादिकार था वो
पिता था उसका गरीब किसान
गरीबी से रहता था परिवार परेशान
फिर भी उसने किया परिश्रम कड़ा
अपने पैरों पर वह हुआ खड़ा
ब्राउनिंग और मार्धेकार से हो प्रभावित
कविताएँ लिखने का उसने निश्चय किया
जिससे सबका दिल जीत लिया
जीवन साहित्य, भक्ति ही नहीं
वैज्ञानिक सूझ-बूझ का भी परिचय दिया
बच्चों के लिए भी बहुत कुछ लिख दिया
लोगों ने उन्हें प्यार-से बिन्दा बना दिया
कविताएँ उनकी थी बड़ी अनोखी
दिल को वो छू जाती थीं
ऐसा लगता था मानो
थोड़े में सब कह जाती थीं
कवि ही नहीं लेखक भी थे वे महान
उनके लेखों से मिलता था बड़ा ज्ञान
मराठी साहित्य को उन्होंने समृद्ध किया
और इसके लिए उन्हें 'ज्ञानपीठ' सम्मान मिला
साहित्य को किया अपना जीवन समर्पित
और देश को किया उन्होंने गर्वित
मेरी ये पंक्तियाँ श्रद्धा सहित आपको हैं अर्पित
ऐसे महान व्यक्तित्व को करती मैं हूँ शत्-शत् नमन।

वृंदा कृष्णात्रे
बी. ए अर्थशास्त्र (विशेष)
तृतीय वर्ष

आ गया ख़त......

आ गया ख़त माँ अब मुझे जाना होगा
जो वादा माँ से किया था अब निभाना होगा,
उसका लाल ज़िंदा है अभी से उसे बताना होगा
जो तुझसे दूर जाने का डर है उसे अब भुलाना होगा,
तेरे बिना अब खुद को समझाना होगा
आ गया अंत भी अब मुझे जाना होगा दूर,
जा रहा हूं माँ लेकिन सब याद आएगा,
वो तेरा अपने हाथों से मुझे खाना खिलाना,
वो मेरे सर को अपने गोद में रखकर सुलाना,
सोने से पहले मुझे लोरियाँ सुनाना,
सारी दुनिया की निगाहों से मुझे बचाना,
सबकी नजरों से बचाकर अपने आँचल में छिपाना,
मुझे गले से लगाना,
खूब, हँसना और हँसाना
कहीं दूर जो रहूँ "मेरा सबसे नन्हा-मुन्ना"
कह के दुलारना
इस ममता से दूर कहीं मेरा अब न ठिकाना होगा,
माँ की गोद को छोड़,
उस मातृभूमि की गोद को आदत बनाना होगा
बुलावा आ गया वतन का माँ, अब मुझे जाना होगा।
देख मेरे जाने के बाद तू उदास मत होना,
कभी याद आए मेरी, तो मेरी तस्वीर को अपनी छाती से लगा के मत रोना
देख के मेरे कमरे का वो खिलौना
तू कभी अपना दुपट्टा मत भिगोना..
सता रहे हैं जो मातृभूमि को उनको सबक सिखाना होगा,
जिस माटी में हमने जन्म लिया,उस माटी का कर्ज चुकाना होगा,
इस माँ के चरणों को करता हूँ मैं नमन,
अब उस माँ के चरण में शीश झुकाना होगा,

रिया कश्यप
हिन्दी विशेष
द्वितीय वर्ष

आसान नहीं होता...

खुशियाँ तो हर कोई बाँट लेता है,
किसी के ग़म को बाँटना आसान नहीं होता,
अमीर तो बहुत हैं दुनिया में,
पर गरीबी काटना आसान नहीं होता,
किताबों के बोझ की जगह,
जिम्मेदारियों का बोझ उठाना आसान नहीं होता,
खिलौने से खेलने की उम्र में,
खिलौने बेचना आसान नहीं होता,
भूख लगने पर खाना तो सब खाते हैं,
पर भूखे पेट सोना आसान नहीं होता,
कड़ी धूप में पैर जलाकर,
दो पैसे कमाना आसान नहीं होता,
शाम होते ही परिंदे भी लौट आते हैं,
अपने बसेरे की ओर,
पर इंसान ऐसे भी हैं, जिनका मकान नहीं होता,
धूप छाँव कंपकंपाती ठंड,
फुटपाथ पर गुज़ारना आसान नहीं होता,
ओढ़ने को चादर नहीं
पत्तों से पेट ढँकना आसान नहीं होता,
आँखों में नमी और चेहरे पर,
मुस्कान लिए घूमना आसान नहीं होता,
माना सबका नसीब एक सा नहीं होता,
पर क्या गरीब का कोई अरमान नहीं होता,
ये वक़्त है साहब, हर पल बदलता है,
पर हिम्मत हारने से कोई काम नहीं होता,
किसी जरूरतमंद की मदद करना इंसानियत है,
दिखावा करने वाले तो बहुत हैं दुनिया में,
पर किसी गरीब को बल देना आसान नहीं होता...

आस्था
बी. ए (प्रोग्राम)

हिन्दी

अभिमान है,
स्वाभिमान है,
हिन्दी हमारा मान है
हिन्दी हमारी शान है
सुर, ताल है,
लय, भाव है,
हिन्दी हमारा गान है
दिलों उद्गार का है,
भाषा का संसार है,
हिन्दी जन-जन का आधार है
इसमें बोलियों की झंकार है,
यह भारत का सिंगार है,
हमारी संस्कृति की रसधार है
इसमें विचारों का आगार है,
नेह का भण्डार है
हिन्दी भाषाओं में महान है
बाग की बहार है,
राग की मल्हार है,
हिन्दी हमारा प्यार है
यही देश की शान है,
देवों का वरदान है,
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

श्वेता,
बी. ए (विशेष) अंग्रेजी
प्रथम वर्ष

पढ़ो, सीखो

इसलिए नहीं, कि तुम्हें किसी को हराना है
इसलिए कि तुम्हें महफ़िलें लूटनी हैं
बल्कि इसलिए, कि तुम्हें एक ही जीवन में अनगिनत बार जीना है
इसलिए,क्योंकि तुम रेगिस्तान में भेड़ें नहीं चरा सकते
तुम दुनिया के सबसे खूँखार लुटेरे नहीं बन सकते
तुम हिमालय के योगी और घाना के मछुआरे नहीं बन सकते
तुम बर्फ़ीली दुनिया के एस्कीमो और अफ़्रीका के शिकारी नहीं बन सकते
तुम नहीं जान सकते उस माँ का दुख
जिसने अपने चारों बेटे युद्ध में गँवा दिये
तुम दुनिया के महानतम उपन्यासकार होकर
जुए की भयानक लत की आक्रामकता नहीं महसूस सकते
अपनी नाकामी से परेशान कोई पिता जब बार-बार आत्महत्या करने की कोशिश में नाकाम होता है, तो क्या सोचता है ?
तुम कैसे जान सकोगे उस क़ैदी की छटपटाहट,
जिसने पिछले छब्बीस सालों से चाँद नहीं देखा ?
कोई भाषा, संस्कृति या सभ्यता कैसे मर गई ?
कहाँ जाना चाहता है हर शख़्स?
धर्म क्या और क्यों है ?
दुनिया की सबसे छोटी कहानी कैसे लिखी गई ?
संगीत कैसे उपजा
और क्यों बदल गया शिकार का आदिम तरीका ?
ये सब जानने के लिए पढ़ो जो हाथ लगे, पढ़ जाओ
तुम अकेले नहीं हो, जो ख़ुद को अकेला समझता है; ये समझने के लिए पढ़ो

नाज़रीन जहाँ
बी.ए इतिहास विशेष
द्वितीय वर्ष

माँ

माँ ही ज़िंदगी है,
और ज़िंदगी का सार भी
माँ है तो खुशियाँ हैं
और सुकून भी
माँ है तो अस्तित्व है
और हमारा वजूद भी
माँ है तो उसके आँचल की छाँव है
और बेटी का लाड़ भी
माँ है तो दुआएँ हैं
और कामयाबी भी
माँ है तो दुनिया रंगीन है
और खूबसूरत भी
माँ है तो जन्नत है
और जीवन का रस भी
माँ है तो पूरा संसार है।

अनामिका पांडे
हिंदी विशेष
द्वितीय वर्ष

समाज नामक इस विराट इमारत में
वह कौन सा कमरा है, जो माँ का कमरा है?
केदारनाथ सिंह

धन

धन से पुस्तक मिलती है,
किंतु ज्ञान नहीं।
धन से आभूषण मिलता है,
किंतु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है,
किंतु आनंद नहीं।
धन से साथी मिलता है,
किंतु सच्चा मित्र नहीं।
धन से भोजन मिलता है,
किंतु भूख नहीं।
धन से बिस्तर मिलता है,
किंतु नींद नहीं।

शिवानी मौर्या
बी. ए प्रोग्राम(कंप्यूटर साइंस + अर्थशास्त्र)

'मित्रता की सच्ची
परीक्षा संकट में नहीं,
उत्कर्ष में होती है।
जो मित्र के उत्कर्ष को
बरदाश्त कर सके,
वही सच्चा मित्र होता है।'

हरिशंकर परसाई

माँ

माँ संवेदना है, भावना है, एहसास है,
माँ कभी न बुझने वाली अमिट प्यास है।
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी भाषा है,
माँ मेरे लिए जीवन की परिभाषा है।
माँ होठो की मुस्कान है, ममता की धारा है,
माँ मेरे लिए आंखों का सिसकता किनारा है।
माँ अनुष्ठान है, साधना है, हवन है,
माँ जिंदगी के महल में आत्मा का भवन है।
माँ ममता है, त्याग है, तपस्या है, सेवा है,
माँ चूड़ी वाले हाथों और मजबूत कंधे का नाम है।
माँ पृथ्वी है, संसार है, जगत की धूरी है,
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है।
पंक्तियाँ ये माँ चरणों में अर्पित हैं,
माँ आपको कोटि कोटि नमन है।

शिवानी मौर्या
बी. ए प्रोग्राम(कंप्यूटर साइंस + अर्थशास्त्र)

छू नहीं सकती मौत भी आसानी से इसको
यह बच्चा अभी माँ की दुआ ओढ़े हुए है।
-मुनव्वर राणा

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा अभिशाप है,
जीवन का संताप है
दहेज
लेना देना पाप है।
यह कलंक है,
मानवता के मस्तक पर
यह प्रतीक चिह्न है,
दानवता
के अस्तित्व का
नारी के सम्मान को
सदा कलंकित करता आया।
धन के लोभी पापियों के,
घर में संपत्ति भरता आया।
इसका नाश आज की ज़रूरत है

शिवानी मौर्या
बी. ए प्रोग्राम (कंप्यूटर साइंस + अर्थशास्त्र)

.. सबसे ख़तरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना, सब कुछ सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मार जाना ... पाश

रक्षा- कवच

मैंने हर दर्द को सहा
दोस्ती कर ली, उसे जाने नहीं दिया
देर तक परखता रहता था वह
न जाने क्या ढूँढता था
जो उसे मिल नहीं पाता
धीरे-धीरे दर्द वह, कसक बन कर
जम-सा गया था दिल में
बर्फ़ की चट्टान की तरह
पर ग्लेशियर की तरह
हर चोट पर थोड़ा दरक ही जाता
धीरे-धीरे वही हुआ जो होना था-
पिघलता रहा दर्द भी चट्टान का
मन के हर मैल को धोता,
निर्मल कर उसे निखारता रहा
सुख-दुख, आशा-निराशा
सब एक रंग हो गये।
ख़ुशियाँ बटोरने और बाँटने का हुनर
दर्द ने पिघलती चट्टान से ही सीख लिया
और वही मेरा रक्षा-कवच बन गया

डॉ. राधिका सिंह

सतरंगी ख़ुशबू

आँखों की अलमारी से
आगे बढ़ते-बढ़ते
यादों का ख़ज़ाना कब
दिल के तहख़ाने में
जाकर जमा हो जाता है
कोई नहीं जानता।
नहीं जानता कोई
उस तहख़ाने के किस
झरोखे से निकल कर
प्यार की ख़ुशबू
धीरे-धीरे फैलती हुई
घेर लेती है पूरे वजूद को।
खिल-खिल जाती हूँ जैसे
नहा कर सावन की फुहार में।
पल-पल घुलता जाता है
उस मोहक-मादक महक में।
रँग-सी जाती है ज़िंदगी
ख़ुशबू के सतरंगी रंग में।

-डॉ.राधिका सिंह

रात के अंधेरे में

आँखों की
चमकती उजास
मद्धिम होती-होती
शाम के धुँधलके में
तेज़ी से तब्दील होती
खो जाती रात के अंधेरे में।
तेज़ी से चलता
घटना-चक्र
कब शुरू, कहाँ अंत।
किस राग की झंकृति
किस वसंत की अनुकृति
बन कर केवल एक वृत्त
घुल जाते रात के अंधेरे में।
डॉ. राधिका सिंह

मैं घास हूँ
मैं आपके हर किए धरे पर उग आऊँगा
बम फेंक दो चाहे विश्वविद्यालय पर
बना दो हॉस्टल को मलबे का ढेर
सुहागा फिरा दो भले ही हमारी झोपड़ियों पर
मेरा क्या करोगे
मैं तो घास हूँ हर चीज़ पर उग आऊँगा.. पाश

सौंधी महक

आषाढ़ की फुहार नहीं
सावन की झड़ी बन
धरती की प्यास
अंतर की आस
जगाती-बुझाती।
आँखों की कोर से
निकली बूँदों की
निरंतरता
माटी को पोर-पोर
गीली कर
सोंधी महक से पूर देती।
डॉ राधिका सिंह

कस्तूरी मृग

नेह के धागों में जकड़ा
यह मन।
घूम आता है
जाने कहाँ-कहाँ।
पूछता है
रंग -ओ-गुलाब-ख़ुशबू से
तुम्हारा पता -ठिकाना ।
ख़त कितने लिख डाले,
अनगिन गीत गा लिये
प्रेम, मिलन और विरह के
हर धड़कन ने पुकारा तुम्हें,
हर साँस ने आवाज़ दी ।
हर नज़र में तुम्हारी तस्वीर
डोलती रही,
ढूँढती रही क़दम-दर-क़दम
सिर्फ़ तुम्हें ही
जानती हूँ यह खोज
ख़त्म होगी नहीं,
तड़प भी कम होगी नहीं
कस्तूरी-मृग जो बन गई ।

डॉ.राधिका सिंह

**दुर्गम बर्फानी घाटी में, शत-सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले, निज के ही उन्मादक परिमल-
के पीछे धावित हो-होकर, तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है.........बादल को घिरते देखा है..
-नागार्जुन**

ऑनर किलर

रिश्तों की उजली चादर के
तार-तार हुए झरोखों से
खौलते-उबलते मन में
अरमानों को तड़पते देखा है।
देखा है अपनों को ही,
अपनों की हसरतों को
पैरों तले कुचलते और
रोती-बिलखती आँखों के
साथ विदा करते।
सब देखते-सुनते भी
आँखें मूँद ली जातीं,
होंठ सी लिये जाते, क्योंकि
तब लड़कियों के हक़ में
कोई क़ानून नहीं था।
आज क़ानून बन गया है
भोले मन को बहलाने के लिये
आवाज़ें उठने लगी हैं,
वादे होने लगे हैं
सुरक्षा के इंतेज़ाम
भी होते हैं;पर
अरमानों की होली
आज भी जलती है,
चाहतों के पटाखों का
धुँआ आज भी उड़ता है।
दब जाती है उनमें ही
गोलियों की चीख़।

- डॉ.राधिका सिंह

धरती बची रहेगी

धरती बची रहेगी
आकाश भी बचा रहेगा
मेरी आँखों के ठीक सामने हैं
बेल-पत्र का पेड़
कुछ दिनों से देख रही थी
नंगी शाखाएँ
उसके झड़ गए थे सारे पत्ते
अवसाद देतीं
आज दिख रही हैं उसमें छोटी छोटी हरी पत्तियाँ
माना कि अभी अंधेरा घिरा है
डरा हुआ है आदमी
पर उजाले को कौन रोक पाया
आएगा वह चीरता हुआ अंधेरे को
डर को मसलता हुआ उठेगा आदमी
जब रोम धधक रहा था
तब राजा बाँसुरी बजा रहा था,
शायद
सभी हुक्मरानों की फ़ितरतें
ऐसी ही होती होंगी, आमजन मर रहा है कभी
रोटी के अभाव में, तो कभी
घर के अभाव में,
कुछ पुराने पीले पत्ते भी, मुस्करा रहे हैं
उन्हें देखकर पेड़ पर जीवन लौट रहा है।
इसीलिए कहती हूँ
जीवन भी बचा रहेगा हरी कोंपल की तरह
कैसा भी अंधड़ आए
थमेगा ज़रूर
बस अपना विश्वास और मुस्कान बचाए रखना......

डॉ. आशा जोशी

लेखन कला

मानव ही सारे प्राणियों में सबसे विचारशील प्राणी है। यही कारण है कि उसने जीवन को अपने वश में कर रखा है। मानव मन में विचारों का क्रम निरंतर चलता रहता है। यहाँ तक कि सोते समय भी दिमाग में विचार चलते रहते हैं। इन विचारों का जन्म कई कारणों से हो सकता है। व्यक्ति के आनुवान्शिक गुण, उसका वातावरण उसकी बौद्धिक क्षमता आदि इन कारणों में शुमार हैं। इन विचारों को प्रकट करने के कई तरीके हैं- जैसे बोलकर, संकेतों से, चित्र बनाकर, अभिनय करके और लिखकर। अभिव्यक्ति के ये सारे माध्यम अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं लेकिन छात्र-जीवन से लेकर अपने आपको स्थापित करने तक जो माध्यम सबसे महत्वपूर्ण है वह है- लेखन।

अब प्रश्न यह है कि हम अपनी लेखन कला को किस तरह प्रभावी बनाएँ कि छात्र जीवन में हम सबसे अच्छे अंक ला सकें और प्रतियोगिता में सफल होकर अच्छी से अच्छी नौकरी पा सकें?

हम चाहे जितने भी ज्ञानवान हों और हमने चाहे जितनी भी मेहनत से अध्ययन किया हो, अगर हम परीक्षाओं में अपने उत्तर को अच्छे ढंग से लिखना नहीं जानते तो हम अच्छे अंक नहीं ला सकते। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल नहीं हो सकते। तो आइए जाने प्रभावी लेखन कला के कुछ गुण-

1. साफ व सुंदर लेख न सिर्फ अच्छे अंक दिलाने में सहायक है बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व का दर्पण भी होता है। लेख देखकर व्यक्ति के भावों का अनुमान लगाना आसान होता है। अच्छा और साफ़-सुथरा लेख लिखकर हम कम अच्छे उत्तर में भी अच्छे अंक पा सकते हैं, लेकिन अस्पष्ट और बार-बार काट कर लिखने से हमारे उत्तर में भी अंक कटने की संभावना रहती है।
2. हमें अपना उत्तर प्रश्न की ही भाषा से शुरू करना चाहिए और संभव हो तो प्रश्न की भाषा से ही खत्म करना चाहिए।
3. हमें परीक्षाओं में पूरे समय का उपयोग करना चाहिए, न कि जल्दी से लिखकर परचा जमा कर देना चाहिए।
4. हमें सभी प्रश्नों के उत्तर लिखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। यह ठीक नहीं कि हम कोई प्रश्न छोड़कर आएं। उत्तर सोच-समझकर लिखना चाहिए।
5. जिन प्रश्नों के उत्तर हम अच्छी तरह लिख सकते हैं, उन्हें सबसे पहले लिखें और फिर उन प्रश्नों के उत्तर लिखें जो हमें कम आते हैं।
6.प्रश्नों के उत्तर शब्द सीमा में ही लिखें जिससे अन्य प्रश्नों के लिए समय बच सके। यदि हम एक अंक के प्रश्न का उत्तर आधे पेज में लिखेंगे तो भी हमे एक अंक मिलेगा लेकिन अन्य प्रश्न लिखने के लिए समय कम रह जायेगा।

7. हम प्रश्न के अंकों के अनुसार उनके लिए पहले समय निर्धारित कर लें और उतने ही समय में उत्तर लिखने का प्रयास करें।

8. परीक्षा के पहले हमें प्रश्नों के उत्तर घर पर लिख-लिख कर अभ्यास कर लेना चाहिए। इससे हमें उत्तर याद हो जाएंगे और हमारे लेखन की गति भी बढ़ेगी।

9. उत्तर की भाषा सरल हो। जहाँ तक हो हमें ऐसे शब्द न लिखें जो जल्दी समझ में न आएं।

10. लिखते समय ज्यादा कटिंग से बचें, यह दिखाता है कि हमें उत्तर अच्छे ढंग से याद नहीं।

11. अपने लेखन में व्याकरण का ध्यान रखें, कोशिश रहे कि व्याकरण संबंधी गलतियाँ न हों तो अच्छा होगा। इसके लिए हमें व्याकरण अवश्य पढ़ना चाहिए।

12.अगर हम अपने लेखन में मुहावरों का प्रयोग करें तो लेख प्रभावी होगा।

13. हम अपने लेख में दूसरों की कही बात (Quotation) को लिखते हैं तो यह न सिर्फ हमारे लेखन को अच्छा बनाता है, बल्कि हमारी बात की भी पुष्टि करता है।

14. हमें अपने संबंधित विषय के आस-पास ही लिखना चाहिए न कि विषय से हटकर। हमारा अगला पैराग्राफ दूसरे पैराग्राफ से संबंधित होना चाहिए।

15. बड़े लेखों में हमें लेख का प्रारंभ प्रभावी प्रस्तावना (Introducation) से करना चाहिए। बड़े लेखों में लेख के अंत में हमें उपसंहार (Conclusion) लिखना चाहिए और अपने विचारों को निष्कर्ष रूप में भी प्रस्तुत करना चाहिए।

16. लेखन को और प्रभावी बनाने के लिए हमें नए-नए शब्दों को सीखते रहना चाहिए। इस प्रकार हम निरंतर अभ्यास से अपने लेखन को प्रभावी बनाकर जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

पूजा,
बी. ए (विशेष) हिन्दी,
द्वितीय वर्ष

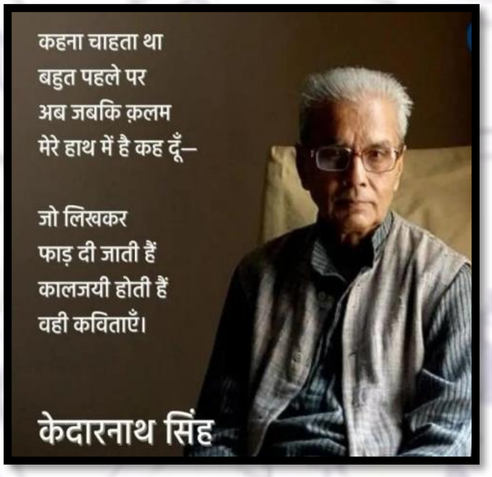

इक्कीसवीं सदी का भारत

"इक्कीसवीं सदी में कई समस्याएँ उत्पन्न होंगी, जो अभी तो सिर चकरा रही हैं पर आगे चलकर उनकी प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होने लगेगी। इन दिनों जो अंकुर मात्र हैं, वे अगले दिनों विकसित दृष्टिगोचर होंगे।"-आचार्य श्रीराम शर्मा

लगभग 25 वर्ष पूर्व अंग्रेजी साहित्य के लेखक ने बहुत रोचक लेख लिखा था। उसका शीर्षक था 'इक्कीसवीं सदी की दुनिया।' लेख में बताया गया था कि इक्कीसवीं सदी में मानव समाज औद्योगिक विकास की अनेक मंजिलें तय करते हुए उस जगह जा पहुँचेगा, जहाँ आदमी शून्य होगा और मशीन सर्वोत्तम। वह चांद तक पहुँचेगा, आकाश में जग-मग करते तारों की खोज करेगा, किंतु मशीनों के माध्यम से। यह वह समय होगा, जब आदमी का पूरा विवेक मशीनों के कलपुर्जों को समर्पित कर दिया गया होगा और आदमी विकास के अंतिम चरण में अपने द्वारा निर्मित मशीनों का दास होकर रह जाएगा।

पचास वर्ष पूर्व प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इस स्थिति को गहराई से समझा था और तभी वह यह कहने पर विवश हुए थे- ' तुम्हारी तहजीब अपने खंजर से आप ही खुदकुशी करेगी। पश्चिमी देशों ने आदमी के आकार और प्रवृत्तियों के रोबोट बना लिये हैं और वे एक सीमा तक उन पर निर्भर होते जा रहे हैं। तय और भारी उद्योगों की स्थापना के बाद कृषि के तरीकों में व्यापक परिवर्तन करके लोगों के चिंतन और उनकी मानसिकता में बदलाव लाकर हमारा देश निश्चय ही ऐसी सुखद स्थितियों का निर्माण कर सकेगा कि यहाँ का प्रत्येक देशवासी समृद्धि और आरामदायक जीवन व्यतीत कर सके। हम विश्वास कर सकते हैं कि सन् २०३९ तक हम विकास की ऐसी निर्णायक स्थिति में अवश्य पहुंच जाएँगे,जब हमारे देश का कोई भी बच्चा भूखा नहीं सोएगा। कोई तन ऐसा नहीं होगा जो वस्त्रहीन हो। कोई परिवार ऐसा नहीं होगा, जिसके सिर पर एक छत न हो।

पूजा,
बी. ए (विशेष) हिन्दी
द्वितीय वर्ष

आधुनिक बेड़ियाँ

सोशल मीडिया को मनुष्य ने बनाया है। सोशल मीडिया ने मनुष्य को नहीं बनाया। आज के समय में कई सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं जिन पर हम संवाद कर सकते हैं। ऐसे किसी व्यक्ति का मिलना आज मुश्किल है जिसका किसी सोशल मंच पर कोई अकाउंट न हो। भले ही उसका बैंक अकाउंट न हो, लेकिन सोशल मीडिया पर उसका अकाउंट जरूर होगा। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के कारण व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे से नहीं मिलते जिस कारण वह अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं करते।

भावनाओं को प्रकट करने का कार्य अब उन्होंने सोशल मीडिया को दे दिया है। सोशल मीडिया के कारण व्यक्ति दिखावटी ज़िंदगी जीने लगा है, एक बाहरी आवरण ओढ़ कर जी रहा है और स्वयं को कहीं विलुप्त कर चुका है। आज हमारे पास इतने संसाधन उपलब्ध हैं कि हम किसी के पास किसी भी समय जा सकते हैं, और उससे बात कर सकते हैं, परंतु आज सोशल मीडिया ने व्यक्ति को व्यक्ति से दूर कर दिया है। क्या इसका कारण सोशल मीडिया है? शायद हो भी सकता है क्योंकि आज हमारा हर कर्तव्य यही पूरा कर देता है। हम लोगों से मिलते नहीं, अपने में खोऐ रहते हैं। गलतफहमी के शिकार होते हैं, हम एक-दूसरे के सामने कुछ भी अभिव्यक्त नहीं करते और न करना चाहते हैं। हमें मशीन ने मशीन बना दिया है। आज का मनुष्य स्वयं में सीमित हो चुका है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया ने व्यक्ति को बंधे हुए पशु की तरह बना दिया है जिसने स्वयं को एक पिंजरे में कैद कर लिया है।

"बहुत कुछ कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते हैं
सोशल मीडिया पर हजारों दोस्त बनाकर भी
असल जिंदगी में तन्हा रह जाते हैं,
आजकल के लोग ऐसा जीवन बिताते हैं।"

सिमरन बानो
हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

कोरोना काल में शिक्षा

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है- वह सीख जिससे मनुष्य का विवेक जागृत होता है। यह शिक्षा न जाने कैसे परिवर्तित होती चली गई और 'अर्थ' से जुड़ गई। अर्थात, शिक्षा का उद्देश्य' धन अर्जित करना' हो गया। नैतिकता से शिक्षा का कोई नाता न रहा, शिक्षा प्रोफेशनलिज्म से जुड़ गई।

जीवन की यह भागदौड़ चल ही रही थी कि कोरोना महामारी के कारण अचानक सब रुक गया, थम गया। स्कूल, कॉलेज, पार्क, रेस्टोरेंट सब का शटरडाउन हो गया। बस, रेल, हवाई जहाज, टैक्सी सब बंद। मनुष्य घर की चारदीवारी में कैद हो गया।

फिर जब लगा कि घर बैठे-बैठे अब कुछ ज्यादा ही हो समय गया है तो नए-नए तरीके से काम शुरू करने का जुगाड़ शुरू हुआ। जिन स्कूल कॉलेज के कैंपस में मोबाइल निषेध के बोर्ड लगे थे, वे मोबाइल पर ही कालेज खोल बैठे। जूम, गूगल मीट, गूगल क्लासरूम पर पढ़ाई शुरू हुई। बच्चे घंटों मोबाइल, लैपटॉप के आगे बैठे रहते। परीक्षाएँ कई जगह ऑनलाइन कराई गई या कई जगह अन्य आधारों पर विद्यार्थियों को आगे की कक्षा में प्रमोट किया गया।

इस महामारी ने पठन-पाठन की प्रक्रिया को ऑनलाइन मोड में ले जाने को विवश किया और ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र को एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना करना पड़ा। जहां कई छात्र अपना अधिकांश समय मोबाइल-कंप्यूटर स्क्रीन पर बिताते थे, वहीं कई अन्य इंटरनेट या स्मार्टफोन जैसे उपकरणों की अनुपलब्धता के कारण पढ़ाई में पिछड़ रहे थे।

हालांकि शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए भारत सरकार की 'ई पी जी पाठशाला' और 'स्वयं' पोर्टल जैसी पहल ने हमारी राहें आसान कीं, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रमों के ये एकीकृत मंच बड़े मददगार साबित हुए।

साथ ही प्रौद्योगिकी के लिए 'राष्ट्रीय शैक्षिक गठबंधन' योजना शुरू की गई जिसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप सीखने की अधिक अनुकूलित प्रणाली को विकसित करना है। इनमें शामिल हैं -' नेशनल प्रोजेक्ट ऑन टेक्नोलॉजी एनहैंसमेंट लर्निंग', नेशनल नॉलेज नेटवर्क'और 'नेशनल एकेडमिक डिपॉजिटरी' आदि।

इतनी योजनाओं के बावजूद अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कुछ मुख्य चुनौतिया निम्नांकित हैं –

- एक स्वस्थ अध्ययन माहौल का अभाव – यह मुख्य कमी रही क्योंकि शिक्षा केवल कक्षाओं के संचालन तक ही सीमित नहीं, बल्कि इसका उद्देश्य बातचीत, विचारों को व्यापक बनाने और मुक्त विचार-विमर्श आदि को बढ़ावा देना है। छात्र चुनौतीपूर्ण सामूहिक कार्यों और साथ मिलकर समस्याओं के समाधान के दौरान एक-दूसरे से अधिक सीखते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के दौरान सीखने योग्य बहुत सी महत्त्वपूर्ण चीजें

छूट जाती हैं। मोबाइल या लैपटॉप की स्क्रीन को लंबे समय तक देखते रहने से हम अपने मस्तिष्क का उपयोग अधिक स्वतंत्रतापूर्वक नहीं कर पाते हैं और न ही पढ़ाए जा रहे विषयों पर सटीक प्रतिक्रिया दे पाते हैं।

- प्रौद्योगिकी तक पहुँच का अभाव - यह अनिवार्य नहीं है कि हर छात्र, जो स्कूल जाने का खर्च वहन कर सकता है, वह फोन, कंप्यूटर या यहाँ तक कि ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिये एक गुणवत्तापूर्ण इंटरनेट कनेक्शन का भी खर्च उठा सकता हो। इसके कारण छात्रों को मानसिक तनाव से गुज़रना पड़ता है और हाल में ऐसे मामलों में काफी वृद्धि देखी गई है।
- शिक्षा के अधिकार के साथ विरोधाभास - प्रौद्योगिकी सभी के लिये वहनीय नहीं होती है, ऐसे में पूरी तरह से ऑनलाइन शिक्षा की ओर स्थानांतरित होना उन लोगों के शिक्षा के अधिकार को छीनने जैसा है जिनके पास उपयुक्त तकनीकी साधन नहीं हैं या जो इस लागत को वहन नहीं कर सकते हैं।
- असमानता - कोरोना वायरस के दौरान गांव के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा शहरी बच्चों के मुकाबले कम उपलब्ध हो पाई। इसने शहरी और गांव के बच्चों मे असमानता को और बढ़ा दिया।
- निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि महामारी शिक्षा को बहुत प्रभावित तो नहीं कर पाई क्योंकि इसका ऑनलाइन विकल्प हमारे पास उपलब्ध था, पर इसने साधन-संपन्न और साधन-विपन्न वर्गों के बीच की खाई को नंगा कर दिया। कहते हैं, भारत गांवों में बसता है, पर ग्रामीणों को ऑनलाइन विकल्प का लाभ कम मिला क्योंकि न तो उनके पास टेक्नोलॉजी थी और न ही वे डिजिटल-साक्षर थे। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह गांवों में प्रौद्योगिकी संस्थान स्थापित करे जो लोगों को डिजिटल तौर पर साक्षर करे, ताकि आगामी किसी भी संकट में वे शिक्षा से वंचित न रह जाएं।

आकृति
हिंदी विशेष,द्वितीय वर्ष

डार्क-हॉर्स

‘डार्कहॉर्स’ नामक नीलोत्पल मृणाल का उपन्यास उन विद्यार्थियों की दास्ताँ को बयाँ करता है जो सिविल सर्विसेज़ की तैयारी में लगे रहते हैं।
‘डार्कहॉर्स’ शीर्षक ऐसा है, जिसे पढ़ते ही मुझे ऐसा लगा मानो यह मुखर्जी नगर की, या आसपास की कालोनियों में किराए के कमरों में रह कर एक कठिन सपने को पूरा करने की जद्दोजहद में लगे विद्यार्थियों की जीवंत छवि प्रस्तुत करता है। एक ऐसी जगह, जहाँ हजारों लाखों अभ्यर्थी अपने मन में एक निश्चय, आंखों में एक सपना और मन में एक जज़्बा लेकर जाते हैं- सिविल सर्विसेज की रेस जीतने का जज़्बा। घनी गलियों के जाल में बसे छोटे-छोटे कमरों में कई-कई विद्यार्थी, सब अलग-अलग पृष्ठभूमि के, पर एक ही रेस में दौड़ते हैं।
इस उपन्यास में यह बताया गया है कि किस प्रकार संतोष अपने सपने साकार करने मुखर्जी नगर आता है और यहाँ राय साहब, मनोहर, गुरु, जावेद, विमलेंदु आदि से मिलता है। ये सब खुद उस रेस के घोड़े हैं, कैसे अनजाने ही वह इन लोगों का चेला बन जाता है। कैसे वह अपनी मंज़िल का सफ़र तय करता है और किन–किन परिस्थितियों के बवंडर में ये लोग टिके रहते हैं। यही लोग जो वर्षों से वैष्णव परंपरा का निर्वाह करते चले आते हैं आ रहे थे, यहाँ आकर समझौतावादी हो जाते हैं। लेखक ने खुद को केवल इन छात्रों के जीवन तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि उनके माता पिता और पृष्ठभूमि को भी वास्तविक भावनाओं के साथ चित्रित किया है।
एक तरफ तो इन सभी के ख्वाब होते हैं तो दूसरी ओर कंधों पर जिम्मेदारी, एक तरफ अपने परिवार और गांव की इज़्ज़त का सवाल होता है, तो दूसरी तरफ अगली सात पीढ़ियों को तार देने का उत्साह | इस कश्मकश के बीच हार के मानसिक तनाव को भी ये लोग सहते हैं। संतोष यह प्रण लेकर आता है कि एक ही साल में वह अपने सपने को पूरा कर लेगा, लेकिन ऐसा नहीं होता। साथ ही जब पंडित भी कहता है कि उसके हाथों में आई.ए.एस. की रेखा नहीं है तो वह बहुत निराश हो जाता है और अपने हाथों पर स्याही लगाकर उन रेखाओं को ही मिटा देता है, जिनमें आइ.ए.एस बनना नहीं लिखा। जो संतोष को रास्ता दिखाते हैं, वही राय साहब दिल्ली छोड़कर घर वापस चले जाते हैं, मनोहर और गुरु के भी सारे चांस खत्म हो जाते हैं। लेकिन संतोष अपनी मेहनत और काबिलियत पर यकीन रखता है और फिर से तैयारी में जुट जाता है।
कहते है न, “मेहनत इतनी करो कि किस्मत भी तुम्हारा साथ देने पर मज़बूर हो जाए” .. भले ही संतोष के हाथ की लकीरों ने भले ही उसका साथ नहीं दिया लेकिन उसकी मेहनत उनको बदल देती है वह उस रेस का “डार्कहॉर्स” साबित होता है। उसकी मेहनत रंग लाती है, उसका सपना साकार हो जाता है।

उपन्यास की भाषा बहुत ही सरल और आमफहम है। जैसे हम आपस में बात करते हैं, उसी तरह की, पाठक उससे तुरंत जुड़ जाता है। इस उपन्यास के अंत में हमें डार्कहॉर्स का असल मतलब समझने को मिलता है:- "डार्कहॉर्स मतलब रेस में दौड़ता वह घोड़ा जिसपर किसी ने दांव न लगाया हो, जिससे किसी को कोई उम्मीद न हो।...और वह सब को पीछे छोड़कर आगे निकल जाए।" आखिर की एक पंक्ति बहुत अच्छी है, "जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है, जरूरी नहीं है कि सब एक ही रास्ते पर दौड़ें। जरूरत है कि कोई एक रास्ता चुन लो और उसी ट्रैक पर दौड़ो, रुको नहीं..............दौड़ते रहो। क्या पता तुम किस दौड़ के डार्कहॉर्स साबित हो जाओ।"

श्रेश्या पांडेय,
बी.ए (हिंदी विशेष)

क्या हार में, क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं,
कर्त्तव्य पथ पर जो भी मिला
यह भी सही वो भी सही
वरदान, नहीं मांगूंगा
हो कुछ पर हार नहीं मानूंगा

- अटल बिहारी वाजपेयी

कोरोना वायरस का पर्यावरण पर प्रभाव

पर्यावरण से तात्पर्य हमारे चारों ओर के वातावरण तथा उसमें निहित तत्व और उसमें रहने वाले प्राणियों से है। पर्यावरण में मनुष्य का हस्तक्षेप दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है, जिससे नदियां दूषित हो रही हैं, वायु प्रदूषित हो रही है, पेड़ पौधे काटे जा रहे हैं जिससे वन्य जीवन लुप्त हो रहा है। एक प्रदूषित वातावरण के कारण लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा था, महानगरों में कूड़े के पहाड़ नज़र आना आम सी बात हो गयी थी ... पर जीवन अपनी मंथर गति से चल रहा था।

फिर एक दिन अचानक मनुष्य अपनी ही चारदीवारी अर्थात अपने-अपने घरों में सिमट कर रह जाने पर मजबूर हो गया। कारण था 'कोरोना वायरस(कोविड-19)'। पूरा विश्व इस वायरस की चपेट में आ गया लेकिन इस वायरस के कारण हमारे प्रकृति या पर्यावरण पर अच्छा प्रभाव देखने को मिला। कोविड-19 फैलने के कारण विश्व में लॉकडाउन लगा, जिसके कारण मनुष्यों का बाहर जाना है बंद हो गया। सभी के काम -धंधे ठप हो गए जिससे लोग अपने घरों में ही रहने लगे। कोरोना वायरस के द्वारा लगा मानो पूरा विश्व एक कमरे में सिमट गया हो। कोविड-19 द्वारा लगे लॉकडाउन में प्रकृति पर अच्छा प्रभाव दिखा, ऐसा लगा कि प्रकृति को एक नया जीवनदान मिला हो।

भारत में कई राज्यों से उन नदियों के अचानक साफ होने की खबरें आने लगीं, जिनके प्रदूषण को साफ करने के लिए असफल प्रयास दशकों से चल रहे थे। दिल्ली की जीवन दायिनी यमुना नदी, जिसमें झाग व काला पानी हुआ करता था, कोरोना-वायरस के समय लगे लॉकडाउन में उसका पानी अपेक्षाकृत स्वच्छ हुआ। झील नगरी नैनीताल समेत भीमताल जैसे झीलों का पानी न केवल पारदर्शी बल्कि निर्मल दिखाई दे रहा था। इसके कारण उनकी खूबसूरती और अधिक बढ़ गई। पिछले कई सालों से झील के जलस्तर में जो गिरावट दिखती थी, वह भी लॉकडाउन के समय नहीं दिखी। लॉकडाउन के कारण प्रकृति अपने मूल स्वरूप में लौट आई। हवा-पानी अपने शुद्ध स्वरूप में दिखने लगे। इसके नजारे उत्तराखंड में अधिक स्पष्ट दिखाई देते थे।

देश के प्रमुख तीर्थ स्थल हरिद्वार और ऋषिकेश में गंगा जल एकदम साफ, नीला दिखाई देने लगा तथा वैज्ञानिकों ने इस जल को पीने योग्य बताया। कारण था कि गंगाजल में घुले डिसाल्वड सॉलिड की मात्रा 500% की कमी थी। उत्तराखंड के प्रमुख पर्यटन शहर हों या फिर देवभूमि के तीर्थ, तीर्थ-स्थल या नगर; हर जगह लॉकडाउन के चलते पर्यावरण में सुधार दिख रहा था। अप्रैल, मई व जून के महीनों में यहाँ लगभग सभी धार्मिक स्थल व पर्यटन स्थल लोगों की भीड़ से भरे रहते थे तथा कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन के समय उन दिनों इन स्थलों पर सन्नाटा पसरा हुआ था।

लॉकडाउन से पसरा सन्नाटा वन्य जीवन के लिए वरदान बन गया। पर्यटक स्थल हो या अन्य शहर, कस्बे, गांव में भरी दोपहर में तेंदुए के शावक सड़कों पर आराम से चलते दिखाई दिए। चंडीगढ़ के सेक्टर-5 में लाकॅडाउन के दौरान तेंदुए दिखाई दिए। वहीं कोझीकोड की सड़क पर मालाबार सिवेट नाम की बिग कैट दिखाई दी। मध्य प्रदेश के बैतूल में हाईवे पर हिरणों के झुण्ड बेखौफ आराम फरमाते दिखे, तो वहीं मुंबई महानगर के मरीन ड्राइव पर भी समुद्र में डॉल्फिन मौज-मस्ती करती दिखाई दी। ओड़ीसा के समुद्र तटों पर ओलिवरिडले कछुए चहल-कदमी करते नमूदार हुए।

पर्यावरणीय तौर पर लॉकडाउन के कारण हवा भी इतनी शुद्ध हुई कि शहरों से पहाड़ों की चोटियाँ साफ दिखाई देने लगीं। भारत में पहले सहारनपुर से हिमालय की चोटियाँ दिख रही थीं, सिलीगुड़ी से दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी कंचनजंगा दिखाई पड़ी । रुड़की से हिमालय की गंगोत्री रेंज के पहाड़ दिखाई दिए।

जिन शहरों की AQI खतरे के निशान से ऊपर होते थे, वहां आसमान गहरा नीला दिखाई देने लगा। लॉकडाउन में वाहन नहीं चल रहे थे। बिजली उत्पादन और औद्योगिक इकाइयों जैसे अन्य क्षेत्रों में बड़ी गिरावट आई। इससे वातावरण में डस्ट पार्टिकल न के बराबर थे और कार्बन मोनोऑक्साइड का उत्सर्जन भी सामान्य से बहुत नीचे आ गया था। AQI की बात करें तो झारखंड का AQI लॉकडाउन के समय 50-40 के बीच आ गया था जो पिछले साल 150-250 तक रहता था। स्वच्छ हवा मानव व अन्य जीवों के लिए लाभदायक है।

लॉकडाउन में ध्वनि प्रदूषण भी बहुत कम हो गया। सड़कों पर कोई वाहन न चलने पर शोर-शराबा न था। कोविड-19 महामारी में लोग अपने घरों में सिमटे हुए थे। लॉकडाउन में ध्वनि प्रदूषण इतना कम था कि रात 2:00 बजे भी चिड़ियों की चहचहाने की आवाज आती थी। हर साल प्रदूषित रहने वाली नदियाँ प्रदूषण रहित हो गईं। पेड़-पौधे भी खुलकर साँस लेने लगे क्योंकि उनके पत्तों पर धूल कण नहीं थे। इन दिनों हमें पता चला कि प्रकृति साफ रहे तो जीवन कितना सुरक्षित हो सकता है।

शिवानी
बी.ए. हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

नई शिक्षा नीति

गाँधी जी ने कहा था –

If we want to reach real peace in this world, We should start educating children".

नेल्सन मंडेला ने कहा था कि "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप दुनिया बदलने के लिए प्रयोग कर सकते हैं|" उपर्युक्त पंक्तियाँ शिक्षा के महत्व को बहुत अच्छे तरीके से समझाती हैं। शिक्षा का उद्देश्य समाज के हर वर्ग में संज्ञानात्मक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाना है। हम कह सकते हैं कि शिक्षा मनुष्य का मानसिक विकास करती है। अगर यही शिक्षा अपने देश की संस्कृति, ज्ञान, विद्या और मातृभाषा से जुड़ जाए तो उससे शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है।

"सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और लोगों को कुछ करने के लिए प्रेरित करती है।" नई शिक्षा नीति २०२० महात्मा गांधी के इसी सपने को साकार करती है। भारत की शिक्षा प्रणाली में 34 वर्षों के बाद नई शिक्षा नीति 29 जुलाई २०२० को लागू की गई है। केन्द्र सरकार ने "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' को मंजूरी दी है। यह स्वतंत्र भारत की तीसरी नीति है। इससे पहले 1968 और 1986 में शिक्षा नीतियाँ लागू की गई थीं।

1992 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने भी इसमें कई बदलाव किये थे। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा, स्थानीय भाषा पर ज़ोर दिया जाएगा और विषयों का चयन विद्यार्थियों पर छोड़ दिया जाएगा। पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा मातृभाषा में ही होगी। नई शिक्षा नीति की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें "मानव संसाधन विकास मंत्रालय" का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २020 में सबसे पहला उद्देश्य स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सबकी एक समान पहुँच सुनिश्चित करना और स्कूल छोड़ चुके बच्चों को फिर से मुख्यधारा में शामिल करने के लिए नवीन शिक्षा केन्द्रों की स्थापना भी करना है। कक्षा 3-5 और 8 के लिए NIOS और राज्य ओपन स्कूलों के माध्यम से ओपन लर्निंग कक्षा, 10 और 12 के लिए समकक्ष शिक्षा कार्यक्रम एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी शामिल करना है।

"नई शिक्षा नीति करेगी नवयुग का निर्माण,
व्यावसायिक शिक्षा पर ज़ोर देगी,होगा भारत महान"

मुस्कान
द्वितीय वर्ष
हिंदी विशेष

कबीरी तेवर के कवि गिरिधर कविराय की राजनीतिक चेतना

कहा जाता है कि राजदरबार में रहने वाले व्यक्ति की स्थिति वैसी ही होती है जैसे दाँतों के बीच में रहने वाली जीभ की । अर्थात ज़रा सी गलती बड़े नुकसान में बदल सकती है। ऐसे में दरबारी रीतिकालीन कवियों के काव्य में राजनीति जैसे बेहद संवेदनशील विषय की अभिव्यक्ति की खोज करना व्यर्थ है। परन्तु कहीं-कहीं इसके स्पष्ट दर्शन होते हैं| यथा -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सो बंध्यो, आगे कौन हवाल।"

इन जैसी रचनाओं में बहती राजनीति की सूक्ष्म अंतर्धारा को देखा जा सकता है। दरबार के मन और धन के आकर्षण ने अधिकांश रीतिकवियों को एक ऐसे पाश में बाँधा हुआ था जिसमें आम-जन की ओर से आँख मूँदे रहने में ही उन्हें भलाई दिखती थी। जब कभी बोधा जैसे कवि ने अपने आश्रयदाता राजा से विरोध किया, उसे अपने प्राणों से ही हाथ धोना पड़ा। राजदरबार के वैभव–विलास में डूबे, सुरा- सुंदरियों की कल्पना से सराबोर दरबारी कवियों को आम जनता का हाहाकार सुनाई पड़ता होगा, इसमें भी संदेह है। जो दरबारी नहीं थे और रीति से मुक्त थे उनकी कविता का भी अधिकांश प्रेयसी के समक्ष आत्म-निवेदन और उसकी उपेक्षा से उत्पन्न मार्मिक प्रलाप में ही खर्च हो जाता था। अपनी प्रेम-पीड़ा में ऊभ-चूभ हो रहे इन कवियों के लिए में दुनिया का सबसे कठिन काम जीवन के लिए संघर्ष नहीं था। उनके अनुसार प्रेम के मार्ग पर चलने से अधिक खतरनाक और कुछ नहीं था-

"यह प्रेम को पंथ कराल है जू तरवार की धार पै धावनो है।"

यों तो रीतिकाल में वीर भाव के भूषण, लाल, सूदन जैसे कवि अवश्य हैं, पर इनका दायरा भी आश्रयदाता के आस-पास ही घूमता रहा। भक्ति-नीति के कवियों की दृष्टि 'क्या है' से अधिक 'क्या होना चाहिए' पर ही टिकी रही। काव्य-कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के बावजूद इनमें तत्कालीन समाज कहीं-कहीं संकेत रूप में ही उपस्थित है। ऐसे में बाल-पोथियों के कवि कहलाने के बावजूद गिरिधर का काव्य महत्वपूर्ण हो जाता है । तत्कालीन राजाओं के बदलते नैतिक मानदंडों से लेकर आम जनता के दुःखी जीवन तक का अत्यंत जीवंत चित्रण गिरिधर में जगह-जगह मिल जाता है।

गिरिधर कविराय के समय के आसपास एक ओर विदेशी सत्ता का दबाव बढ़ रहा था तो दूसरी ओर शासन व्यवस्था अयोग्य और स्वार्थी शासकों को हस्तगत हो गई थी। उनके आपसी

द्वेषपूर्ण युद्धों ने प्रजा को त्रस्त किया हुआ था। सन् 1761 में बक्सर की लड़ाई में हार जाने के फलस्वरूप मुगल बादशाह शाह आलम ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को दे दी थी और इस प्रकार भारतीय किलों पर निरंतर विदेशी आधिपत्य बढ़ता जा रहा था।
राजा अपने सबसे प्रमुख कर्तव्य प्रजा रक्षण में असमर्थ होते जा रहे थे। राजनीति विकृत होती जा रही थी, राजा में ईश्वर का अंश मानकर कर्तव्य के प्रति जागरूकता, धर्मपरायणता, कला-प्रियता आदि जिन गुणों की अपेक्षा की गई थी, उन गुणों का ह्रास होता जा रहा था। कपटी, क्रूर व्यक्तियों का बोलबाला था। राज्य का अधिकारी अपनी योग्यता अथवा प्रजा की मान्यता से न बनाया जाकर स्वयं अपनी क्रूरता से बनता था। पिता-पुत्र भाई-भाई, एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। प्राचीन उत्तराधिकार का नियम समाप्तप्राय हो गया था। इसके अतिरिक्त अंग्रेज अपने विजित प्रदेशों में केवल अपने पिट्ठुओं को अधिकारी बनाकर भेजते थे, चाहे वह शासन के योग्य हो अथवा अयोग्य ही क्यों न हो। ऐसा व्यक्ति नाममात्र का अधिकारी होता था, असली सत्ता तो अंग्रेजों के पास रहती थी। इसलिए तत्कालीन अधिकांश समाज दुहरी और अयोग्य शासन-व्यवस्था में पिस रहा था।
विलासी राजाओं के चाटुकार दरबारी कवियों की सुरा से छकी दृष्टि सुंदरी तक ही पहुँच कर रह जाती थी। नारी मात्र ऐसी कामिनी बन कर रह गई थी जिसके प्रेम और सौंदर्य वर्णन के द्वारा कंचन तक पहुँचना कवियों के लिए अत्यंत सुविधापूर्ण हो गया था। गिरिधर कविराय ने अन्योक्तियों के माध्यम से इन शासकों का उपहास किया है - कौओं की भाँति इन कलुष हृदय, चालाक और अयोग्य शासकों को अपनी अयोग्यता पर लज्जा नहीं आती, अपितु वे हंस के सदृश उन खानदानी व्यक्तियों का जिनके संस्कार ही शासकों के रहे हो, नीति-निपुण हो उपहास करते हुए अपनी श्रेष्ठता का स्वयं ही बखान करते हैं। अपने गुणों पर स्वयं मुग्ध होकर आत्मप्रशंसा में लगे रहते हैं। भारतीय परंपरा में राजा बनने से पूर्व राजाओं को क्षत्रियोचित शिक्षा-दीक्षा दी जाती थी, परंतु अब के अयोग्य शासक मात्र कचहरी में बैठ जाते हैं, वेद-मर्यादा से रहित ये संस्कारहीन व्यक्ति शासन क्या चलाएँगे-

"कौआ कहे मराल से, कहा जाति, कह गोत
तुम ऐसे बदरूपिया, कहूँ न जग में होत
कहूँ न जग में होत, महामैले मलखाना
बैठ कचहरी जाय, वेद मर्याद न जाना
कह गिरिधर कविराय सुना हो पंछी हौवा
धन्य मुल्क यह देस, जहाँ के राजा कौआ।"

गिरिधर कविराय तत्कालीन राजनीतिक स्थिति से असंतुष्ट थे। यही कारण है कि उन्होंने अधिकांशतः शासक वर्ग का साम्य वन्य जीव-जंतुओं से किया है। सुयोग्य शासकों के सत्ताहीन हो जाने के कारण अयोग्य और निर्बल शासक विदेशी शासन से मित्रता करके स्वयं को निरंकुश, भय रहित तथा सुरक्षित मानने लगे थे।

गिरिधर कविराय ने वन्य पशुओं के माध्यम से इन पर व्यंग्य किया है। वे लिखते हैं कि ये कायर राजा उसी प्रकार उन्मुक्त हो गए हैं, जिस प्रकार वन में बाघ के मर जाने के बाद अन्य पशु स्वच्छंद हो जाते हैं। उनका भय समाप्त हो जाता है और तब वे सब अपने को बलशाली मानते हुए शेखी बघारने लगते हैं-

"बाघ मरे बनखंड में, निरभै हो गयौ लोग
सुवर, स्यार, सबरे, ससे, सबरे भए निरोग
सबरे भए निरोग, हती सोई भै भाजी
हीन रोझ पुडकाइ गयो, गैयर गलगाजी
कह गिरिधर कविराइ दबे रहते बिनु बाँधे
जोर परे जंगली, गालु मारै बिनु बाघै॥"

कवि का आक्रोश स्थान-स्थान पर व्यक्त हुआ है । सत्ताधारी बाजों के राज में सज्जन हंसों और बगुलों की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इसका प्रभावशाली चित्रण गिरिधर की निम्न पंक्तियों में मिलता है -

"पग छूटे, कुलहा खुले, भयौ बाज कौ राज
सटपटात बगुला फिरै, भूले सबै इलाज
भूले सबै इलाज, राज बाजन कौ आयौ
कुलहा लै, पग छोड़, घनी बहुरै छुटकायौ
कह गिरिधर कविराइ, सैन करते सिर टूटै
अब नहिं पैहो जान, जबे बाजन पै छूटै।"

लोक संपृक्ति व्यक्ति को स्व के छोटे से दायरे से निकाल कर समाज के वृहत्तर परिवेश में खड़ा कर देती है। परंतु अधिकांशतः देखा गया है कि यह विस्तार उसका सुख-चैन ले लेता है। वह 'सुखिया संसार' की भाँति 'खावै और सोवै' की विलासिता नहीं कर पाता बल्कि दुखिया दास कबीर' की भाँति जागने और रोने के लिए अभिशप्त हो जाता है। मध्यकालीन भारत में योग्य शासक सिंहासन च्युत थे। आपसी लड़ाइयों ने उन्हें कमजोर बना दिया था, अतः बाह्य आक्रमणों का सामना अधिक समय तक नहीं कर पाते थे। उनके राज्य को विदेशी शासक अपनी सत्ता में सम्मिलित करके वहाँ का शासक किसी ऐसे व्यक्ति को बनाते थे, जो उनके हाथों की कठपुतली बना रहे। इसीलिए गिरिधर कविराय ने कहा है कि जहाँ योग्य और बलवान व्यक्ति का स्थान अयोग्य और निर्बल ले लें, जहाँ अपेक्षाकृत योग्य व्यक्तियों के रहते हुए भी अयोग्य व्यक्तियों को मान-सम्मान दिया जाए, ऐसे स्थान से जितनी जल्दी संभव हो प्रस्थान कर जाना चाहिए, ऐसे स्थान पर निवास करने से अनिष्ट अवश्यंभावी होता है -

"साईं घोड़े आछतहि,गदहन आयो राज

कौवा लीजै हाथ में, दूरि कीजिए बाज
दूरि कीजिए बाज, राज पुनि ऐसो आयो
सिंह कीजिए कैद, स्यार गजराज चढ़ायो
कह गिरिधर कविराय, जहाण यह बूझि बधाई
तहाँ न कीजै भोर, साँझ उठि चलिए साईं।"

ऐसी 'अंधेर नगरी' में जहाँ का शासक अयोग्य हो, अच्छे-बुरे का कोई भेद नहीं होता 'भाजी हो या खाजा' सभी एक दाम बिकते हैं। गिरिधर कहते हैं कि ऐसी नगरी जिसमें गज, गदहा, बगुला, कुही सभी एक ही भाव हों, वहाँ निवास नहीं करना चाहिए। जहाँ मूर्ख और विद्वान सभी समान होते हैं, उस स्थान का पतन शीघ्रातिशीघ्र हो जाता है-

"साई जिहि पुर जिन बसौ, जिहिपुर कही सुभाउ
गज, गदहा, बगुला, कुही, एकै मोल बिकाउ
एकै मोल बिकाउ,भई जरि-बरि हो राती
कुही कहत, गजराज, फटत काहे नहिं छाती
कह गिरिधर कविराय, जहाँ ये बूझि बड़ाई
जहाँ न कीजै भोर, प्रात उठि चलिए साई।"

ऐसे राज्य में सज्जनों का आदर नहीं होता। लंपट व्यक्ति अनेक आडंबर करके स्वयं को समाज की दृष्टि में आदरणीय बना लेते हैं और जो साधु और विद्वान हैं, उन्हें निराशा ही हाथ लगती है-

"हंसा हयाँ कीमत नहीं, तू आयो बे-काज
हयाँ के सुरजन कहत हैं, कौअन सौ रिषराज
कौंअन सौं रिषराज, बाज टीटही कहावै
खूसट सौं तुरमुती कहत, बौतौ सुखु पावै
कह गिरिधर कविराइ, राख सरवर हो मंसा
हयाँ को यह बैवहार, भूल तू आयो हंसा। "

रीतिकालीन उपर्युक्त पंक्तियाँ कितनी समकालीन हैं। भारतेंदु की 'अंधेर नगरी चौपट राजा' से लेकर दुष्यंत कुमार की 'हर शाखपे उल्लू बैठे हैं, अंजामे गुलिस्ता क्या होगा' तक की चिंता इन्हीं पंक्तियों का विस्तार सा नहीं लगतीं?
राजा के मस्तिष्क के समान होता है मंत्री। राजा को सही परामर्श देते हुए शासन को सुचारु रूप से चलाने में मंत्री का योगदान सर्वाधिक होता है। कौटिल्य ने मंत्री को राज्य-संचालन

की मुख्य धुरी मानते हुए उसके चुनाव में बहुत अधिक सावधानी रखने का परामर्श दिया है। साथ ही मंत्री के गुणों की सूची पेश करते हुए लिखा है- मंत्री, देशवासी उच्चकुल का तथा प्रभावशाली होना चाहिए और होना चाहिए कला – निपुण, दूरदर्शी, समझदार, अच्छी स्मृति वाला, सतत् जागरूक, अच्छा वक्ता, निर्भीक, मेधावी, उत्साह एवं प्रताप से परिपूर्ण, धैर्यवान (मन-कर्म से) पवित्र, विनयशील, (राजा के प्रति) अटूट श्रद्धावान, चरित्र, बल, स्वास्थ्य एवं तेजस्विता से परिपूर्ण, हठवादिता तथा चांचल्य से दूर। कौटिल्य के अनुसार अमात्य तीन प्रकार के होते हैं- उत्तम, मध्यम एवं निम्न श्रेणी वाले, जिनमें से प्रथम उपर्युक्त सभी गुणों से संपन्न होते हैं और दूसरे तथा तीसरे प्रकार में क्रम से उपर्युक्त गुणों के चौथाई तथा आधे का अभाव पाया जाता है। इसीलिए गिरिधर कविराय ने लिखा है कि-

“काँचो मंत्री छोड़ के, मंत्री कीजे ऐन
जो गुरदीए ही मरै, क्यों जहर दीजिए गैन
क्यों जहर दीजिए गैन, होय जिससे बदनामी
तहाँ न पहुँचे कामुक, जो पद लहै अकामी।“

गिरिधर हर भय और मुसीबत से आम जन को बचाने के लिए कटिबद्ध थे। अतः वे हर आगामी खतरे से आम आदमी को पहले से ही सावधान करते चलते थे। सर्वगुण संपन्न मंत्री भी मानव सुलभ कमजोरियों से मुक्त नहीं हो सकता और राजकीय अधिकार अनजाने में भी उसके अहंकार को बढ़ा सकते हैं। अतः गिरिधर मंत्री से व्यवहार करते हुए व्यक्ति को सावधान रहने के लिए ही कहते हैं-

“सांई वैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा वनिता, पँवरिया, यज्ञ करावनहार
यज्ञ करावनहार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए बनि आवै साई।“

रामधारी सिंह दिनकर जी की निम्नलिखित पंक्तियाँ तुलसी की ‘भय बिनुहोइ न प्रीति’ का समर्थन करती जान पड़ती हैं-

‘क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।‘

राजा कितना ही अच्छा हो और मंत्री कितना ही विद्वान, बिना ताकत के न उसका राज्य सुरक्षित होता है न ही वह स्वयं। इसीलिए कहा गया है कि राजा का कोई मित्र नहीं होता। कमजोर राजा पर पहला आक्रमणकारी उसका अपना परिवार अथवा मित्र भी हो सकता है। आजादी के तुरंत बाद भारत पर हुए चीनी हमले ने इस तथ्य को और भी पुख्ता कर दिया है इसलिए अच्छी और मजबूत सेना राज्य की सुख शांति की गारंटी होती है।

कामंदक का कथन है कि परिपूर्ण कोष के रहने पर राजा अपनी क्षीण सेना बढ़ाता है, अपनी प्रजा की रक्षा करता है और उस पर उसके शत्रुगण भी आश्रित रहते हैं। बलशाली सेना के रहने पर मित्रों एवं शत्रुओं की संपत्ति तथा स्वयं राजा के राज्य की सीमाएँ बढ़ती हैं, उद्देश्यों की शीघ्र एवं मनचाही पूर्ति होती है, प्राप्त की हुई वस्तुओं की सुरक्षा होती है, शत्रु की सेनाओं का नाश होता है तथा अपनी सेनाओं की टुकड़ियाँ एकत्र की जा सकती हैं।

गिरिधर कविराय के समय में देशी राजाओं में अधिकांश की सेनाएँ कमजोर होती जा रही थीं, वे अपने राज्य की सुरक्षा तक नहीं कर पा रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेजों की सैन्य शक्ति निरंतर बढ़ती ही जा रही थी। विलासी शासकों की सेना भी अकर्मण्य और विलासिनी हो गई थी। वे मात्र अत्याचार करते थे। अतः ‘लाल पगड़ी’ का सामान्य जनता पर बहुत अधिक आतंक था, वह उन्हें अपना रक्षक नहीं, अपितु भक्षक मानती थी। गिरिधर कविराय ने उन सिपाहियों की वास्तविकता को उजागर करते हुए इन ढोंगी बहादुरों पर करारा व्यंग्य किया है-

“पगड़ी सूही बाँधि कै, भयो सिपाही लोग
घास बेंचि के खात है, भयो गाँव में रोग
भयो गाँव में रोग, मूँछ नीवरी देखावहु
मन में बड़े हो छैल, राग पनघट पर गावहु
कह गिरिधर कविराय, मरी तुमते नहीं चूही
भये सिपाही आनि, बाँधि के पगड़ी सूही।“

यह चित्रण हमें अनायास ही अपने देश के पुलिसिया आतंक से त्रस्त समाज के रू-ब-रूखड़ा होकर इसकी समीक्षा करने को बाध्य कर देता है।

शूरवीर सिपाही राजा का बल होते हैं। सेना बड़ी है या छोटी, राजा की विजय इस पर उतनी निर्भर नहीं होती, जितना कि उसके सिपाहियों के साहस तथा बल पर। थोड़े से वीर सिपाहियों को लेकर बड़ी-बड़ी सेनाओं को पराजित किया जा सकता है। इसलिए गिरिधर कविराय कहते हैं कि शत्रु को जीतने के लिए उसकी सेना के कायरों को मारने की अपेक्षा वीरों को मारना अधिक श्रेयस्कर होता है। एक शूरवीर सिपाही दस कायर सिपाहियों के बराबर होता है। कायर व्यक्ति अपनी प्राण रक्षा के लिए युद्ध करता है, इसलिए यदि उसे बिना युद्ध किए

सुरक्षा मिल जाए तो वह युद्ध से विमुख हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी हँसी तो करवाता ही है, साथ ही अपने राजा का अपयश भी फैलाता है। वीर सिपाही रण के सम्मुख युद्ध करता है। वह डरकर भागता नहीं, अपितु युद्ध भूमि में मृत्यु का वरण कर लेना ही श्रेयस्कर समझता है। अतः शत्रु पक्ष के दस शूरवीर सिपाहियों को मारना पचास कायर सिपाहियों को मारने के बराबर है। यही युद्ध की नीति भी है-

"मारो सायर दस भले, कायर भल न पचास
सायर रण सम्मुख लरै, कायर प्राण की आस
कायर प्राण की आस, भागि रण ते वै आवैं
आपु हँसावहि लोग, नृपति को नाम धरावैं
कह गिरिधर कविराय, बात चारहु जुग जाहर
सायर भले हैं पाँच संग सौ भले न कायर।"

गिरिधर के समय में साधारण जनता दो पाटों के बीच फँसी हुई थी। एक ओर नाकारा राजा थे तो दूसरी ओर निरंकुश सैनिक| गिरिधर कविराय ने अंग्रेज सिपाही के निम्नलिखित वर्णन में सिपाहियों की निरंकुशताकी ओर अत्यंत मार्मिकता से संकेतित किया है-

"सैयाँ भए तिलंगवा, वौहर चली नहाय
देखि डरी कप्तान कहें, कौन जनारो आय
कौन जनारो आय, काह दहुँ पहिरे बाटे
बिन गुनाह तकसीर, पिया को ठाढे डाटे
कह गिरिधर कविराय, नयेजस बंदर भल्ला
तोसदान बंदूक, हाथ में पत्थरकल्ला।"

अंग्रेजों की बढ़ती हुई ताकत का मुकाबला करने के लिए मजबूत किलों की बहुत आवश्यकता थी। गिरिधर कविराय के समय अंग्रेजों की शक्ति निरंतर बढ़ती जा रही थी और वे एक के बाद दूसरे किलों पर आधिपत्य जमाते जा रहे थे। दूसरी ओर विलासी और अकर्मण्य गढ़पति अपनी सुरक्षा व्यवस्था को भी बनाने में असमर्थ होते जा रहे थे। असुरक्षित गढ़ में रहने वाली असुरक्षित प्रजा की मानसिकता को गिरिधर ने समझा और गढ़पतियों को अपने धर्म और कर्तव्य का स्मरण दिलाते हुए उन्हें अपने गढ़ की सुरक्षा के उपाय बताए-

"गढ़पतियन के धर्म है, करे दोउन को ध्यान
जिमीदोज रैनी करै, मन की राखौ जान
मन का राखौ जान, किले पर तोप चढ़ाओ

कोस-कोस को गिरद, काटिम मैदान कराओ
अस गढ़पति जो होइ, ताहि को जंग नसाई।"

तुलसीदास ने लिखा है कि राजा को मुख की भाँति होना चाहिए। भोजन बेशक मुख करता है पर वह पोषण सभी अंगों का समान रूप से करता है। प्रजा से संगृहीत कर एक प्रकार से राजा का भोजन है जिससे वह शरीर रूपी प्रजा का पालन करता है। राज्य के समस्त व्यापार कोष पर निर्भर करते हैं। कोष भरने का प्रमुख साधन है कर ग्रहण। प्राचीन काल में राजा स्मृतियों में निर्धारित कर के अतिरिक्त अन्य कोई कर नहीं लगा सकता था। कर की मात्रा वस्तुओं के मूल्य एवं समय पर निर्भर थी, क्योंकि आक्रमण, दुर्भिक्ष आदि विपत्तियाँ भी गहरा सकती थीं। राजा कर के रूप मे जो धन लेता था उसे प्रजा की भलाई के लिए ही व्यय भी करता था। इसलिए प्रजा की उपार्जित राशि में से वह एक निश्चित भाग का अधिकारी माना जाता था, परंतु इस धनराशि को एकत्रित करने में किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करना चाहिए।

मध्यकालीन भारत में अधिकांश शासक अयोग्य हो गए थे, वे यह धन अपनी विलासिता के लिए एकत्रित करते थे। दूसरी ओर दोहरे शासन से प्रजा पर करों का बोझ बढ़ गया था। प्रजा की विपदा सुनने वाला कोई नहीं था। शासकों को धन की आवश्यकता थी और इस धन को उपार्जित करने का साधन थी प्रजा। अतः प्रजा को करों की अदायगी में किसी प्रकार की छूट नहीं दी जाती थी । चाहे उसमें देने की सामर्थ्य हो या न हो कर देना पड़ता था। शासकीय खर्चों के साथ-साथ प्रजा पर करों का बोझ भी बढ़ता जा रहा था, परंतु राजाओं के पास प्रजा का दुख सुनने का समय नहीं था। वे तो मात्र 'दो-दो' ही चिल्लाते रहते थे

"भिक्ष बालक भारजा,पुनि भूपति यह चार
न जाने अस्ति नास्तिक कछु, देही देहि पुकार
देही देहि पुकार, निसि-वासर आठो यामू
जाग्रत सुपने माँहि,फुरे ना दूसर कामू
कह गिरिधर कविराय,जगत में कोउ तितीक्ष
जिनको तृष्णा नाहिं, सो ऐसो बिरलो भिक्षु। "

इस अव्यवस्था में सज्जन और ईमानदार व्यक्ति दिन-प्रतिदिन निर्धन तथा दुर्जन और बेईमान व्यक्ति धनवान होते जा रहे थे। किसी समाज में ठग अधिक धनवान हैं अथवा ईमानदार, इसके द्वारा भी समाज की राजनैतिक स्थिति को जाना जा सकता है। जहाँ सुशासन में सुपुरुष के पास सुख-सुविधाएँ अधिक होंगी, वहाँ कुशासन में दुर्जन के पास। इसीलिए गिरिधर कविराय ने कहा है-

'जिसको जैसा राव रंक, ठग तैसा धनी।'

कितनी सफाई से कवि ने अपने समय की राज्य व्यवस्था पर उंगली उठाई है। आज के भारतीय समाज में अचानक जो नव-धनाढ्य वर्ग की बाढ़ आई है, यदि इन पंक्तियों के संदर्भ में देखें तो आज के भारत की और भी शर्मनाक और वीभत्स तस्वीर की ओर यह पंक्तियाँ इंगित करती हैं।

समाज में पदाधिकारी तो आम आदमी के भय का कारण होते हैं, साथ ही उनके संपर्क में आने वाले भी सामान्य व्यक्ति के लिए भयप्रद बन जाते हैं। गिरिधर कविराय की यही मान्यता है कि राजा आदि के संपर्क में आने वालों की भी निंदा नहीं करनी चाहिए। विशेषतः चारण-भाटों की। प्राचीन काल में राजाओं के दरबार में चारण तथा भाट रहा करते थे जो राजाओं की प्रशस्ति अथवा चरित-गान किया करते थे। इन चारण-भाटों की परंपरा बहुत प्राचीन थी। ये अपने आश्रयदाता राजाओं का मनोबल तो बढ़ाते ही थे, साथ में उनके जीवन-चरित को भी ऊपर कर देते थे, जिस प्रकार पृथ्वीराज की कथा चंदबरदाई के माध्यम से आज तक जीवित है। इसलिए राजदरबारों में इन चारण-भाटों का विशेष आदर था। गिरिधर कविराय ने लोगों को सावधान करते हुए लिखा है कि उन्हें भाटों में छिद्रांवेषण नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये लोग राजाओं के मित्र होते हैं, इनसे राज्य का मान बढ़ता है, अतः इनकी हँसी उड़ाने से कोई लाभ नहीं होगा। भाटों के दोष निकालने वाले क्रूर व्यक्ति को भगवान भी दंड देते हैं। क्योंकि कवि को 'सरस्वती पुत्र' माना जाता है-

"साई भाँट न दूषिए, जस करता संसार
दुर्ग सुता साहिब बड़े, राजन ही के यार
राजन ही के यार, राज की दई बड़ाई
प्रथीराज की कथा, चंद कवि तैं चलि आई
कह गिरिधर कविराय, भाँट माँडनै बड़ाई
भाटहिं दूषे कूर, जीभ जरिजाह गुसाई।"

इससे ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में भाटों को राजदरबारों के साथ-साथ सामान्य जनता में भी बहुत आदरपूर्ण स्थान प्राप्त था। स्वयं गिरिधर कविराय जैसे वैरागी और समाज सुधारक व्यक्ति के हृदय में भी इनके प्रति श्रद्धा भाव था। उपर्युक्त कथन से यह भी ज्ञात होता है कि उस समय भी पृथ्वीराज की कथा लोकप्रिय थी, और चंदबरदाई ने भाटों की प्रशस्ति को और बढ़ाया था। अतः उनका भी आदरपूर्ण स्मरण होता था। 'राजन ही के यार' से उस परंपरा

का भी आभास मिलता है, जहाँ ये चारण-भाट राजा के मित्र हुआ करते थे, वे महल में और युद्ध क्षेत्र में दोनों स्थानों पर राजा का एक समान रूप से साथ देते थे।

उपर्युक्त पंक्तियों से एक और बात गिरिधर के विषय में संकेतित होती है कि गिरिधर के मन में दरबारी कवियों को लेकर कोई कुंठा नहीं थी बल्कि उनके प्रति आदर का ही भाव था। इसका तात्पर्य यह है कि दरबारदारी न करना और उससे दूर रहना स्वयं कवि का चुनाव था।अच्छा और सच्चा मित्र ईश्वर का वरदान है। निरंतर शत्रुओं से घिरे रहने की आशंका से ग्रस्त राजा के लिए तो सच्चा मित्र एक तरह का आत्मिक बल होता है। मनु के मत से भूमि, सोना (हिरण्य) एवं मित्र' राजा की नीति या प्रयत्नों के तीन फल हैं। दूसरी ओर शुक्रनीतिसार के अनुसार शक्तिशाली, साहसी और विनम्र के सामने अन्य लोग ऊपर से मित्रवत व्यवहार करते हैं किंतु भीतर-भीतर शत्रुता रखते हैं और अवसर की ताक में लगे रहते हैं कि कब आक्रमण कर दें। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। क्या वे स्वयं भूमि की विजय लिप्सा नहीं रखते? अतः राजा का कोई मित्र नहीं और न वह किसी का मित्र है।

यह निर्विवाद सत्य है कि राजा को धोखा खाने के अवसर बहुत रहते हैं, अतः उसमें भले-बुरे और मित्र - शत्रु को पहचानने की सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए। राजा को शत्रु मित्र का निर्णय बहुत सोच-समझकर लेना चाहिए। कई बार सच्चे मित्र के वचन कड़वे लगते हैं, क्योंकि वह प्रेम का दिखावा नहीं करता है। कहा भी है 'हितंमनोहारी च दुर्लभंवचः' इसलिए मित्र के कड़वे लगने वाले वचनों पर अकारण और अकस्मात क्रोध नहीं करना चाहिए, क्योंकि कई बार अपने हितैषी को अपमान करके निकाल देने से पहले विनाश का मार्ग व्यक्ति स्वयं प्रशस्त करता हैं। जैसे रावण ने विभीषण के हितकारी वचनों पर क्रोध करके अपने विनाश का मार्ग प्रशस्त किया था-

"लंकापति, तुमसे गई, ज्यों वसंत द्रुम-पात
सुमति विभीषण ज्यों दई, तब तुम मारी लात
तब तुम मारी लात, भागि तब हींतेआयो
मिल्यो राम-दल जाइ काज धौं केतिकसार्यो
कह गिरिधर कविराय, राम जिय बाढ़ी संका
तपै विभीषण राज, अरेपति छूटी लंका।"

अतः राजा को मित्र और शत्रु के लिए भिन्न-भिन्न परंतु उचित नीतियाँ अपनानी चाहिए। उपर्युक्त नीतियों का आश्रय लेकर ही वह सफलतापूर्वक अपने राज्य का संचालन कर सकता है। गिरिधर, राजा के लिए नीति उतनी ही आवश्यक मानते हैं, जितना फकीर को भिक्षाटन के लिए नगर, भैंस को पानी के लिए गढ़ा, बाग को नहर, माधुर्य से प्रेम करने वाले व्यक्ति के

लिए मधुरता, आँख फोड़ने के लिए लाठी, उसी प्रकार महीपाल के लिए नीति अत्यावश्यक है। एक प्रकार से उचित नीति ही वह माध्यम है जिससे वह सफलतापूर्वक राज्य संचालन कर सकता है-

"शहर फकर को चाहिए, तथा भैंस को उलिर
नहर बाग को चाहिए, तथा कबी को बहर
तथा कबी को बहर, मधुरता मधुर-खोर को
महीपाल को नीति, लष्टिका चश्म-फोर को
कह गिरिधर कविराय, संत जन आठो पहर
आत्म चिंतन करें, रहें वन में वा शहर।"

ध्यातव्य है कि गिरिधर ने सीधे-सीधे राजनीति विषयक कथन अपेक्षाकृत कम कहे है। इसका कारण एक तो यह था कि गिरिधर का पहला और मुख्य सरोकार आम आदमी से था। आम आदमी के लिए नीति-कथन करते हुए जहाँ राजा की बात आई है वहाँ गिरिधर ने प्रसंगवश उसका उदाहरण के लिए इस्तेमाल किया है। दूसरा, तत्कालीन परिस्थितियों में राजा को सीधे उपदेश देना मूर्खता ही होता।

गिरिधर कविराय ने एक ओर शासक वर्ग का चित्रण किया है, उन्हें शासन की नीति समझाई है, तो दूसरी ओर वे प्रजा को राजा के समक्ष उपस्थित होने की नीति सिखाते हैं क्योंकि यह तो माना जाता है कि राजा से बात करना तलवार की धार पर चलने के समान है। कब, किस समय वह क्या आज्ञा दे दे, इसका कोई पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। अतः राजा के दरबार में उपस्थित होना भी एक कला है। राजा के दरबार में अवसर देखकर ही जाना चाहिए। वहाँ सबके बैठने का स्थान नियत होता है, अतः व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस स्थान पर वह बैठा है, वह स्थान उसके बैठने योग्य है अथवा नहीं। ऐसे स्थान पर न बैठ जाए जहाँ से उसे उठा दिए जाने का भय हो। राजा के दरबार में बिना संदर्भ या आवश्यकता के कुछ बोलना नहीं चाहिए। पूछने पर ही कुछ कहना चाहिए तथा किसी बात पर अट्टहास नहीं करना चाहिए। समय देखकर ही काम करना चाहिए, अत्यधिक आतुरता दिखाने से राजा के रुष्ट होने की आशंका रहती है। इससे प्रतीत होता है कि गिरिधर कविराय का दरबारों में भी आना-जाना था, तथा दरबारी नियमों से वे पूर्णतः परिचित थे। उपरोक्त पद से दरबारी वातावरण का एक चित्र सा आँखों के समक्ष आ जाता है।

गिरिधर कविराय के राजनैतिक चित्रणों से उनके युग की राजनैतिक स्थिति झलकती हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, गिरिधर का मुख्य सरोकार आम आदमी से था, राजनीति प्रसंगवश आ गई है, परंतु उनके काव्य में अनजाने झलकती हुई इस राजनीति के द्वारा भी हम

गिरिधर की राजनैतिक समझ, उनकी बेबाकी और तत्कालीन परिस्थितियों में उनकी निडर अभिव्यक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। वे अपने समय के तो मार्गदर्शक कवि थे ही, उनकी कविता आज के युग में भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। उस समय की भोली और अनपढ़ जनता को समझाने और जागरूक करने के लिए इससे अधिक प्रभावशाली शैली अपनाना बहुत कठिन था। यही कारण है कि बुद्धिजीवी वर्ग की घोर उपेक्षा भी गिरिधर की जन-प्रियता को कम नहीं कर सकी। समग्र रूप में हम कह सकते हैं कि गिरिधर कविराय का काव्य तत्कालीन विश्रृंखल होती हुई राजनैतिक स्थिति का दर्पण है और उनके द्वारा उपस्थित किए गए आदर्श आज भी अपना महत्व अक्षुण्ण रखे हुए हैं-

"साई घोड़े आछतहि गदहन आयो राज" जैसी पंक्तियों को पढ़कर अनायास कबीर याद आ जाते हैं। कबीर की बराबरी गिरिधर कतई नहीं कर सकते परंतु अपनी बात को बिना लाग-लपेट के खरे रूप में व्यक्त करने की बात गिरिधर में भी देखी जा सकती है। अठारहवीं शताब्दी के भारत की आर्थिक, राजनीतिक स्थिति दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। जमींदार, राजा और अंग्रेजी राज्य के शोषण और अत्याचारों के बीच जनता तिहरी मार झेल रही थी। उस समय भी अंग्रेज कप्तान को 'जनारो' कह देना कोई आसान बात नहीं रही होगी। अतः गिरिधर में कबीरी तेवर की झलक जरूर दिख जाती है।

प्रो. गीता शर्मा

सोरेन कीर्केगार्द

विचार और आस्था के जगत में मानव अस्तित्व के प्रश्न को लेकर चिंतनशील सोरेन कीर्केगार्द को अस्तित्वाद का जनक कहा जाता है। कीर्केगार्द का जन्म 3 मई, सन् 1813 को कोपनहेगन (डेनमार्क) में हुआ। वे अपने माता पिता की सात सन्तानों में अन्तिम थे। पिता माइकिल कीर्केगार्द एक सम्पन्न व्यापारी थे। घर में सुख-सुविधा के बावजूद एक उदासी घिरी रहती थी। इसका कारण पिता का अपराधबोध था। बचपन में भेडें चराते समय दुखों से तंग आकर ईश्वर की भर्त्सना और पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात विवाह पूर्व सोरेन की माँ ऐनलुड़ का गर्भधारण, इस पाप बोध से वे कभी मुक्त नहीं हो पाए। असमय दूसरी पत्नी तथा पाँच सन्तानों की मृत्यु को भी वे ईश्वरीय प्रकोप ही मानते थे। अपने बयासी वर्ष के जीवनकाल में उनके चेहरे पर कभी मुस्कान नहीं आई। इस अपराधबोध जन्य अवसाद के बीच कीर्केगार्द ने अपना बचपन बिताया और धीरे-धीरे इस पीड़ा को अपने व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग समझ लिया।

कीर्केगार्द की आरम्भिक शिक्षा कोपनहेगन के प्रतिष्ठित स्कूल 'ओस्टर बोरगिरडायडस्कोलन' में हुई। उच्चशिक्षा के लिए वे कोपनहेगन विश्वविद्यालय गए। यहाँ अध्ययन के लिए इन्होंने अध्यात्म और दर्शन शास्त्र को चुना। सन् 1840 में इन्होंने धर्मशास्त्र की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1841में इन्होंने अपना शोध प्रबंध 'ऑन दी कन्सेप्ट ऑफ आइरनी विद कन्टीन्यूअल रेफरेन्स टू सोक्रेटीस' डेनिश भाषा में प्रस्तुत किया और मास्टर आरट्रिम की उपाधि प्राप्त की। सन् 1838 में पिता की मृत्यु के पश्चात अपनी शिक्षा, रहन-सहन व अपनी बहुत सी पुस्तकों के प्रकाशन का व्यय विरासत में मिली सम्पत्ति से कर सके।

विरासत में मिली अमुखर उदासी और वैचारिक उत्तेजना को प्रखरता प्रदान करने में कीर्केगार्द के शिक्षकों एफ. सी. सिर्वोन, पोल मार्टिन मिलर और मारटेसन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनमें भी जहाँ मोलर ने इनकी साहित्यिक प्रतिभा को उर्जा प्रदान की, वहीं मोरटेसन की वैचारिकी से मतभेद ने इनकी मूल्य चेतना को सुदृढ़ किया।

जीवन में विडम्बना, विसंगति, संत्रास, भय आदि को परिभाषित करने वाले कीर्केगार्द का अपना जीवन भी एकाकी रहने के लिए अभिशप्त था। इसलिए कभी वे स्वयं आत्मपीड़न के मायाजाल में फंसे और कभी बाहरी समाज की प्रवंचनाओं के विरोध ने उन्हें दण्डित किया।

सन् 1837 में रेगिना से सोरेन की मुलाकात उनके जीवन का सबसे प्रकाशपूर्ण और सबसे अधिक अंधकार भरा पक्ष रहा। सन् 1840 में रेगिना से सगाई और फिर एक वर्ष बाद स्वयं ही इस संबंध को तोड़ने का फैसला मानो इनकी आत्मघाती उदासी की विजय थी। इस घटना के बाद ये अपनी योजना के अनुरूप चर्च की सेवा का विचार करने लगे, लेकिन स्थापित चर्च में सन्देह होने के कारण ऐसा न कर सके। सन् 1846 में 'कोरसेयर' पत्रिका से जुड़े विवाद ने भी कीर्केगार्द के जीवन को यातना के भंवर जाल में डाल दिया। कोरसेयर के संपादक मीर

गोल्ड स्मित सौरेन के प्रशंसक थे। सौरेन 'कोरसियर' को पीली पत्रकारिता का नमूना मानते थे इसलिए उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं था कि उनकी प्रशंसा कोरसेयर में छपे। पी.एल. मोलर, जो कोरसेयर कार्यालय में कार्य करते थे, ने वार्षिकी 'गेया' में सौरेन के साहित्य पर एक निंदात्मक निबंध लिखा। सौरेन ने छद्मनाम से 'फादरलैण्ड' पत्रिका में चुनौती दी कि उनके बारे मेंजो कुछ भी लिखा जाए वह कोरसेयर में कहा जाए। उनकी आशा के विपरीत गोल्ड स्मित ने अपनी टिप्पणियों, कार्टूनों आदि से सौरेन पर प्रहारों का अनवरत सिलसिला शुरू कर दिया। इस विवाद के चलते वे पूरे शहर में उपहास का पात्र बन गए।

इसी तरह ईसाइयत के प्रति अटूट आस्था और वर्तमान में चर्च की राजनीति के प्रति विद्रोह भावना कीर्केगार्द को टकराहट के लिए मजबूर करती रही। उन्होंने पादरी माइन्स्टर, जिनके उपदेशों का जनता पर व्यापक प्रभाव था, को चर्च के विरोध का प्रतीक बनाया। सन् 1854 में बिशप माइन्स्टर की मृत्यु पर 'सच्ची ईसाइयत शीर्षक से कई लेख लिखे, जिन्होने ईसाई जगत को हिलाकर रख दिया। 'फादरलैंड' पत्रिका में भी वे लगातार डेनमार्क चर्च पर आक्रमण करते रहे। इसके अतिरिक्त 'दी मोमेन्ट्स' नामक पर्चे छपवाकर वे चर्च की राजनीति, उसके कठमुल्लापन, तथा स्वार्थलिप्सा का पर्दाफश करते रहे। उनके लेखन कार्य ने चर्च समर्थित 'पंच' आदि डेनिश समाचार पत्रों को उनका शत्रु बना दिया। प्रत्याक्रमणों के तनाव के कारण उनका स्वास्थ्य बिगडता गया। 2 अक्टूबर1855 को वह सड़क पर चलते हुए बेहोश होकर गिर पड़े और 11 नवम्बर 1855 को उनकी मृत्यु हो गयी।

इस तरह कीर्केगार्द ने आजीवन अपनी प्रतिभा का प्रयोग ईसाइयत के पुनरुत्थान में लगाया। अपने समय की वैज्ञानिक स्थितियों को टालकर उन्होंने समूह में स्थानांतरित व सामान्यीकृत होते जा रहे जीवन के विरुद्ध आतंरिक स्वतंत्रता की खोज पर बल दिया ताकि अस्तित्व की सत्ता स्थापित हो सके।

सन् 1847 से 1855 तक की उनकी रचनाएँ 'सैकिन्ड ऑथरशिप' में शामिल हैं। सौरेन ने अपने समय में प्रचलित छद्मनामों से लिखने की परम्परा को अपनाया और एक विषय के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। सन् 1843-55 तक विभिन्न नामों से लिखी उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं-

विक्टर ऐरिमीटा के नाम से सम्पादित 'आइदर/आर (सन् 1843), जोहैन्स-डी-सिलेनटियों के नाम से फीयर एण्ड ट्रेमबलिंग (सन् 1843) कॉन्सटेनटिन कॉन्सटेनटियल नाम से रचित 'रेपिटीशन' (सन् 1843) जोहैन्स क्लामेकस नाम से रचित 'फिलासॉफिकल फैरग्मेन्टस (सन् 1844). 'विजीलियस हॉफनेनसिस' नाम से 'दी कन्सेप्ट ऑफ एन्गजाइटी (सन् 1844) निकोलस नोटबीन के रूप में रचित 'प्रीफेसिस' (सन् 1844). 'स्टेजिस आन आइफस वे (सन्1845), हिलेरियस बुक बाइंडर द्वारा प्रकाशित, इनटर एट इन्टर के नाम से रचित 'दी क्राइसिस इन दी लाइफ ऑफ एनऐक्ट्रस' (सन् 1848), एचएच के नाम से 'टू ऐथिका' (सन् 1849) एन्टी क्लाइमेक्स नाम से रचित दी सिकनैस अनटू डैथ (सन् 1849) इसी नाम से (सन् 1850) में प्रकाशित ट्रेनिंग इन क्रिशचयनिटी छद्म नामों से रचनाओं के प्रकाशन के साथ

कीर्केगार्द अपने नाम से एडिफांयिग डीस्कोसिस' और 'डेलिबरेशनस प्रकाशित करते रहे। इसके अतिरिक्त सन् 1847 में 'वर्क्स ऑफ लव' प्रकाशित हुई, सन् 1851 में 'ऑन माइ एक्टविटीएज़ ए राइटर' तथा सन् 1855 में 'दिस मस्टबीसैड', 'सो लैट इट बी सैड' प्रकाशित हुई। सोरेन कीर्केगार्द की डायरी उनकी जीवन यात्रा, मानसिक उद्वेलन, चिंतन के क्षणों की घबराहट, उनकी खोज का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज है। ये सामग्री 'जर्नल्स' में संकलित है। लगभग सात हजार पृष्ठ की यह सामग्री सम्पादित होकर तेरह भागों में उपलब्ध है। एलिक्ज़ेंडर ड्रीयू द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद सन् 1938 में प्रकाशित हुआ।

कीर्केगार्द मुख्यत: चिंतक हैं। उनकी मान्यताओं को धार्मिक अस्तित्ववाद की संज्ञा दी गयी है। कीर्केगार्द से पूर्व हीगेल का वस्तुगत चिन्तन समस्त यूरोप में प्रसिद्ध हो चुका था। हीगेल के अनुसार एक मात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है। यही निरपेक्ष विज्ञान सबसे पहले अमूर्त विज्ञान के रूप में रहता है फिर ब्रह्म विज्ञान की स्थापना होती है और अंततः मूर्त विज्ञान की। इस प्रकार प्रत्येक विचार परम प्रत्यय (Absolute Idea) से निष्पन्न होता है।

कीर्केगार्द ने व्यंग्यात्मक शैली में हीगेल के दर्शन की आलोचना की। उनकी रचनाएँ 'फिलोसॉफिकल फ्रेगमेन्ट्स तथा 'कनक्लूडिंग अनसाइनटफिक पोस्टस्क्रिप्ट' हीगेल के दर्शन का प्रतिपक्ष प्रस्तुत करती हैं। कीर्केगार्द के अनुसार हीगेल का दर्शन हमें मनुष्य से दूर ले जाता है। उसकी परम प्रत्यय की उद्भावना से कोई मार्ग निर्देश नहीं मिलता। जैसे कोई व्यक्ति पूरे यूरोप का मानचित्र लेकर जिसमें डेनमार्क एक बिन्दू के समान दिखाया गया हो, डेनमार्क के अन्दर भ्रमण करना चाहे, वैसे ही हीगेल के परम प्रत्यय से किसी व्यक्ति को, जो उसके बीच बहुत ही नगण्य अस्तित्व रखता है, मला कैसे मार्ग-निर्देश मिल सकता है।

हीगेल के विरोध में कीर्केगार्द को सुकरात के समान ही स्वयं को पहचानो कहना अधिक सार्थक प्रतीत होता है। उनके अनुसार सत्य आत्मनिष्ठता में ही निहित होता है और सही अस्तित्व (True Existence) को भावनाओं की घनीभूतता द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार कीर्केगार्द ने आत्मगत चिन्तन पद्धति को महत्व प्रदान किया।

आत्मगत चिन्तन पद्धति का समर्थक होने के कारण कीर्केगार्द के दर्शन में देकर्ते का प्रसिद्ध सूत्र 'मैं सोचता हूँ अतः मैं हूँ' उलट जाता है। कीर्केगार्द के अनुसार होना यह चाहिए 'क्योंकि मैं हूँ और क्योंकि मैं सोचता हूँ अतः मैं सोचता हूँ कि मैं हूँ।'

कीर्केगार्द के अनुसार अस्तित्व की परिधि में मानवमात्र ही आता है। यह अस्तित्व भावपूर्ण प्रत्यय (Passionate Thought) से अनुप्राणित होता है और हमेशा चिंतन व वरण के लिए स्वतंत्र है और स्वतंत्रता की अनुभूति ही मनुष्य की पीड़ा का कारण है।

कीर्केगार्द के अनुसार वरण की अनिवार्यता मनुष्य को Either / or में फंसाती है। उनका मानना है कि ज्यों ही हम वरण की स्थिति में पहुँचते हैं हमें अपने भीतर विरोधाभास दिखाई देते हैं। एक ओर इस संसार में हम स्वयं को नश्वर पाते हैं तो दूसरी ओर होने की प्रक्रिया हमारे भीतर भय, वेदना, चिंता पैदा करती है। इस स्थिति में मनुष्य को अवश्य ही आस्था की

छलांग (Leap of Faith) लगानी है जहाँ से ईश्वर के प्रति अस्तित्व विषयक दृढ़ निश्चय प्राप्त हो सकता है।

कीर्केगार्द ने आध्यात्मिक जीवन के विकास में द्वन्द्वात्मक स्थितियों का अनुभव किया। ये स्थितियाँ क्रमशः सौन्दर्य बोध, नैतिक बोध और अंततः धार्मिक हैं। कीर्केगार्द के मत में सौन्दर्यबोध तक की स्थिति में व्यक्ति केवल वर्तमान क्षण को ही जीता है, उसमें स्थिरता एवं जड़ता आ जाती है। जबकि सदाचारी सदा होने की स्थिति में रहता है। नैतिकता का वरण व्यक्ति के भीतर दायित्व भावना को जागृत करता है। इस स्थिति में ही आस्था की छलांग' के बाद व्यक्ति आत्मतुष्टि की स्थिति में पूर्णताः को ग्रहण करता है।

अपने विश्वास को जी लेने की ख्वाहिश और उसे मूर्त होते देखने की बेजोड़ कोशिश कीर्केगार्द के सृजन कर्म की पहचान है। उन्होंने उपन्यास, कविता प्रस्तावना, प्रवचन, आदि अनेक साहित्यिक विधाओं तथा हास्य व्यंग्य, विडम्बना पैरोडी आदि विभिन्न शैलियों के माध्यम से अपने चिंतन को वाणी दी।

कीर्केगार्द का प्रसिद्ध उपन्यास 'आइदर/ ऑर' सौन्दर्य बोध से नैतिक चरण तक की यात्रा है। दो भागों में विभक्त इस उपन्यास के प्रथम भाग में मध्यकालीन चरित्रों डानजॉन, फास्ट जोहैनस के जीवन दृष्टिकोण विश्लेषित हैं। ये पात्र सौन्दर्य चेतना में अवस्थित क्षणिक आवेगों में जीवन की सार्थकता तलाशते हैं। प्रेम इनके लिए वासना तक सीमित है वहीं उपन्यास के दूसरे भाग का कथावाचक एक न्यायाधीश है जो संबंधों में पारदर्शिता चाहता है और प्रेम का प्रतिमान विवाह को मानता है। उसके लिए नैतिक दायित्व का वहन ही प्रेम की सार्थकता है।

नैतिक बोध से आध्यात्मिक चरण की ओर प्रयाण कीर्केगार्द की कृति फीयर एण्ड ट्रैम्बलिंग' में उद्घाटित हुआ है। यह काव्य कृति ओल्ड टेस्टमेण्ट की अब्राहिम एवं आइसक की कथा पर आधारित है। अब्राहिम ईश्वर के आदेशानुसार अपने पुत्र आईसेक के बलिदान के लिए तैयार हो जाता है। अब्राहिम का निर्णय नैतिक बोध के आधार पर विश्लेषित नहीं होता वरन् उसका फैसला ईश्वर के प्रति उसकी आस्था को उद्घाटित करता है। इस तरह अब्राहिम की आस्था की छलांग उसके संत्रास को सार्थकता प्रदान करती है, जबकि कीर्केगार्द के उपन्यास रैपीटीशन का पात्र आध्यात्मिक लोक तक पहुँच ही नहीं पाता।

कीर्केगार्द की एक अन्य महत्वपूर्ण कृति 'प्रीफेसिस' का मुख्य पात्र जो एक लेखक है कभी भी मूल कृति की रचना नहीं करता, हमेशा प्रस्तावना लिखकर अपनी रचना को समाप्त कर देता है, क्योंकि मूल रचना केवल बाइबल है और ईश्वर तक जाने का रास्ता हर व्यक्ति स्वयं तय करता है। कीर्केगार्द का मानना है कि ईश्वर व्यक्तिपरक है, इसीलिए वह केवल व्यक्ति की आंतरिकता में ही उपलब्ध हो सकता है।

डेनिश भाषा में लिखित कीर्केगार्द की रचनाएँ बहुत समय तक एक सीमित दायरे में ही जानी जाती रहीं। सन् 1879 में बैन्डीज नामक आलोचक ने जर्मन भाषा में कीर्केगार्द के जीवन व दर्शन को यूरोपीय समाज के सामने रखा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में उनके रचनाकर्म के

जर्मन व अंग्रेजी अनुवाद व्यापक रूप से प्रकाशित होने लगे और उनकी मान्यताओं पर विचार किया जाने लगा। जहाँ उनके एकांतिक चिंतन का विरोध हुआ वहीं अस्तित्ववादी विचारकों मार्टिन हेडगर, कार्ल जास्पर्स, मार्सल, सार्त्र आदि ने उनकी अनुपम वैयक्तिकता को मानवीय स्वतंत्रता का आधार माना। वस्तुतः कीर्केगार्द एक ऐसे संक्रमणकालीन समाज की ड्योढ़ी पर खड़े थे, जहाँ नया एक फैशन के रूप में पूरे समाज को बहा ले जाने की फिराक में था और परम्परा अत्यधिक संकुचित होकर मानवीय पहचान को धार्मिक तिलिस्म में जकड़ने के लिए उद्यत। ऐसे में उन्होंने आदमी को व्यक्ति की पहचान दी और विश्व में उसकी उपस्थिति को दर्ज किया।

डॉ.मीनू गेरा

बदला– बदला- बदला

बदलते युग के साथ बदले का स्वरूप भी बदलता जा रहा है। प्रकृति, प्रीति, रीति, नीति हो या राजनीति सबके अलग-अलग ढंग हैं पर छिपा है सबके मूल में विनाश।

अपने भोग-विलास के संसाधन सहेजने में संलग्न मानव अपनी सहचरी प्रकृति के जीवनदायी अमूल्य उपादानों और उसके अवदानों को भूल सदियों से उस पर अत्याचार करता रहा है। जंगल-पहाड़ काट-काट कर धरती की छाती को चीरता रहा है। नदियाँ प्रदूषित हो गई,वायु-मंडल प्रदूषित हो गया, वन्य-जीवों,जलचरों,नभचरों की कभी चिंता नहीं की गई। सबका भरपूर दोहन होता रहा। जिस प्रकृति पर सभी जीवों का समान अधिकार है -मनुष्य अपनी प्रभुता के मद में डूबा उस पर केवल अपना अधिकार मानता रहा है। पयस्विनी नदियों और प्राणदायी वायु के प्रदूषण का भार भला प्रकृति भी कब तक सहती। अंतत: पीड़ा का प्रस्फुटन विद्रोह और विनाश में हो ही गया। भूकंप, तूफ़ान, चक्रवात, आँधी, प्रलयंकारी महामारी- यह सभी प्रकृति का प्रतिशोध नहीं तो और क्या है?

प्रीति, रीति और नीति तो सामाजिक व्यवस्था से बहिष्कृत हो चुकी है। धीरे-धीरे अपनी संस्कृति और रीति-नीति से विमुख होती पीढ़ियाँ प्रीति का पाठ भी भूल गयीं हैं। स्वार्थ की संकुचित वृत्ति में डूबा मनुष्य रिश्ते-नातों के महत्व को खोता जा रहा है। विकास की आड़ में पतन को स्वीकृति देना ही पराजय है।

राजनीति से नैतिकता दूर हो गई है। हत्या, लूट, अत्याचार, क्रोध, हिंसा जैसी पाशविकता के प्रयोग से सारे नैतिक मूल्य ध्वस्त हो गये हैं।

शासन-सत्ता केवल भौतिक सुख-ऐश्वर्य, धन-लोलुपता, शक्ति और अहंकार का पर्याय बन गई है प्रतिशोध की अग्नि ने सभी मानवीय मूल्यों को क्षार कर दिया है। परिवर्तन या बदलाव सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक आचरण के प्रतिष्ठापन के लिये उचित हैं, उन्नत हैं; वरना तो यह बदला या प्रतिशोध ही स्थापित करेगा जो पूरे वैश्विक समाज के लिये घातक है। अभी भी यदि हम सावधान हो जायें तो सभी मूल्यों को पुनर्स्थापित और संरक्षित कर सकते हैं। केवल धैर्य, विवेक और त्याग-भावना की आवश्यकता है।

डॉ.राधिका सिंह

एक सफ़र ऐसा भी

सिद्धि नाम की एक लड़की के जीवन का सफर एक छोटे से गांव से शुरू होता है। वह अपनी शिक्षा का प्रारंभ उसी छोटे से गांव से करती है। बचपन से ही उस पर शिक्षा के लिए कोई विशेष दबाव नहीं डाला गया क्योंकि उसके परिवार में कोई भी इतना शिक्षित नहीं था कि पढ़ाई लिखाई के महत्व को समझ सके। परंतु सिद्धि नाम की उस लड़की की स्वयं से ही एक प्रतियोगिता चलती रहती थी। उसका स्कूल में तो नाम लिखा ही हुआ था, वह ट्यूशन भी स्वयं ही ढूँढ लिया करती थी।

उसका पूरा बचपन उसी गाँव में बीता था। वह भी उस गाँव से या कहें कि वहाँ की हर एक चीज़ से जुड़ चुकी थी। फिर एक दिन अचानक यह फैसला होता है कि अब सिद्धि को अपने माता-पिता के पास शहर जाना होगा। अब वह यहाँ नहीं रह सकती। कुछ समय तो उसे शहर में बहुत अच्छा लगा। शहर के स्कूल में भी उसका नाम लिखा दिया गया। यहाँ उसे अपनी पढ़ाई शुरू करनी ही थी कि उसका मन उस शहर से उचटने लगा और भागने लगा, फिर उसी छोटे से गांव की ओर। परंतु अब उसे वहाँ जाने की अनुमति न थी। इस कारण उसके स्वभाव में बहुत बदलाव आया। अब इस दुनिया से अनजान उसके मन में गुस्सा और नफरतों के तूफान उमड़ने लगे। इतना ही नहीं, गाँव के मुकाबले शहरी शिक्षा में परिवर्तन होने के कारण उसे स्कूल में भी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसकी तो मानो दुनिया ही बदल दी गई। नया परिवार, नई भाषा, खान-पान, रहन-सहन, स्कूल और न जाने क्या-क्या? अचानक ही छूट गया बचपन कुछ रह गया तो केवल चुप्पी और उदासी। हर रोज स्वयं को एक नए परिवर्तन के लिए ढालना जो होता था। प्रतिदिन उसकी नजरें इस नए में उस पुराने को खोजती रहती थीं। कभी-कभी कचोटता था यादों का बवंडर उसके मन को कि किस प्रकार बदल दी गई है एक झटके में उसकी पूरी दुनिया। भले ही उसने अपनी इस दुनिया में संतुलन बना लिया था, परंतु इस सफर के दौरान चुप्पी और उदासी उसके जीवन में हमेशा के लिए पैठ कर जाते हैं।

भारती अग्रवाल,
बी. ए (विशेष) हिन्दी,तृतीय वर्ष

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो

न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए ..

बशीर बद्र

गुफ़्तगू

चार सहेलियाँ आपस में गुफ्तगू कर रही थीं। घर परिवार की बातें, कुछ इधर-उधर की बातें और भी न जाने क्या-क्या, कहाँ-कहाँ की बातें।

इतने में एक सहेली बोली- अच्छा छोड़ो ये सब। ये बताओ कि अगर ख़ुदा से सामना हो जाए तो क्या माँगोगी उनसे?

यह सुनकर दूसरी सहेली बोली- चल न, ख़ुदा यूँ ही मिल जाते हैं क्या? खुद को परवरदिगार के माकूल पाक-साफ बनाना पड़ता है तब जा के उनका दीदार होता है।

यह सुनना था कि पहली सहेली मुँह बनाकर बोली- आय-हाय। हमारी पाक़ीज़गी पे शको-शुबह ! हमसे पाक़=साफ़ तो कोई इस ज़माने में न होगा। सुना नहीं है क्या कि –

तर दामिनी पे शेख हमारी न जाइयो
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वुज़ूँ करें

सुभान अल्लाह, सुभान अल्लाह क्या खूब कही। बाकी दोनों सहेलियाँ वाह-वाह कर उठीं। दूसरी सहेली बेचारी अपना सा मुँह लेकर रह गई।

अब तीसरी सहेली बोली - चल मैं बताती हूँ- गर जो ख़ुदा का दीदार करने के बाद भी होश में रही तो उनसे कहूँगी कि ए ख़ुदा, ए क़ायनातों के शहंशाह, मुझे नूरे आफताब बना दे। जो न कैद हो न किसी की गिरफ्त में हो और पूरी क़ायनात जिसका घर हो।

वाह क्या खूब कही। तीनों सहेलियाँ तारीफ़ कर उठीं। अब दूसरी सहेली जो कुछ देर पहले तलक़ मुँह बना के बैठी थी, अपनी सहेली की ख्वाहिश सुन बोली- मैं तो कहूँगी कि या परवरदिगार तू मुझे इतनी मोहब्बत दे कि मेरा क़तरा-क़तरा, रोम-रोम तेरी मोहब्बत से लबालब तरबतर हो जाए।

कुछ वाहवाही हो पाती इससे पहले ही पहली सहेली ने चुटकी लेते हुए कहा- ख़ुदा का दीदार होगा? तुझे? सोच ले, अभी तो बड़ी पाक़ीज़गी की बात कर रही थी।

इस ताने को बर्दाश्त न कर दूसरी सहेली तिनककर बोली- हाँ, तो सही तो कहा था। पर खुद के लिये नहीं तेरे लिये कही थी ये बात। मुझ पर तो है ही ख़ुदा की नवाज़िश।

पहली सहेली का चिढ़ना लाज़िम था। बोली- शक़ल देखी है आईने में?

हाँ हाँ देखी है, तुझसे तो बेहतर ही है..

अरी जा न बेहतर होगी मेरी जूती...

क्या कहा......? लड़ाई छिड़ ही जाती अगर चौथी सहेली बीच में न बोलती- अरी बस करो। सारे फसाद यहीं करोगी क्या? मेरी ख्वाहिश तो सुन लो। जैसे-तैसे दोनों शान्त हुई और चौथी सहेली ने ख्वाहिश कहनी शुरू की - मैं तो ख़ुदा से यही कहूँगी कि या ख़ुदा तेरी कायनात

की खूबसूरती सिमट कर मेरे मेरे हुस्न में आ जाए। तू मुझे इतना खूबसूरत बना दे कि जन्नत की हूरें भी मुझसे रश्क़ करें। मेरी खूबसूरती के आगे झुक जाए ये क़ायनात।
वल्लाह। तूने सौगात क्या माँगी, अल्लाह से अल्लाह बनने की दुआ ही माँग ली। तीनों सहेलियाँ एक साथ बोल उठीं, लाजवाब।
चलो अब खेल खतम। अब चलते हैं, कहते हुए पहली सहेली ज्यों ही उठने को हुई दूसरी सहेली ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा- अरी कहाँ? अपनी ख्वाहिश बताए बिना ही खेल खतम?
अरे नहीं मेरी कोई ख्वाहिश नहीं। पहली सहेली ने बहाना बनाते हुए कहा।
ऐसे कैसे नहीं है? बिना ख्वाहिश बताए तो हम तुझे न जाने देंगी। अबकी तीसरी सहेली बोली।
अरी, अब रहने दो। तुम सबकी ख्वहिशों के सामने मेरी क्या ठहरती है ? पहली सहेली जैसे जान छुड़ा कर जाना चाह रही थी। मगर बाकी सहेलियाँ भी कहाँ कम थीं, एक सुर में बोलीं- ठहरे न ठहरे। तेरी ख्वाहिश जाने बिना जाने तो न देंगी हम तुझे, चल बता।
नहीं मानती हो तो ठीक है सुनो -
मैं बनना चाहती हूँ मलिका, क़ायनात या हुस्न की नहीं, इस दुनिया की मलिका। जिसमें सिर्फ और सिर्फ औरत ज़ात का रुतबा हो , मर्दज़ात का नहीं। मर्द जिनके एक इशारे पर उट्ठक बैठक लगाए और.....
और क्या? जल्दी बता न सहेलियाँ बैचैन हो बोल उठीं...
और? और जो भरे दरबार में कमर लचकाकर हमें लुभाकर गाना गाए.... इन्हीं लोगों ने ले लीन्हा दुपट्टा मेरा.....
इस अजब ख्वाहिश को सुन बाकी सहेलियाँ सन्न सी रह गई फिर एक ज़ोरदार ठहाके के साथ एक आवाज़ में बोल उठीं-
अपनी ख्वाहिशें हम तेरी नज़र करते हैं। तेरी ख्वाहिश कुबूल हो... आमीन...

डॉ. विभा नायक

विभागीय गतिविधियों की एक झलक

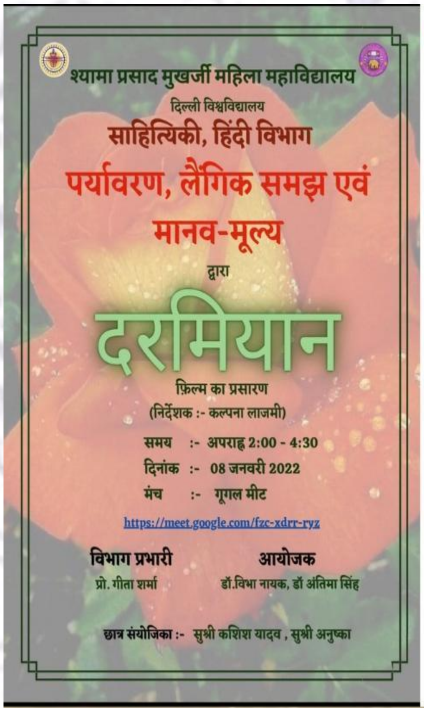
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी, हिंदी विभाग
पर्यावरण, लैंगिक समझ एवं मानव-मूल्य
द्वारा
दरमियान
फ़िल्म का प्रसारण
(निर्देशक :- कल्पना लाजमी)
समय :- अपराह्न 2:00 - 4:30
दिनांक :- 08 जनवरी 2022
मंच :- गूगल मीट
https://meet.google.com/fzc-xdrr-ryz
विभाग प्रभारी
प्रो. गीता शर्मा
आयोजक
डॉ.विभा नायक, डॉ अंतिमा सिंह
छात्र संयोजिका :- सुश्री कशिश यादव , सुश्री अनुष्का

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी, हिंदी विभाग
द्वारा
विश्व हिंदी दिवस
के उपलक्ष्य में वेबिनार
विषय- हिन्दी मीडियम और प्रतियोगी परीक्षाएँ
दिनांक - 10 जनवरी 2022
समय - शाम 7 बजे
स्थान - ज़ूम ऐप
निशान्त जैन
आईएएस रैंक-13
UPSC-2014
विभाग प्रभारी
प्रो. गीता शर्मा
संयोजक
डॉ. गगन बाकोलिया
श्री अनुराग सिंह
प्राचार्या
प्रो. साधना शर्मा
छात्र संयोजक - कशिश (अध्यक्ष), रिया (उपाध्यक्ष), गुंजन (सचिव)

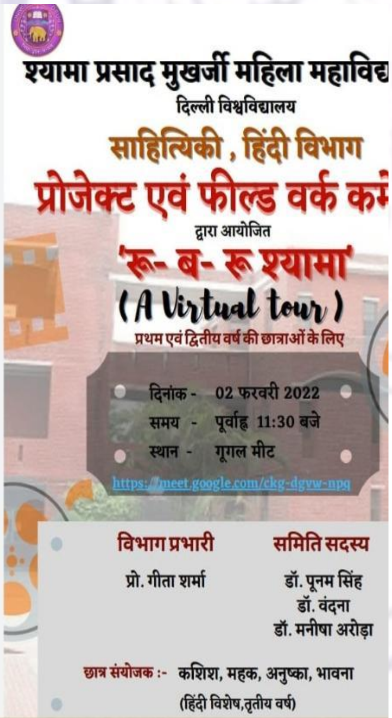
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी , हिंदी विभाग
प्रोजेक्ट एवं फील्ड वर्क क
द्वारा आयोजित
'रू- ब- रू श्यामा'
(A Virtual tour)
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की छात्राओं के लिए
दिनांक - 02 फरवरी 2022
समय - पूर्वाह्न 11:30 बजे
स्थान - गूगल मीट
https://meet.google.com/ckg-dgvw-npq
विभाग प्रभारी
प्रो. गीता शर्मा
समिति सदस्य
डॉ. पूनम सिंह
डॉ. वंदना
डॉ. मनीषा अरोड़ा
छात्र संयोजक :- कशिश, महक, अनुष्का, भावना
(हिंदी विशेष,तृतीय वर्ष)

विभागीय गतिविधियां

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी, हिन्दी विभाग
द्वारा
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
के अवसर पर आयोजित
काव्य गायन-वाचन प्रतियोगिता
दिनांक :- 23 फरवरी 2022
समय :- सुबह 11:30
स्थान :- दृश्य-श्रव्य कक्ष (AV Room)
पंजीकरण लिंक - https://forms.gle/j3n1pRQwH6qsBbrJ8
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।
विभाग प्रभारी
प्रो.गीता शर्मा
संयोजक
डॉ. गगन बाकोलिया
श्री अनुराग सिंह
प्राचार्या
प्रो. साधना शर्मा
छात्र संयोजक - कशिश (अध्यक्ष), रिया (उपाध्यक्ष), गुंजन (सचिव) और अनुष्का

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी
हिन्दी विभाग
आई. सी. टी. टूल्स एवं सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट समिति
द्वारा आयोजित
कार्यशाला
विषय :- गूगल फॉर्म बनाने की विधि/
HOW TO MAKE GOOGLE FORM
दिनांक : 30 मार्च 2022
स्थान : दृश्य - श्रव्य कक्ष (A.V. ROOM)
समय : 11:30-01:00 बजे तक
लिंक:- https://docs.google.com/forms/d/14QR1VqOvAHUF9w1ntnLBE49m2Ze5QoAT4t-edAXKXM0/edit
आवश्यक सूचना -
1. यह कार्यशाला निःशुल्क है।
2. कार्यशाला में भाग लेने के लिए पंजीकरण करवाना अनिवार्य है।
3. पंजीकरण की अंतिम तिथि 28 मार्च 2022, सोमवार, शाम 5 बजे तक।
4. कार्यशाला में भाग लेने के लिए लैपटॉप/ स्मार्ट फोन लाना अनिवार्य है।
आप सभी आमंत्रित हैं
विभाग-प्रभारी
प्रो. गीता शर्मा
समिति-सदस्य एवं रिसोर्स पर्सन
डॉ. शिवानी जॉर्ज
डॉ. मनीषा अरोड़ा
छात्र-संयोजक
सुश्री कशिश यादव
सुश्री अनुष्का

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी
हिन्दी विभाग
आई. सी. टी. टूल्स एवं सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट समिति
द्वारा आयोजित
कार्यशाला
विषय :- ब्लॉग बनाने की विधि/
BLOG DEVELOPMENT IN ONE HOUR
TECHNOLOGY: WORDPRESS
दिनांक : 20 अप्रैल 2022
स्थान : कंप्यूटर लैब, रूम न: 206
समय : 11:30-01:00 बजे तक
लिंक - https://docs.google.com/forms/d/1JwSXIV24zg6NJY3ewE_GErTUQl0EqcEDcWIOtQ4N1R4/edit
1. कार्यशाला में भाग लेने के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।
3.पंजीकरण की अंतिम तिथि 19 अप्रैल 2022, शाम 5 बजे तक।
4. पंजीकरण पूर्णत: निशुल्क है। अंतिम तिथि के उपरांत पंजीकरण मान्य नहीं होगा।
आप सभी आमंत्रित हैं
रिसोर्स पर्सन
मनीष कुमार सिंह
संयोजक
डॉ. शिवानी जॉर्ज
सह-संयोजक
डॉ. मनीषा अरोड़ा
छात्र-संयोजक - सुश्री कशिश यादव ,सुश्री अनुष्का

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

एवं

भारतीय पुरातत्व परिषद्

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय वेब-गोष्ठी

विषय - कबीर, बुल्ले शाह और बाबा फरीद : साहित्य और इतिहास के अन्तःसूत्र

पंजीकरण लिंक https://forms.gle/DvfNcxBqCkLj1xYw7

दिनांक : 24 एवं 25 फरवरी 2022

समय : प्रातः 10:00 बजे से प्रारंभ

मंच : ज़ूम

https://us02web.zoom.us/j/89943234112?pwd=LytJL0NIOTZtOEk4N25pZC93c3BLQT09

संरक्षक

डॉ. के. एन. दीक्षित (महासचिव) भारतीय पुरातत्व परिषद्

प्रो. साधना शर्मा (प्राचार्या) एस. पी. एम महाविद्यालय

संयोजिका डॉ. शिवानी जॉर्ज

सह-संयोजिका डॉ. मीनू गेरा

विभाग प्रभारी प्रो. गीता शर्मा

सहयोग : डॉ. वंदना , डॉ. मनीषा अरोड़ा

छात्र संयोजक : कशिश ,भावना ,अनुष्का , रिया

- शोध आलेख कम से कम 2000-2500 शब्दों में होना चाहिए।
- शोध आलेख पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। प्रतिभागी को शोध आलेख के पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होने का स्वलिखित पत्र संलग्न करना होगा।
- भेजने से पूर्व लेखक अपने आलेख का प्रूफ-शोधन अवश्य कर लें।
- आलेख के प्रथम पृष्ठ पर ही शीर्षक, लेखक का नाम, संस्था का नाम, ई-मेल, मोबाइल नंबर अवश्य अंकित करें।
- चयनित आलेखों के पुस्तकाकार प्रकाशन का निर्णय संयोजक मंडल के द्वारा लिया जाएगा।
- प्रपत्र प्रस्तुति की भाषा - हिन्दी एवं अंग्रेजी
- फॉन्ट - हिन्दी में कृतिदेव 10 , मंगल / यूनिकोड
  अंग्रेजी में Times New Roman
  फॉन्ट साइज - 12

संगोष्ठी शुल्क

शिक्षक - रुपये 500/-

शोधार्थी - रूपये 300/-

विद्यार्थी - रूपये 150/-

शुल्क भुगतान विवरण

शुल्क भुगतान NEFT अथवा RTGS द्वारा संभव है।
भुगतान हेतु बैंक विवरण इस प्रकार है-

Name of account holder	Principal, Shyama Prasad Mukherji College
Bank Name and Address	Indian Overseas Bank, SPM College, Road no. 57, West Punjabi Bagh, New Delhi - 110026
Account No.	176001000000115
IFSC CODE	IOBA0001760
Type of account	Saving account
MICR CODE	110020043

नोटः ऑनलाइन भुगतान के बाद प्राप्त रसीद / ट्रांजेक्शन डिटेल सुरक्षित रखें।

कबीर, बुल्ले शाह और बाबा फरीद : साहित्य और इतिहास के अन्तःसूत्र

कबीर, बुल्ले शाह और बाबा फरीद की वाणी साहित्य और समाज की अत्यंत लोकप्रिय विरासत है। इन्होंने दिव्य प्रेम की ऐसी धारा प्रवाहित की जिससे संपूर्ण लोकमानस रसमग्र हो उठा। साथ ही एक ऐसी साझा संस्कृति भी विकसित हुई जिसकी लहरें भेदभाव की दीवारों को ढहा कर मनुष्यता का आँगन सिंचित करती हैं। इनके स्वरों से भारत के सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास में एक नए दौर का आरंभ होता है जो एक ओर ईश्वरीय प्रेम में रमा हुआ है, तो दूसरी ओर अपने समय की धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूढ़ियों से भी टकराता है। इनके क्रांति-चेतस् विचार स्थल-काल की कसौटियों पर खरे उतरे हैं। वेब-गोष्ठी में कबीर, बुल्ले शाह और बाबा फरीद की वाणी के माध्यम से साहित्य और इतिहास के परस्पर गुम्फित अंतःसूत्रों को समझने का प्रयास किया जाएगा। इस क्रम में मानव-मात्र की निरंतर वर्धमान ऊर्ध्वमुख चेतना पर भी विचार किया जाएगा ।

उपविषय सूची

1. सूफ़ी काव्य-परंपरा में बुल्लेशाह का स्थान
2. मध्यकालीन समाज और निर्गुण परंपरा
3. बाबा फरीद की वाणी का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
4. बुल्लेशाह के काव्य में जनचेतना
5. सूफ़ी काव्य और भारत की जातीय सामासिकता
6. सूफ़ी काव्य के सांस्कृतिक समन्वय का पुनः पाठ : वर्तमान भारतीय संदर्भ
7. भारतीय बहुलतावाद और निर्गुण काव्य
8. भारतीयता की साँझी स्मृति के दस्तावेज़ के रूप में निर्गुण कविता का अध्ययन
9. भारतीय प्रगतिशीलता की अवधारणा और निर्गुण कविता
10. संत और सूफ़ी काव्य की भाषा : वैविध्य और सामूहिकता के संदर्भ
11. निर्गुण कविता का भारतबोध
12. सूफीवाद की अवधारणा : साहित्य और इतिहास के अंतः सूत्र
13. भक्ति आंदोलन का सामाजिक- साहित्यिक अध्ययन
14. सूफी मत एवं संगीत : साहित्य से सिनेमा तक
15. आधुनिक रचनाकर्म एवं सूफी चेतना
16. सूफी चिंतन का स्त्री पक्ष
17. बुल्लेशाह और बाबा फरीद : सांस्कृतिक सहिष्णुता का पाठ
18. कबीर की वाणी : अनुभूति और अभिव्यक्ति के आयाम
19. भारतीय रहस्यवाद : कबीर एवं परवर्ती साहित्य
20. निर्गुण भक्ति-धारा की लोकोन्मुखता
21. ढाई आखर प्रेम के.......

- इसके अतिरिक्त मुख्य विषय से संबंधित अन्य प्रासंगिक विषयों पर भी शोध आलेख प्रेषित किए जा सकते हैं।
- शोध सारांश एवं शोध पत्र की वर्ड तथा पीडीएफ, दोनों ही फाइल प्रेषित करें।

महत्वपूर्ण तिथियां

- शोध पत्र का सारांश भेजने की अंतिम तिथि :- 15 फरवरी 2022
- पूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि :- 20 फरवरी 2022
- पंजीकरण की अंतिम तिथि :- 21 फरवरी 2022
- शोध पत्र निम्नांकित ईमेल पर भेजें
  spmnationalwebinarhindi2022@gmail.com

कार्यक्रम विवरण

24 फरवरी 2022
गुरुवार, प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र-प्रातः 10:00 से 11:30 बजे
सत्र आरंभ
स्वागत वक्तव्य: प्रो. साधना शर्मा
(प्राचार्या, एस. पी. एम कॉलेज, दि. वि)
मुख्य अतिथि संबोधन: डॉ. के. एन. दीक्षित
(महासचिव, भारतीय पुरातत्व परिषद्)
बीज वक्तव्य: प्रो. नित्यानंद तिवारी
(पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग , दि. वि.)
चाय के लिए अवकाश - 11:30 से 11:45
प्रथम दिवस: प्रथम सत्र
प्रथम वक्तव्य- 11:45 से 12:30 अपराह्न
वक्ता : प्रो. सदानन्द शाही
(प्रो. हिंदी विभाग, बी. एच. यू)
विषय : कबीर : अव्वल अल्लह नूर उपाया
प्रश्नकाल : 12:30 से 12:45 अपराह्न
धन्यवाद ज्ञापन
भोजनावकाश 01:00 से 01:45 अपराह्न

प्रथम दिवस : द्वितीय सत्र
प्रथम वक्तव्य – 1:45 से 2:30 अपराह्न
वक्ता: प्रो. जसपाल कौर
(पूर्व अध्यक्ष, पंजाबी विभाग, दि. वि.)
विषय: बाबा फरीद की वाणी का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
प्रश्नकाल: 2:30 से 2:45 अपराह्न
द्वितीय वक्तव्य - 2:45 से 3:30 अपराह्न
वक्ताः : प्रो. मंजीत सिंह
(पूर्व विभागाध्यक्ष, पंजाबी विभाग, दि.वि.)
विषय : सूफ़ी कवि बुल्ले शाह का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
प्रश्नकाल : 3:30 से 3:45 अपराह्न
धन्यवाद ज्ञापन एवं सत्र समापन

25 फरवरी 2022
शुक्रवार, द्वितीय दिवस

द्वितीय दिवस : प्रथम सत्र
सत्र आरंभ 10:00 बजे प्रातः
प्रथम वक्तव्य – 10:15 से 11:00 प्रातः
वक्ता: प्रो. राजेंद्र कुमार
(अध्यक्ष, फ़ारसी विभाग, दि. वि.)
विषयः फ़ारसी साहित्य में बाबा फरीद
प्रश्नकाल : 11:00 से 11:15 बजे
चाय के लिए अवकाश : 11:15 - 11:30
द्वितीय वक्तव्य : 11:30 से 12:15 अपराह्न
वक्ता: डॉ. वंदना कौशिक
(पूर्व प्रवक्ता, इतिहास विभाग, एस. पी. एम. कॉलेज, दि. वि.)
विषयः मध्यकालीन ऐतिहासिक साहित्य में समाज और संस्कृति
प्रश्नकाल: 12:15 से 12:30 अपराह्न

भोजनावकाश 12:30 से 1:15 अपराह्न
द्वितीय दिवस : तृतीय सत्र
प्रपत्र-वाचन: 1:15 से 2:00 अपराह्न
सत्राध्यक्ष : डॉ. आशा जोशी
(पूर्व प्रवक्ता, हिंदी विभाग, एस.पी.एम कॉलेज एवं सह-सचिव, भारतीय पुरातत्व परिषद्)
सूफी एवं निर्गुण गायन - 2:00से3:15 बजे
प्रस्तुति : श्री गतिकृष्ण नायक
(संगीत विभाग, एस. पी. एम. कॉलेज, दि. वि)
समापन-सत्र - 3:15 से 4:15 अपराह्न
संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुति
प्रतिभागियों द्वारा प्रतिपुष्टि
प्रमाण-पत्र वितरण
धन्यवाद ज्ञापन एवं कार्यक्रम समापन

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय

पांच सौ छात्राओं और छः विषयों के साथ 1 अगस्त 1969 को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा एक नयी संस्था का आरम्भ किया गया, जिसका नाम देश के प्रख्यात विचारक एवं शिक्षाविद् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम पर रखा गया, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय । टैगोर गार्डन के एक स्कूल की इमारत में इस संस्था की शुरूआत हुई और अनेक चुनौतियों को पार कर अक्टूबर 1982 में महाविद्यालय पंजाबी बाग स्थित अपने नए भवन में आ गया।

आज महाविद्यालय परिसर का विस्तार लगभग दस एकड़ में है, जिसमें दो अकादमिक ब्लॉक, शताधिक शिक्षण कक्ष, नौ प्रयोगशालाएँ, चार संगोष्ठी कक्ष, एक श्रव्य दृश्य कक्ष एवं 1150 प्रेक्षकों की क्षमता वाला अत्याधुनिक वातानुकूलित भव्य राजीव गाँधी सभागार स्थित है। हमारे पास एक तिमंजिला, पूर्णतः डिजिटल पुस्तकालय है, जिसमें 87,000 पुस्तकों एवं जर्नल्स का संकलन है। दृष्टि बाधित छात्राओं के लिए ब्रेल किताबों का अच्छा संग्रह है, वातानुकूलित वाचन कक्ष है। महाविद्यालय में स्टाफ क्वार्टर्स, इंडियन ओवरसीज बैंक की एक शाखा , एटीएम ,बुक शॉप तथा फोटो कॉपी शॉप भी है। हमारे पास उल्लेखनीय खेल सुविधाएं उपलब्ध हैं। वर्तमान में महाविद्यालय तीन प्रोफेशनल कोर्सेज समेत 19 अनुशासनों में शिक्षा प्रदान कर रहा है। अनेक एड-ऑन कोर्सेज भी चलाए जा रहे हैं तथा यह NCWEB का प्रतिष्ठित केंद्र है। 'तेजस्वी नावधितमस्तु' के ध्येय को लेकर आगे बढ़ता यह महाविद्यालय पांच दशकों की सुदीर्घ यात्रा कर आज एक नई दहलीज पर खड़ा है....अनंत संभावनाएं लिए हुए....

भारतीय पुरातत्व परिषद्

भारतीय पुरातत्व परिषद् की स्थापना 1967 में हुई थी। परिषद् की स्थापना प्रो.ए.के. नारायण, विभागाध्यक्ष, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वारा अपने सहयोगियों के साथ पुरातत्व के क्षेत्र में ज्ञान के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए की गई थी, जिसका उद्देश्य पुरातात्विक समस्याओं की चर्चा के लिए एक समर्पित मंच देना था। यह परिषद् अनुसंधान एवं उससे संबंधित विषयों के प्रकाशन के क्षेत्र में कार्यरत है। परिषद् द्वारा शोध पत्रिकाओं 'पुरातत्व', 'इंडियन ओशन आर्कियोलोजी', 'पुराप्रवाह' (हिंदी) एवं 'हिस्ट्री टुडे' का प्रकाशन किया जाता है। परिषद् द्वारा नियमित रूप से वार्षिक सम्मेलन, सेमिनार, स्मृति व्याख्यान, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं परिचर्चाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश-विदेश के अनेक विद्वान सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह परिषद् प्राचीन सभ्यता की वास्तविक प्रकृति को प्रस्तुत करने और इतिहास की सही समझ को प्रकट करने के लिए प्रतिबद्ध है। परिषद् के इस प्रयास को समझा जाना चाहिए जो वर्तमान के लिए ही आवश्यक नहीं वरन् भविष्य के संरक्षण के लिए भी जरूरी है। परिषद् का यह दृढ़ विश्वास है कि पुरातत्व अत्यधिक वैज्ञानिक अनुशासन है जिसके द्वारा भारतीय संदर्भ में कई ऐतिहासिक समस्याओं को हल किया जा सकता है।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय

वार्षिकी (2021-2022)

हिंदी विभाग

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा अकादमिक वर्ष २०२१-२०२२ के दौरान अनेक छात्रोपयोगी पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है -

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा मंथन शृंखला के अंतर्गत 3 अप्रैल 2021 को ***'हंगेरियन दृष्टि में ममता कालिया"*** नामक विषय पर एक ऑनलाइन परिसंवाद का आयोजन किया गया जिसमे ***हंगरी के बुदापेश्त स्थित एल्ते विश्वविद्यालय के भारोपीय विभाग में शिक्षणरत डॉ. पीटर शागि*** मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित रहे |
- 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आकाशवाणी दिल्ली के सौजन्य से हिंदी विभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के ख्याति प्राप्त कवियों को आमंत्रित किया गया।
- मंथन श्रृंखला के अंतर्गत ***"नई शिक्षा नीति:शिक्षण अधिगम के नए आयाम"*** विषय पर एक ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह ऑनलाइन गोष्ठी गूगल मीट पर 13-10-2021 को प्रातः साढ़े ग्यारह बजे प्रारंभ हुई। इसमें वक्ता के रूप में प्रोफ़ेसर वीणा कपूर को आमंत्रित किया गया था । उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की भाषा,विषय,शिक्षा पद्धति में व्यापक बदलाव प्रस्तुत करती है। उन्होंने शिक्षण प्रविधियों में प्रौद्योगिकी

के सकारात्मक उपयोग से गुणात्मक परिवर्तन की बात कही। उन्होंने ई-लर्निंग प्लैटफॉर्म्स की महत्ता को भी रेखांकित किया। उन्होंने प्रतिभागिता पूर्ण शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए इस पद्धति पर ज़ोर दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ शिवानी जॉर्ज द्वारा किया गया। अंत में विभाग प्रभारी प्रोफ़ेसर गीता शर्मा ने आमंत्रित वक्ता एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन किया |

- हिन्दी विभाग, 'साहित्यिकी' के अंतर्गत ***पर्यावरण एवं जेंडर सेनसेटाइजेशन समिति द्वारा फिल्म प्रदर्शन*** का आयोजन किया गया | कार्यक्रम का आयोजन विभागीय स्तर पर किया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का आरंभ करते हुए तृतीय वर्ष की छात्रा कशिश ने फिल्म का परिचय दिया | डॉ. विभा ने किन्नर समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए किन्नरों के जीवन संघर्ष पर चर्चा की। उन्होंने छात्राओं को बताया कि फिल्म में कल्पना लाजिमी ने किन्नरों की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। किन्नर को किस प्रकार मानसिक, शारीरिक, और सामाजिक भेदभाव से गुजरना पड़ता है यह पात्र इम्मी के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। छात्राओं को यह फिल्म दिखाने का उद्देश्य किन्नरों के प्रति सहानुभूति परक दृष्टिकोण विकसित करना है |
- 'साहित्यिकी' द्वारा ***आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 30 अक्टूबर 2021 को राष्ट्रीय चेतना एवं हिंदी साहित्य' के विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता*** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रतिभाग लेने के लिए सभी महाविद्यालय/संस्थानों में प्रतियोगिता संबंधी सभी जानकारी एक पोस्टर के जरिए दी गई | प्रतियोगिता अंतर महाविद्यालय स्तर पर आयोजित की गई थी, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, प्रेसीडेंसी कॉलेज आदि के छात्र -

छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन किया गया था जिसमें एक गूगल फॉर्म के द्वारा प्रतिभागियों को 100 बहुविकल्पी प्रश्नों का निर्धारित समय (25 मिनट) सही उत्तर देना था, प्रश्न हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों, कविताओं, कहानियों आदि से तैयार किए गए। हिंदू महाविद्यालय की नंदिनी ने 93वें अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया, शिवम सिंह (हंसराज महाविद्यालय) 90 अंक कम समय में उत्तर देकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया, मोहनराम (किरोड़ीमल कॉलेज) ने 90 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं जितेंद्र सिंह ठाकुर (हंसराज कॉलेज) एवं गौरव रॉय(श्री वेंकटेश्वर कॉलेज) ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

- 'साहित्यिकी' द्वारा ***अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में काव्य-गायन वाचन प्रतियोगिता*** का आयोजन किया गया जिससे संबंधी सभी जानकारी एक पोस्टर के जरिए दी गई। प्रतियोगिता महाविद्यालय स्तर पर आयोजित की गई थी, जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। छात्र संयोजक कशिश यादव एवं अनुष्का ने संचालन का कार्यभार संभाला। प्रतियोगिता की शुरुआत विभाग प्रभारी प्रो. गीता शर्मा के आशीर्वचनों द्वारा करते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। प्रतिभागियों ने अपनी मातृभाषा में बहुत सुंदर कविताओं एवं लोक गीतों का गायन – वाचन कर अपनी मातृभाषा का प्रतिनिधित्व किया। प्रतियोगिता निर्णायक मंडल में डॉ. सुव्रतो, डॉ. रामचंद्र मीणा एवं डॉ. श्रवण ने तृतीय वर्ष की छात्रा जयति बहेरे को प्रथम स्थान, प्रथम वर्ष की छात्रा भूमि को द्वितीय स्थान, निशा को तृतीय स्थान, से सम्मानित किया।
- विभाग द्वारा अकादमिक वर्ष २०२१-२०२२ में प्रवेश लेने वाली हिदी विशेष की छात्राओं हेतु दिनांक २२ नवम्बर २०२१ को प्रात: १०:३० बजे गूगल-मीट पर एक

अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया | नवागंतुक छात्राओं का स्वागत करते हुए उन्हें संकाय-सदस्यों तथा पाठ्यक्रम से परिचित करवाया गया| एक पी.पी.टी प्रस्तुति के माध्यम से छात्राओं को विभाग से रू-ब-रू करवाया गया, उन्हें विभागीय गतिविधियों एवं तमाम समितियों के विषय में जानकारी दी गई |

- 'साहित्यिकी' द्वारा 12 दिसंबर 2021 को विभाग के ***नए सचिव के चुनाव हेतु एक मीटिंग*** का आयोजन हुआ। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रथम वर्ष से सचिव को चुना जाना था जिसके लिए प्रथम वर्ष की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। एक एक कर सभी प्रतिभागियों के लिए प्रथम वर्ष की छात्राओं ने वोट दिए | अधिक वोट के साथ गुंजन को सचिव के रूप में चुना गया। अध्यक्ष कशिश यादव के द्वारा नव नियुक्त सचिव को उत्तरदायित्व और कार्य के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए साहित्यिकी के लिए बेहतर कार्य करने का हौसला दिया।

- 'साहित्यिकी' द्वारा ***अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में योगाभ्यास का आयोजन*** किया गया । कार्यक्रम का आयोजन विभागीय स्तर पर किया गया जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। छात्र संयोजक कशिश ने तकनीकी कार्यभार संभाला। कार्यक्रम का आरंभ करते हुए द्वितीए वर्ष की छात्रा कामिनी शर्मा द्वारा सुश्री कशिश कक्कड़ का परिचय देते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। कशिश द्वारा योगाभ्यास की शुरुआत करते हुए सूर्यनामस्कर, एवं प्राणायाम कराते हुए उनके स्वस्थ पर होने वाले विभिन्न सकारात्मक प्रभावों के बारे में जानकारी दी।

- ***विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में*** 10 जनवरी 2022 को एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय ***"हिन्दी माध्यम एवं प्रतियोगी***

परीक्षाएं" रहा। मुख्य वक्ता के तौर पर ***IAS निशांत जैन जी (UPSC RANK 13, वर्ष 2014)*** को आमंत्रित किया गया था। संगोष्ठी का आयोजन साहित्यिकी के सदस्य डॉ. गगन बाकोलिया एवं श्री अनुराग सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम ऑनलाइन ज़ूम प्लेटफार्म एवं यू ट्यूब पर लाइव प्रसारित हुआ। मुख्य अतिथि एवं समस्त विभाग का स्वागत करते हुए तृतीय वर्ष की छात्रा सुश्री कशिश यादव एवं द्वितीय वर्ष की छात्रा सुश्री आरती ने कार्यक्रम के संचालन का कार्य संभाला। महाविद्यालय की प्राचार्या महोदया प्रो. साधना शर्मा द्वारा मुख्य अतिथि के स्वागत एवं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना एवं स्नेहाशीष देते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। प्राचार्या के स्वागत वक्तव्य के उपरांत IAS निशांत जैन जी ने आभार व्यक्त करते हुए हिन्दी माध्यम से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद रोज़गार के विभिन्न क्षेत्रों का ज़िक्र करते हुए सिविल सेवा की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने अनुभव एवं सुझाव बहुत ही सरल और सरस भाषा में साझा किए और अपने वक्तव्य के पश्चात निशान्त जी ने छात्राओं के मन में उमड़ते सवालों का भी निराकरण किया।

- ***प्रोजेक्ट एवं फील्ड वर्क कमेटी द्वारा आयोजित प्रोजेक्ट 'रौनक-ए-दिल्ली (दिल्ली-6)'*** हिंदी विशेष की चयनित छात्राओं के लिए दिल्ली-6 का टूर 2 अप्रेल 2022, सुबह 9:30 से शाम 6:00 बजे तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. इस परियोजना को तीन चरणों में बांटा गया था : 1. ***'आओ खोज करें*** (प्रोजेक्ट)', 2. ***'दिल्ली सफ़रनामा*** (परिभ्रमण)', 3. ***'गुफ़्तगू*** (PPT प्रस्तुति)'. पहले चरण में दिल्ली-6 से जुड़ा एक प्रोजेक्ट दिया गया. इस चरण को सफलतापूर्वक संपन्न करने वाली छात्राओं के समूह को प्रोजेक्ट के दूसरे चरण दिल्ली-6 की यात्रा पर ले जाया गया. इस यात्रा के दौरान छात्राओं को पुरानी दिल्ली के ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं सामाजिक महत्व से परिचित कराया गया. यात्रा में हिंदी विशेष की

चयनित 26 छात्राओं, प्रोजेक्ट एवं फील्ड वर्क कमेटी के मार्गदर्शन में छात्राओं ने दिल्ली की विरासत को समझा, मिर्जा ग़ालिब की हवेली के इतिहास, साहित्यिक महत्व को समझते हुए छात्राओं ने यहाँ अपनी सक्रिय उपस्थिति से वीरान को भी गुलज़ार कर दिया. ग़ालिब को याद करते हुए उनके सम्मान में छात्राओं के समूह ने उनकी मशहूर शेरो-शायरी का पाठ किया. चावड़ी बाज़ार से होते हुए समूह यात्रा का अगला एवं अंतिम पड़ाव ज़ामा मस्जिद पहुंचा. यहाँ की संस्कृति को छात्राओं ने नज़दीक से समझने की कोशिश की. पूरी यात्रा के दौरान मंदिरों, मस्जिदों, चर्च, इमारतों, हवेलियों, बरसों पुराने बाजारों, दुकानों और चौक से गुज़रते हुए छात्राओं को उनका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व भी समझाया गया. यात्रा के अंतिम पड़ाव के बाद लाल किला के सामने से कॉलेज बस में बैठकर पुन: महाविद्यालय के परिसर में पहुँच कर यह टूर समाप्त हुआ.

- हिंदी विभाग, ***श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और भारतीय पुरातत्व परिषद के संयुक्त तत्वावधान में "कबीर, बुल्ले शाह और बाबा फरीद : साहित्य और इतिहास के अंतः सूत्र" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय वेब-गोष्ठी*** का शुभारंभ 24 फरवरी 2022 को हुआ | इसके अंतर्गत संपन्न हुए प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. के.एन. दीक्षित, 'महासचिव, भारतीय पुरातत्व परिषद', बीज वक्ता के रूप में तथा प्रो. नित्यानंद तिवारी उपस्थित रहे | कार्यक्रम का विधिवत आरंभ करते हुए प्राचार्या प्रो. साधना शर्मा ने आमंत्रित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया | वक्ता प्रो. सदानंद शाही जी ने "कबीर : अव्वलअल्लह नूर उपाया" विषय पर अपना सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया | द्वितीय सत्र में प्रो. मंजीत सिंह जी, पूर्व विभागाध्यक्ष, पंजाबी विभाग, दि.वि. ने "बाबा फरीद और सूफी कवि बुल्ले शाह का

दार्शनिक परिप्रेक्ष्य" विषय पर अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया | वेब-गोष्ठी के दूसरे दिन 25 फरवरी 2022 के प्रथम सत्र में प्रो. राजेंद्र कुमार ने "फारसी साहित्य में बाबा फरीद" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए | सत्र के दूसरे वक्ता के तौर पर डॉ वंदना कौशिक ने "मध्यकालीन ऐतिहासिक साहित्य में समाज और संस्कृति" विषय पर रोचक विचार साझा किए । कार्यक्रम के अंतिम सत्र में डॉ. आशा जोशी ने सत्र की अध्यक्षता की । उनकी अध्यक्षता में चयनित प्रतिभागियों ने वेब-गोष्ठी में अपना शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किया । गोष्ठी के अंतिम हिस्से में आशिक उपाध्याय जी ने सूफी एवं निर्गुण गायन की सुंदर प्रस्तुति दी । कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी-संयोजिका डॉ. शिवानी जॉर्ज तथा डॉ. वंदना ने किया एवं सह-संयोजिका डॉ. मीनू गेरा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए दो दिवसीय वेब-गोष्ठी का समापन किया ।

- वर्तमान युग में आई.सी.टी उपकरणों की जानकारी और सॉफ्ट-स्किल के बिना चल पाना लगभग नामुमकिन है | इसी विचार के मद्देनज़र डॉ. शिवानी जॉर्ज एवं डॉ. मनीषा अरोरा के मार्गदर्शन में हिंदी विभाग की ***आई.सी.टी एवं सॉफ्ट-स्किल समिति द्वारा दो आयोजन*** किए गये | प्रथम, 30 मार्च 2022 को एक कार्यशाला का आयोजम किया गया जिसमे गूगल फॉर्म बनाने, क्विज तैयार करने, इमेज अपलोड करने तथा गूगल फॉर्म से एक्सेल-शीट तक पहुँचने की प्रकिया का विस्तृत उल्लेख किया गया | तदुपरांत 20 अप्रैल 2022 को ब्लॉग निर्माण सम्बन्धी एक कार्यशाला का आयोजन हुआ |

सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति : शिक्षण–अधिगम के कुछ पल

दिल्ली विश्वविद्यालय
साहित्यिकी, हिन्दी विभाग
द्वारा
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
के अवसर पर आयोजित
दिनांक :- 23 फरवरी 2022
Shot on OnePlus

दिल्ली – 6 सामूहिक भ्रमण

महाविद्यालय सर्वश्रेष्ठ छात्रा पुरस्कार : सुश्री यशी मिश्रा

कलाकार की कूची से...

समीक्षा सैनी, तृतीय वर्ष, हिंदी विशेष

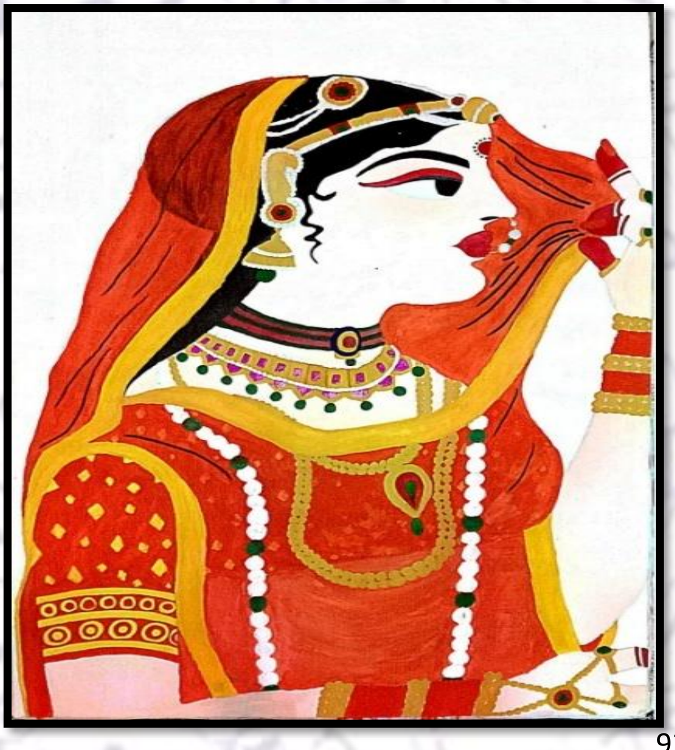

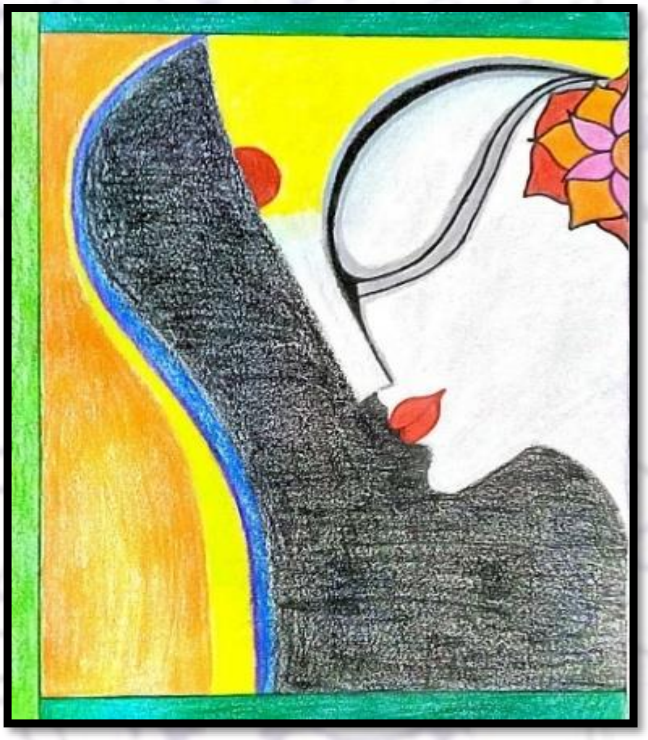

देवांशी शर्मा , बी.ए (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

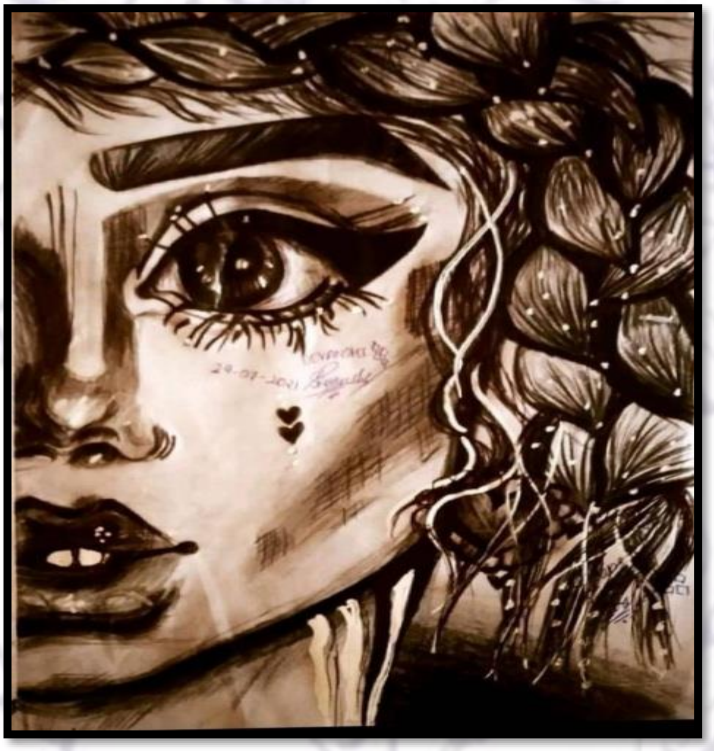

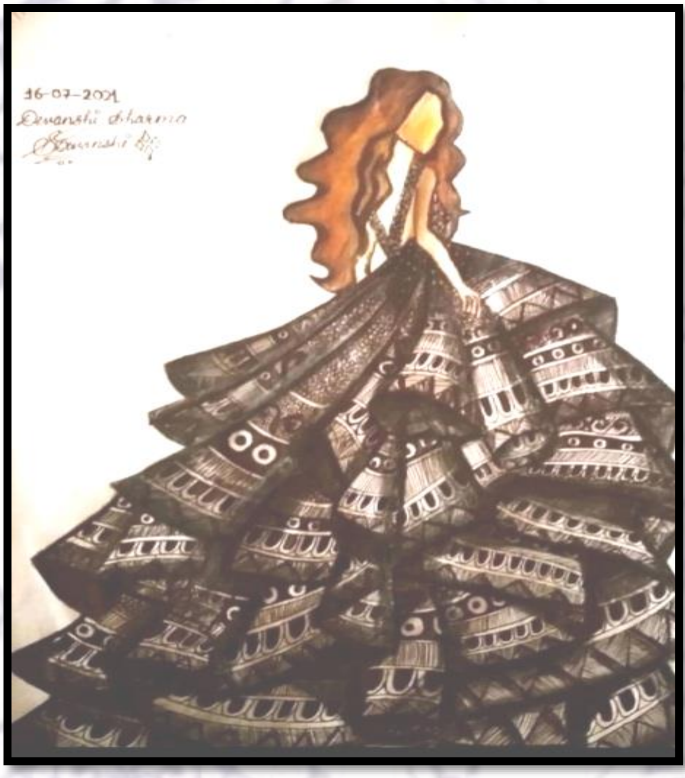
16-07-2021
Devanshi Sharma

कुमकुम शर्मा, बी. ए (प्रोग्राम इतिहास+ संगीत)

पूजा, बी.ए (हिंदी विशेष)

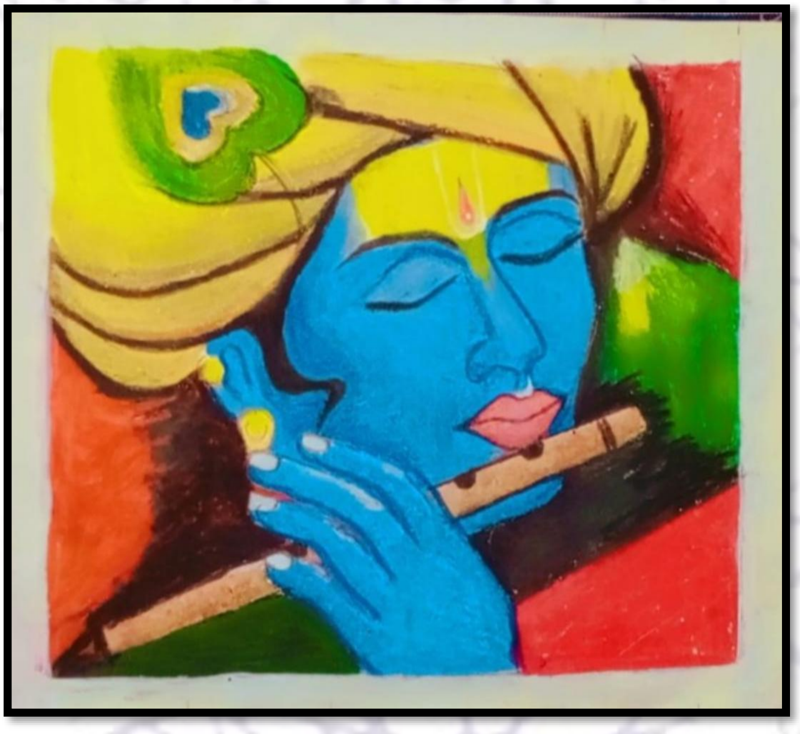

गीतांजलि,बी. ए (अर्थशास्त्र विशेष)

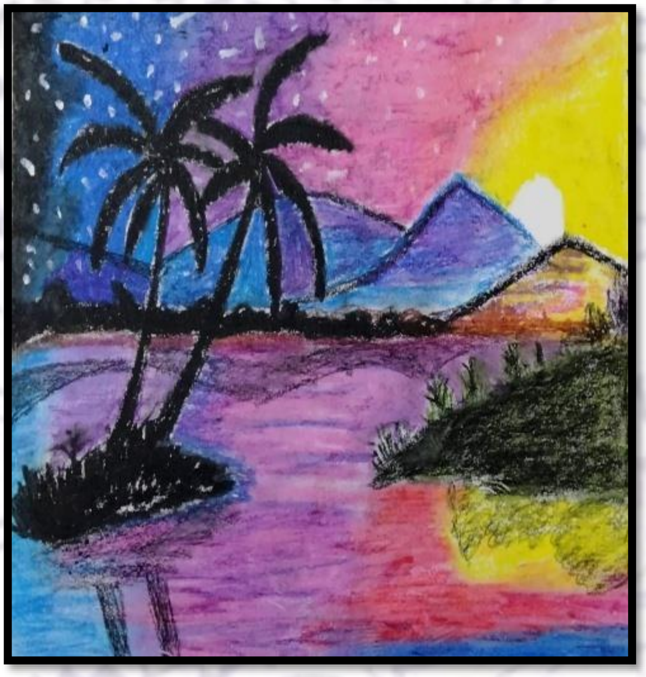

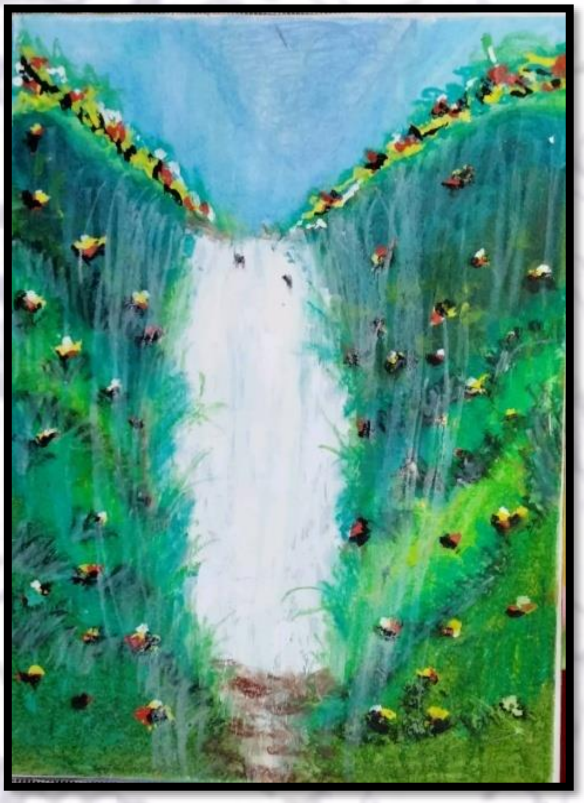

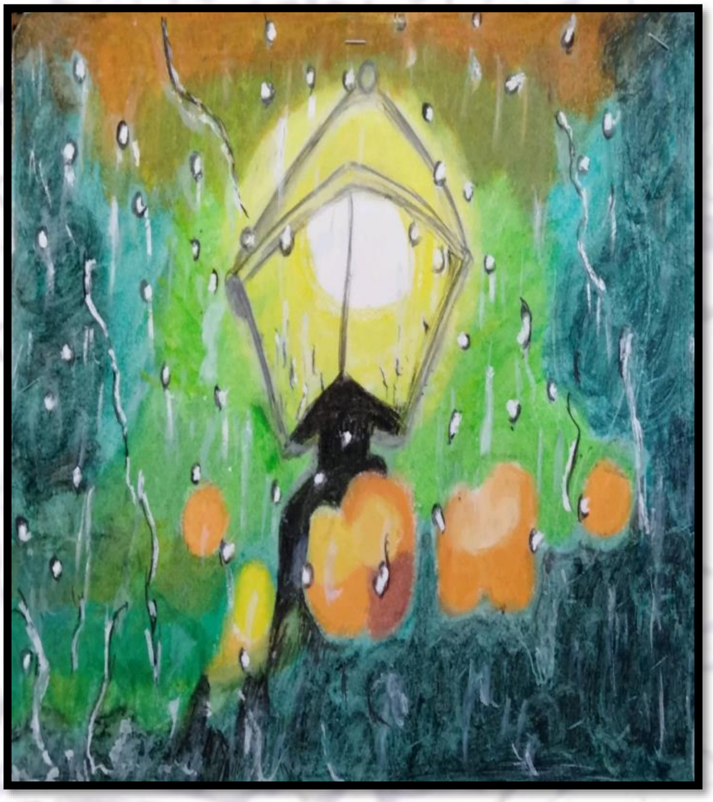

गीतांजलि, बी. ए (अर्थशास्त्र विशेष)